नीराजन

रोम रोम में रमा तुम्हारा गौरवमय इतिहास।
किया समर्पित देश–धर्म हित जीवन का मधुमास।।

हमारे अराध्य

प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल
आत्म–विश्वास–युक्त बौद्धिक क्षमता
एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः
शक्ति का अर्जन कर, अपने
जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों
में अर्पित करना ही
हमारा परम
साध्य है।

नीराजन

वार्षिक–पत्रिका

(1999)

27 वाँ अंक

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
कानपुर

अर्घ्य

कर में वज्र हृदय में दावा चरणों में तूफान
रण बाँकुरे चढ़े शिखरों पर हर दर एक उफान
गिनती नहीं निछावर कितने हुए देश पर लाल
लहू देश का सजा रहा है भारत माँ का भाल
आज समर्पित उसी रक्त को नीराजन की बाती
तन की शक्ति भक्ति मानस की जीवन भर की थाती

सम्पादकीय

'आत्मकथ्य'

करगिल आज भारत का एक भौगोलिक क्षेत्र ही नहीं उसका शौर्य - प्रवण इतिहास भी बन गया है । इस इतिहास को लिखने वाले जहाँ एक ओर भारत माँ के स्तन्य पायी सेना के रण बाँकुरें हैं, वहीं भाव प्रवण कवि और लेखक, उत्सर्ग की भावनाओं से लबरेज़ माताएं-बहनें, विवेकी पिता, देश के प्रति समर्पित व्यवसायी - किसान - मजदूर, उत्साह से भरपूर छात्र समुदाय तथा देशभक्त, दूरदर्शी, राजनैतिक नेतृत्व भी है । विश्व पटल पर एक बार फिर से भारत का शौर्य उद्दीप्त होकर भास्वर हुआ है । एक बार फिर से वीरता सनाथ हुई है, और पराक्रम ने अँगड़ाई ली है ।

निस्सन्देह इस शौर्य, पराक्रम, दृढ़ता, उत्साह, उत्सर्ग और विवेक के पीछे भारतीय चिन्तन और तज्जन्य संस्कारों की दीक्षा देने वाले माँ के आँचल से लेकर भारत वसुन्धरा की सुविस्तृत गोद तक में पलने - बढ़ने वाले विद्या मन्दिर है । इन विद्या मन्दिरों की घण्टियों की गूँज और नीराजना के स्वर भारत माता को परम वैभव पर प्रतिष्ठित करने के प्रतिज्ञा - घोष है । अर्चना में चढ़ाया हुआ एक -एक पुष्प राष्ट्र-रक्षा का शपथ-पत्र है । अपने इस विद्या मन्दिर ‟विद्यालय” का इतिहास ही उत्सर्ग की यशो गाथा और देशभक्ति का पावन उद्गीथ है ।

इस बार राष्ट्र मन्दिर की अर्चना हेतु नीराजन की बाती गढ़ने से लेकर प्रज्वलित करने तक का काम मेरे मार्गदर्शकों ने मेरे अकुशल हाथों में सौंपकर मुझसे क्या अपेक्षा की है, यह तो वे ही जानें । मैं इस पावनतम उपक्रम का निर्वाह किस सीमा तक कर सकूँगा, इसका मूल्यांकन भी वे ही करेंगे, किन्तु मैं यह विश्वास अवश्य दिलाना चाहता हूँ कि मैंने अपनी भावना, बुद्धि और शक्ति को समर्पित करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं की है । इस अंक में आप देखेंगे करगिल का शौर्य स्तवन, जिसका निहितार्थ यह है कि हमारे देश का भविष्य ‟छात्र” जो इस समय घरों और विद्यालयों की शोभा है कभी राष्ट्र का सूर्य बनकर हर अन्धकार को ललकार सके ।

आगे आप देखेंगे एक ऐसे सरस्वती साधक की प्रकाशमान तपोगाथा जिसका पठन और श्रवण पावन कर्मठता को प्रदीप्त करने का प्रमाण पत्र है ।

इसके पश्चात तोतले बोल और लड़खड़ाते पग भी आपको अवश्य प्रिय लगेंगे । जिनके प्रयास भावी भारत को गढ़ रहे हैं, ऐसी गुरु गम्भीर रचनावली आपको अवश्य भायेगी ।

अन्त में हमने अपने प्रयासों के परिणाम को बड़े संकोच के साथ प्रस्तुत करते हुए यह विश्वास दिलाना चाहा है कि हम गढ़ते हुए चले जा रहे हैं उन कर्मशील हाथों और उर्वर मेधाओं को जिनसे भारत माँ अपने सभी पुराने दुःख-दर्दों को भूलकर आनन्दानुभूति से इतरायेगी । अस्तु ---

दिनेश सिंह भदौरिया
२०.८.१९९९

अनुक्रम

अभिप्रेरणा

1. मा० हो० वि० शेषाद्रि
2. मा० लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े
3. मा० नाना जी देशमुख
4. मा० अशोक सिंहल
5. मा० तरुण विजय
6. मा० के० वी० पाण्डेय

अभिनन्दन

क्र० सं०	क्या	किसका	कहाँ
1.	विद्यालय सैनिकों के निर्माण का प्राथमिक केन्द्र	एयरकमोडोर मा० एस० पी० सिंह	1
2.	जिनके घरों के दीपक जलते ही बुझ गये	बचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'	2-3
3.	युग के व्यास ने देखा अरे फिर से महाभारत	ओम शंकर त्रिपाठी	4-6
4.	पोखरन का धामाका	पं० धर्मपाल अवस्थी	7-8
5.	आम साँचे में तो ये शहीद ढलते नहीं	सुमन दुबे	9-10
6.	शत्–शत् नमन उनको	सुश्री रेखा राजे	11
7.	विश्व मानचित्र भी नकरानें लगा तुम्हें	मयंक मणि	12
8.	कारगिल : सफलताओं और विफलताओं के मोर्चे	रवि प्रकाश पाण्डेय	13-15
9.	कारगिल तक : ऐतिहासिक सिंहावलोकन	अभय शुक्ला	16-21
10.	भारतीय उपमहाद्वीप की त्रासदी	राहुल जोशी	22-24
11.	बेचारे पाकिस्तान को कुछ और क्यों नहीं सूझता ?	उमेश शुक्ला	25-27
12.	कारगिल बनी समरभूमि	पवन त्रिवेदी	28-29
13.	पोखरन भूमि जब गुर्रायी	परेश पाण्डेय	30
14.	दोस्ती की पीठ पर पाकिस्तान का खंजर	राहुल वर्मा	31-32
15.	पड़ोसी देशों से कैसे हो सम्बन्ध	आलोक चतुर्वेदी	33-35
16.	पाक तुझे धिक्कार है	प्रशान्त त्रिवेदी	36

अभ्यर्चन

17.	तुम्हारा कर्म पथ ही हमारा पाथेय है	ओम शंकर त्रिपाठी	37
18.	मेरे सगे अग्रज–तुल्य शर्मा जी	चन्द्रपाल सिंह	38-40
19.	अनुशासन प्रिय पं० शिव शरण शर्मा	ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	41-42
20.	पं० शिवशरण जी शर्मा एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व	के० एन० पाण्डेय	43-44
21.	भूरिद पं० शिवशरण शर्मा जी के सान्निध्य के रजत वर्ष	ए० पी० गौड़	45-47
22.	प्रकाश–स्तम्भ श्रद्धेय प्राचार्य शिवशरण शर्मा 'बाबू जी'	आशारानी राय	48-49
23.	और शर्मा जी चले गये	दुर्गेश बाजपेयी	50-52

अभ्युदय

24.	दूध का धुला नहीं है 'दूध'	प्रदीप त्रिपाठी	53-54
25.	बुद्धिमान किशन	सागर वर्मा	55
26.	नकल : एक संस्मरण	सौरभ त्रिपाठी	56
27.	सौतेला कौन	प्रशान्त भारद्वाज	57-58
28.	प्रतिभा पलायन	सौरभ सिंह	59-60
29.	Y2K समस्या	अनुराग वर्मा	61-63
30.	प्रेरणा पुरूष दीनदयाल जी	कपिल सिंह निरंजन	64-66
31.	देश के लिए	हेमन्त जोशी	67-68
32.	भारत पाक सम्बन्ध	सुयश मिश्रा	69-70

आरोहण

क्र० सं०	क्या	किसका	कहाँ
33.	आई० एस० आई० एक खतरनाक खुफिया संस्था	आशीष शुक्ला	71-72
34.	नया छन्द फिर लिखता हूँ।,	गौरव दुबे	73
35.	वाणी की शुद्धि	अनीश वात्स्य	74-75
36.	प्रकाश स्तम्भ भगत सिंह	विकास शुक्ल	76
37.	कहाँ आ गये हम	कुलदीप राजपूत	77
38.	यौवन	आशीष तिवारी	78
39.	जीव विज्ञान बनाम गणित	विवेक यादव	79
40.	भारत की सांस्कृतिक विरासत खजुराहो	वैभव गुप्ता	80
41.	इक्कीसवीं सदी का भारत	नरेन्द्र कुमार प्रजापति	81
42.	इक्कीसवीं सदी जर्जर होते रिश्ते	रामेन्द्र पाण्डेय	82-83
43.	भगवान से शास्त्रार्थ और विजय	आशुतोष शुक्ल	84-87
44.	आध्यात्म किंवा विज्ञान	पुण्डरीक सिंह	88-90

अनुश्रवण

45.	Fifty Day's of Operation Vijay	Gaurav Tiwari	91-94
46.	The Students Life : Some Views	Himanshu Varma	95
47.	Indian Culture	Shantanu K. Agrahari	96
48.	A Homage To the Departted Soul	G.P. Varma	97-98
49.	India -A Land of Spirituality	Kumar Shubharanshu	99
50.	Politics of LAnguage	Shubhash Pandey	100-101
51.	A Treatise on atomic Explosions of India	Inkant Awasthi	102
52.	Child Labour A Curese	Vaibhav Gupta	103
53.	The Art of Public Speaking	Dharmendra Singh	104

अनुगमन

54.	सियाचीन का सामरिक महत्व	प्रदीप बाजपेई	105-106
55.	कारगिल	सुभाष चन्द्र शर्मा	107
56.	कारगिल से उपजे प्रश्न	कैलाश जोशी	108-110
57.	अन्तर्निहित गुणों का विकास	राजेश कुमार शुक्ल	111-113
58.	पृथ्वी का वायुमण्डल	श्री प्रकाश ओझा	114-120

अभिप्रेत

59.	हमारा परिचय	प्रधानाचार्य	121-123
60.	शैक्षिक परीक्षा परिणाम (1998-99)		124
61.	श्री सम्पूर्णानन्द वाद–विवाद प्रतियोगिता	विकास दीक्षित	125-127
62.	बदरी – केदारनाथ यात्रा : संस्मरण	आशुतोष द्विवेदी	128-134
63.	माधव स्मृति से क्रीड़ा गतिविधिया	सुभाष चन्द्र शर्मा	135-138
64.	कर्मयोगी से वार्ता	दुर्गेश बाजपेयी	139-140
65.	हमारा परिवार	साक्षात्कार	141-142

अभिप्रेरणा

देश माता के चरणों में जीवन
का सर्वस्व अर्पित करने
वाले युग दधीचों का
मार्गदर्शन ही
हमारा
पाथेय
है।

ॐ

दूरभाष : ७७७०३६५
७५१५८५४

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

(प्रधान कार्यालय - डा० हेडगेवार भवन, नागपुर-४४० ००२)

सरसंघचालक : प्रो०.राजेन्द्र सिंह

सरकार्यवाह : हो० वे० शेषाद्रि

केशवकुंज, झण्डेवाला,
देशबन्धु गुप्ता मार्ग,
नई दिल्ली-११० ०५५
बेंगळूर

श्रावण कृ. १४, २०५६
युगाब्द- ५१०७

पत्र क्र० :

दिनांक : १०.८.१९९९

प्रिय मित्र श्री दिनेश सिंह भदौरिया,

सप्रेम नमस्कार।

यह प्रसन्नता का विषय है कि आपने इस वर्ष 'नीराजन' पत्रिका के लिए देशभक्ति, त्याग और बलिदान के विचारों को केन्द्र-बिन्दु बनाया है।

अपने राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए यह अतीव आनन्ददायक शुभ संकेत है कि आज अपने देशभर में आखिरी गाँव तक कारगिल के सन्दर्भ में ऐसी ही सारी भावनाएं उमड़ पड़ी हैं। परन्तु, अभी तक का अपना दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव यही रहा है कि ऐसी भावनाएं धीरे-धीरे कम होकर पूर्व की भाँति जाति-पाँति, पन्थ-सम्प्रदाय, पक्ष एवं प्रान्त आदि की चपेट में लोग आ जाते हैं। यह भी सच है कि इसमें सामान्य जनता का दोष उतना नहीं है जितना कि उनका है जिन पर छोटे से लेकर बड़े स्तर तक जनता का मार्ग-दर्शन करने का उत्तरदायित्व है। इसलिए अपने को बचपन से ही अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति उज्ज्वल निष्ठा तथा तदनुरूप आचरण के संस्कार बचपन से ही देना अनिवार्य हो गया है। क्योंकि ऐसे स्थाई सुसंस्कारों के बिना अन्यान्य प्रकार के कुप्रभावों से अपनी नई पीढ़ी का मुक्त होना सम्भव नहीं। हम जानते हैं कि पं. दीनदयालजी का व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय विचार तथा तदनुरूप आचरण कितना उच्च और उदात्त रहा है। उसी प्रकार के व्यक्तियों के निर्माण करने योग्य शिक्षा और संस्कार अपने विद्यालय में छात्रों को दिये जा रहे हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। 'नीराजन' के द्वारा इन्हीं आदर्शों पर प्रकाश डालने वाले विचार पूर्ण लेख तथा प्रेरणादायक कविता व संस्मरण आदि अपने छात्र अभिभावक आदि सभी को उपलब्ध होंगे - ऐसी मेरी आशा है।

सम्पादन कार्य में लगे सभी सहकारी बन्धुओं को शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

हो.वे. शेषाद्रि

सस्थापक : नाना देशमुख
अध्यक्ष : अतुल भाई श्रॉफ

दीनदयाल शोध संस्थान

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE

FOUNDER : NANADESHMUKH
CHAIRMAN : ATUL BHAI SHROFF

७-ई स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५
दूरभाष : ५२६७३५, ५२६७९२, ५२४५५५. तार : मंथन

7-E, SWAMI RAMTIRTH NAGAR, RANI JHANSI ROAD, NEW DELHI-110055
PHONES : 526735, 526792, 524555. GRAM : MANTHAN

लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े
संरक्षक

ॐ

दिनांक १३.०८.९६

" मानुष्ये सति दुर्लभा पुरुषता, पुंस्त्वे पुनर्विप्रता।
विप्रत्वे बहुमान्यताऽ तिगुणता, तत्रापि अर्थज्ञता।।
अर्थज्ञस्य समर्थ वाक्य पटुता, तत्रापि लोकज्ञता।
लोकज्ञस्य समस्त शास्त्र, विदुषो धर्मे मति दुर्लभा।।"

बाल्यकाल में डाकूओं के कुटी में प्रवेश करने पर अकुतोभय बालक दीना उठता है, डाकूओं के प्रमुख का हाथ पकड़ता है और कहता है मामा आप इस घर में कैसे आए हैं, आपको क्या चाहिए ? यह क्या बाल्यकाल से ही विद्यमान पुरूषता को प्रगट नहीं करता ? थोड़ा बड़ा होने पर घर का एक प्रमुख इस नाते से सभी साथी बंधु-भगिनी का आदर्श बना हुआ, पढ़ाई की कक्षा में गुरूवृंद से भी सम्मान पाने वाला दीनदयाल, झीरो क्लास चलाकर सबसे निम्न श्रेणी के बंधु को भी अपने साथ ले चलने की हिम्मत रखने वाला दीनदयाल विप्र ही कहा जा सकता है। इस प्रकार व्यवहार में ही अपना विशेष प्रभुत्व प्रगट करने वाला अपनी कक्षा की पढ़ाई के साथ ही अनेक विषयों की जानकारी स्वाध्याय एवं पर्यावरण से भी प्राप्त करता हुआ दीनदयाल अपने विशिष्ट गुणों के कारण दीनदयाल जी या उपाध्याय जी बन गया हो तो क्या आश्चर्य? ऐसी स्थिति में ही उनका ध्येय समाज से बहुत दूर न जाते हुए, **I.A.S., P.A.S.** आदि के करियरवाद को छोड़कर, होनहार विद्यार्थियों का उचित निर्माण हो सके। इसलिए अध्ययन अध्यापन का वयवयाय लेने का निश्चय कर व **L.T.** की परीक्षा की तैयारी करने लगते हैं और उन्हीं दिनों में एक दिन उनका मा० भाऊराव जुगादे, मा० भाऊराव देवरस आदि से परिचय होता है व संघ कार्य, संघ रीति-नीति, उसी में से सर्व-प्रमुख, संघ-प्रमुख, संघ-वृत्ति व संघ दृष्टि को वे हृदयंगम करते चले जाते हैं। परम पूजनीय श्री गुरू जी से निकटता बढ़ती चली गई, हृदय खुलते गए, विचारों का, भावनाओं का हृत्तंत्रीओं का आदान-प्रदान अथवा सत्य तो यही है कि शक्तिपात की क्रिया चलती गयी, राजनीतिक क्षेत्र मिला, दैशिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र के गहन अध्ययन में लग गये, राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, आर्गनाइजर में लेख मुखर होते गयें, अधिकार वाणी का अधिकार प्राप्त होने पर भी व्यवहार तथा शब्दों में वही विनम्रता, शालीनता सभी को मुग्ध करती, अर्थज्ञता **The Two Plaind** इस पुस्तक में लोगों के ध्यान में आयी। भारतीय अर्थचिंतन में उसके सूत्र मिले। इस चरित्र से श्रद्धेय श्यामाबाबू , डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री प्रेमचंद्र जी डोगरा, डॉ० श्री देवप्रसाद घोष, डॉ० वी० वी० जॉन, डॉ० रघुवीर सभी प्रभावित होते चले गये। अपनी सरल प्रतिभा से ही केनिया, यू० के०, अमेरिका गये व जाते ही प्रभावित किया। अमेरीकन सरकार की रिपोर्ट थी **"The Man is be Watched."** केनिया में उनके चिरवियोग के दुःख में एक भव्य दीनदयाल भवन खड़ा हुआ है जो आज वहां की भारतीय गतिविधियों का केन्द्र बना है।

यह सब मा० दीनदयाल जी की, लोगज्ञता कितनी प्रभावी थी, इसका प्रमाण है। इसीलिए परम पूजनीय श्री गुरू जी जैसे श्रेष्ठ आध्यत्मिक विभूति ने भी यही अनुभव किया कि वे श्री हनुमान जी के जैसे ही अतुलित बल धाम परिपूर्ण मानव थे। परम पूजनीय श्री गुरू उन्हे अपना मानसिक पुत्र ही मानने लगे थे व इसीलिए उनके आकस्मिक निधन पर उन्होने कहा था, " मुझे जिसने पूर्णरूपेण समझा था, वही चला गया।" ऐसे पुण्य पुरूष के नाम पर श्रद्धेय बूजी की पवित्र भावना से चलाया गया व माननीय बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह जी के स्नेहपूर्ण परन्तु अत्यन्त कुशल प्रशासनिक अनुभवों के आधार पर अनुशासित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म माहाविद्यालय आपका आराधना स्थान है यह प्रभुकृपा का ही प्रमाण मानकर उसका पूर्ण लाभ आपके श्रद्धास्पद प्राचार्य व अन्य गुरूवृंदों के मार्ग दर्शन में सभी छात्र चलें, यही प्रभु चरणों में प्रार्थना है।

शेष प्रभुकृपा।

हितैषी साधक,

(signature)

(ल० श्री भिड़े)

दीनदयाल शोध संस्थान

सरस्थापक : नाना देशमुख
अध्यक्ष : अतुल भाई श्रॉफ

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE

FOUNDER : NANADESHMUKH
CHAIRMAN : ATUL BHAI SHROFF

७–ई स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली–११००५५
दूरभाष : ५२६७३५, ५२६७९२, ५२४५५५. तार : मंथन

7-E, SWAMI RAMTIRTH NAGAR, RANI JHANSI ROAD, NEW DELHI-110055
PHONES : 526735, 526792, 524555. GRAM : MANTHAN

प्रिय श्री दिनेश सिंह जी–

सप्रेम नमस्कार !

आपका दिनांक १८ जुलाई का पत्रक प्राप्त हुआ।

विद्यालय की प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका का इस वर्ष का अंक भारतमाता के शहीद सपूतों को समर्पित होगा, इस अभिनन्दनीय निर्णय को जानकर खुशी हुयी।

जिस प्रकार भारत की स्वतंत्रता के लिए अखंड रूप से देश की तरूणाई बलिदान करती आई है, उसी प्रकार स्वतंत्र भारत की सीमा की सुरक्षा के लिए भी देश के सैनिकों ने केवल अपने पराक्रम की पराकाष्ठा ही नहीं की, अपितु सैनिक व्यूहरचना एवं अद्वितीय रणकौशल भी प्रगट किया है।

लड़ते समय हमारे जवानों की आंखों के सम्मुख न अपने बूढ़े माता–पिता थे, न बाल–बच्चे और न ही नवविवाहिता पत्नी ही थी। उनके आंखों के सम्मुख केवल सीमा सुरक्षा ही एक मेव लक्ष्य था। उन्होंने भयंकर रूप घायल अवस्था में भी आक्रमणकारियों को खदेड़ने में कोई कसर नहीं रहने दी।

यह बात सैनिकों तक ही सीमित नहीं रही। देश की तरूणाई भी जाग उठी और उसने उन शहीदों के परिवारों की सहायता में अभूतपूर्व योगदान दिया। उड़ीसा की एक नवविवाहिता युवती ने तो विवाह में प्राप्त सभी जेवर जिलाधिकारी महोदय को यह कहकर अर्पित किये कि मेरा पति तो कमाईकर परिवार को चला लेगा, किन्तु शहीद जवानों, की नवविवाहिता विधवाओं का क्या होगा ? कृपया मेरे इन जेवरों से उन विधवाओं की जो कुछ मदद होगी, वह मदद करने की कृपा करें।

देशभक्ति की यह भावना सुप्तावस्था में भी हमारे रक्त में विद्यमान है। किन्तु यह भावना केवल आक्रमण–काल में ही प्रगट होना पर्याप्त नहीं है। इस भावना का प्रगटीकरण दैनंदिन जीवन में प्रगट न हो पाया तो अपना देश न अजेय बनेगा न समृद्ध।

देश की छोटी–बड़ी आबादियों की स्थिति पर हम जरा नजर दौड़ायें। क्या दिखाई पड़ेगा ? समाज का एक बहुत छोटा सा वर्ग सब प्रकार के सुखानंद के साधन जुटाकर समृद्धि का जीवन बिता रहा है। किन्तु समाज के आधे लोगों के घरों में दो बार ठीक से भोजन भी नसीब नहीं होता। लाखों की तादाद में छोटे–बड़े बालक एवं बालिकाएँ रेलवे–स्टेशनों पर, बस अड्डों पर और बाजारों में दयनीय दशा में कुछ पाने के लिए गिड़गिड़ाते दिखाई देते हैं। किन्तु सुखानंद में जीवन बिताने वालों के दिल में अपने ही इन भाई–बहनों की हृदय–विदारक दशा देखकर करूणा अंकुरित नहीं होती।

देश आजाद होने के बाद भी आबादियों में परस्पर पूरकता की भावना को विकसित करने की ओर देश का नेतृत्व ध्यान नहीं रहा है। कुटुम्ब संस्था समाज की आधारभूत इकाई है। किन्तु कुटुम्बों में जन्म पाने वाले समाज के घटकों को समाज से जोड़ने का काम माता–पिता करें, इसकी उन्हे प्रेरणा प्रदान करने की भूमिका निभाने वाला नेतृत्व स्वतंत्र भारत से गायब है। इसलिए नयी–पीढ़ी माता–पिता को देखकर, विद्यालयों में पढ़ाने वाले गुरूजनों को देखकर और देश का नेतृत्व करने वालों को देखकर केवल अपना और अपने परिवारजनों का उदरभरण करना मात्र अपना लक्ष्य समझकर सारा जीवन बिताते हैं।

आवश्यकता है अपने रक्त में देशभक्ति की जो सुप्त भावना केवल संकट के काल में प्रगट होती है वह नित्यप्रति के जीवन में प्रचलित करने के लिए कौटूम्बिक जीवन क पुनर्रचना करने की।

दीनदयाल जी का एकात्म मानवदर्शन का सपना तभी साकार होगा। आपका विद्यालय इसी हेतु से स्व० पूजनीया तूजी ने प्रारंभ किया था।

स्नेहांकित

शुभकामनाओं सहित

नानादेशमुख

(नानादेश मुख)

दूरभाष : (००-९१) (०११) ६१७८६६२, ६१०३४६५
फैक्स : ९१-११-६१६५५२७
तार : हिन्दूधर्म

Phones : (00-91)(011) 6103495, 6178992
Fax : 6195527, 3792896
E-Mail : samvad @del2.vsnl.net.in
Gram : 'HINDUDHARMA'

विश्व हिन्दू परिषद
VISHVA HINDU PARISHAD

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली - ११००२२ (भारत)
Sankat Mochan Ashram, Ramakrishna Puram-VI, New Delhi - 110022 (Bharat)

पत्र संख्या Ref. No. वि. हि. प./16बी/99.

दिनांक Dated : 04 अगस्त, 1999.

अध्यक्ष
विष्णु हरि डालमिया
President
V.H. Dalmia

कार्याध्यक्ष
अशोक सिंहल
Working President
Ashok Singhal

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
आचार्य गिरिराज किशोर
Senior Vice President
Acharya Giriraj Kishore

महामन्त्री
डॉ. प्रवीण भाई तोगडिया
Secretary General
Dr. Pravin Bhai Togadiya

संयुक्त महामंत्री
सदानन्द काकडे
ओंकार भावे
बालकृष्ण नाईक
Joint General Secretary
Sadananda Kakade
Omkar Bhaway
Balkrishna Naik

प्रिय बन्धुवर श्री दिनेश सिंह जी भदौरिया

जय श्रीराम ।

नीराजन के सताईसवें अंक के प्रकाशन का समाचार प्राप्तकर हार्दिक प्रसन्नता हुई ।

यदि इस अंक में भारतमाता के रक्षा हेतु शहीदों के चित्र एवं उनकी संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित की जा सकेगी, साथ ही शौर्य प्रदर्शन के समय कहां और किस प्रकार शहीद हुये, इसका संक्षिप्त विवरण समाज के लिय बहुत अधिक प्रेरणादायी सिद्ध होगी ।

प्रभु के श्रीचरणों में विशेषांक प्रकाशन के उद्देश्यों की सफलता हेतु विनम्र प्रार्थना है । शहीदों के प्रति शत-शत नमन ।

भवदीय

अशोक सिंहल

॥ अशोक सिंहल ॥
कार्याध्यक्ष

श्री दिनेश सिंह जी भदोरिया
प. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म
विद्यालय,
कानपुर - 208 002
----------॥उ. प्र. ॥

पाञ्चजन्य
राष्ट्रीय साप्ताहिक
सम्पादक : तरूण विजय

संस्कृति भवन, देशबंधु गुप्ता मार्ग
झण्डेवाला, नई दिल्ली-११०५५
दूरभाष : ३५१४२४४, ७५३२१४२
फैक्स : ०११-३५५८६१३

२३-८-९९

श्री दिनेश सिंह भदोरिया
पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
कानपुर-२०८००२

प्रिय भाई,

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'नीराजन' का सत्ताइसवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है और यह अंक मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद वीर जवानों को समर्पित है। भारत के लिए यह समय अभूतपूर्व संक्रांति काल का है। इसी समय में राष्ट्रधर्म के पालन हेतु छात्रों में आरंभ से ही प्रेरणा जगाने का कार्य राष्ट्र निर्माण में सहायक होगा। नीराजन के माध्यम से आप राष्ट्र के लिए सम्पूर्ण समर्पण का भाव जागृत करने में सफल होंगें यह विश्वास है। पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय प्रतिभा और पराक्रम का प्रतीक बने, इस शुभकामना के साथ,

भवदीय,

तरूण विजय

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर - 208 024
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur - 208 024

प्रो. कृष्ण बि. पाण्डेय,
कुलपति

Prof. Krishna B. Pandeya,
Vice Chancellor

कार्या./Off. : : 570450
कै. कार्या./C. Off. : 570263
फैक्स/FAX : 091-512-570006
E-mail : krishnabpandeya@hotmail.com
csjm@lw1.vsnl.net.in

सितम्बर १२, १९९९

श्री दिनेश सिंह भदौरिया,
(सम्पादक) "नीराजन"
पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय,
कानुपर ।

महोदय,

युग पुरूष पं० दीन दयाल उपाध्याय जी के जन्म दिवस पर आपके विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' का 'सत्ताइसवीं' अंक प्रकाशित होने जा रहा है, जानकर प्रसन्नता हुई । पं० दीन दयाल उपाध्याय जी ने मातृ भूमि की जो सेवा की उसके लिए हम उनके चिरऋणी रहेंगे। वे त्याग और तपस्या की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। आशा है पत्रिका में पं० दीन दयाल उपाध्याय के जीवन से सम्बन्धित प्रेरणादायक लेखों का प्रकाशन किया जायेगा, जिन्हे पढ़कर छात्र लाभान्वित होगें ।

पत्रिका के सफल व सशक्त प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनायें ।

भवदीय,

(प्रो० कृष्ण बि० पाण्डेय)

अभिनन्दन

हम अभिनन्दन करते हैं उन
वीरों का जिनके शोणित
की लाली ने भारतीय
शौर्य की यशोगाथा
लिखकर विश्व
को चमत्कृत
कर दिया।

त्याग और तितिक्षा की मूर्ति

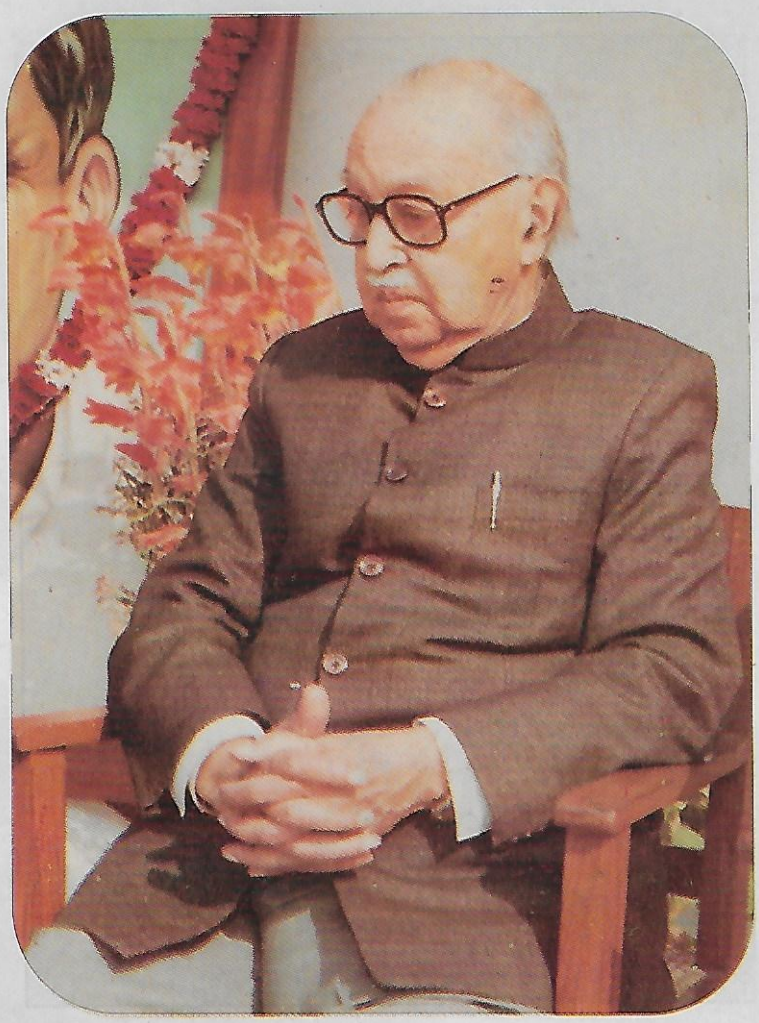

प्रेरणापुंज बैरिस्टर साहब
(बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह)

समर्पण की परिभाषा

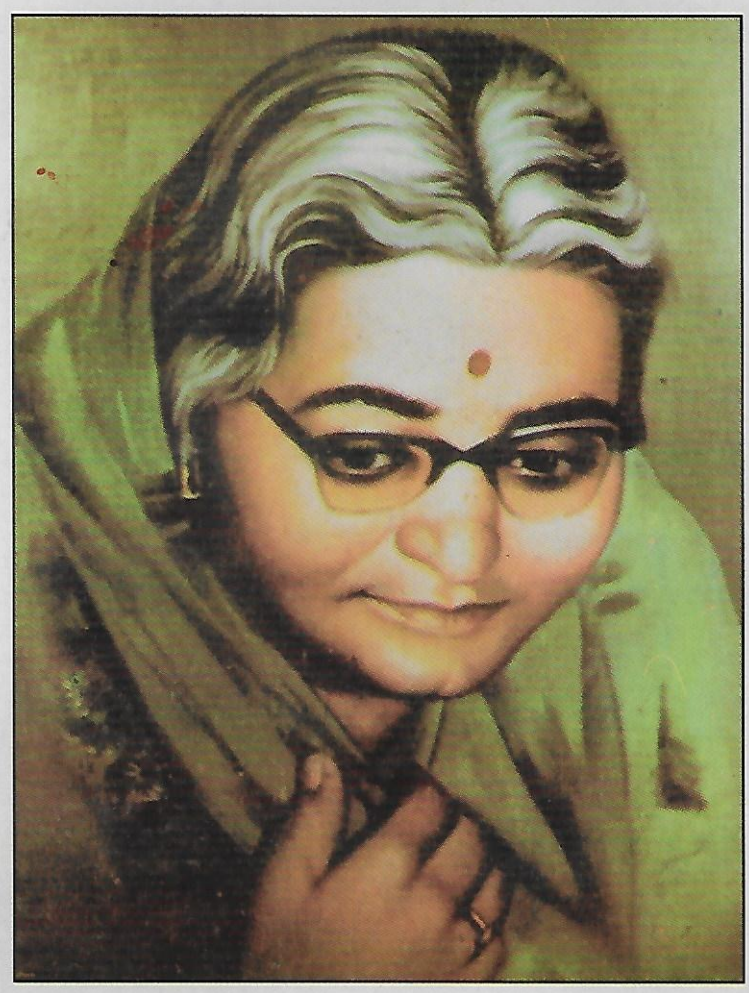

ममतामयी बूजी

(श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह)

विद्यालय सैनिको के निर्माण का प्राथमिक केन्द्र

(समर्पण कार्यक्रम के अवसर पर एयरकमोडोर मा० एस०पी०सिंह जी का उद्‌बोधन)

मंचासीन अतिथिगण, प्राचार्यजी शिक्षक बन्धु एवं छात्रों। मेरा आप सबको अभिवादन। मैं न तो अच्छा वक्ता हूँ न ही हिन्दी में अच्छा बोलने का अभ्यास है । इसलिए कोई त्रुटि हो तो क्षमा करें। आज हम सब कारगिल के लिए एकत्रित हुए हैं। विषय बड़ा असमंजस्य का है। कोई भी देश युद्ध नही चाहता। वह यह भी नही चाहता कि उसके सैनिको की मृत्यु हो। भारत का इतिहास बताता है कि इसने न तो किसी से युद्ध आरम्भ किया ओर न ही किसी के ऊपर युद्ध थोपा। परन्तु जब — जब हमारे ऊपर युद्ध थोपा गया हमने बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध लड़ा तथा दुश्मनों को परास्त किया। स्वतंत्रता के बाद यह चौथा मौका है जब हमारे ऊपर युद्ध थोपा गया। परन्तु किसी भी युद्ध में हम कभी भी अपनी सीमाओं से बाहर नही गए और यदि गये भी तो युद्ध के पश्चात दूसरे देश की भूमि वापस कर दी। इस बार का युद्ध बहुत ही कायरता पूर्ण तरीके से थोपा गया परन्तु हमारे बहादुर सैनिकों ने दुश्मनों को वापस जाने पर विवश कर दिया। इस युद्ध में जो शहीद हुए वे हमारे ही अंग थे। किसी के भाई थे किसी के पुत्र। उन्होने तो अपना काम किया है, लेकिन आपने जो काम किया है वह भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार आपकी भावनाओं के लिए हमारी पूरी फौज आपकी आभारी है। मुझे पता नही आपमें से कितने लोग अखबार पढते है। कुछ तो पढते ही होगे। आपने अगर एक खास चीज पढ़ी हो कि युद्ध के समय कछ सैनिको ने अपने घरो तथा मित्रो का पत्र लिखा था।

हर पत्र की भाषा एक थी झलक एक थी। वह यह कि वे लेशमात्र भी भयभीत नही थे। उन्होने लिखा कि आज मैं अमुक अभियान पर जा रहा हूँ, हो सकता है, शहीद हो जाऊ लेकिन आप चिन्ता मत करना। ये इसलिए हुआ कि वे जानते थे कि वे अपना काम कर रहे हैं, देश के लिए शहीद होने जा रहे है। उनके संस्कार ऐसे थे कि देश के लिए मरने में भय न हो। वे अपनी प्राणाहुति देकर हमें ऋणी कर गए। उन्होने अपना जीवन दिया इसलिए आज हम सुरक्षित है। मैं उन रण बांकुरो को श्रृद्धांजलि देता हूँ। उनके माता–पिता को भी नमन करता हूँ जिन्होने ऐसे संस्कार दिए कि जरूरत पडे तो प्राण देने में पीछे न हटना। वे शिक्षक भी धन्य हैं जिन्होने उन्हें शिक्षा दी।

उन रण बांकुरों ने तो अपना का कर दिया। अब बारी हमारी है, हमें ऐसा काम करना है कि देश एक रहे, सुरक्षित रहे। अपनी शिक्षा संस्थान में तो ऐसे ही संस्कार दिये जाते है कि ऐसा काम करें जिससे सिर गर्व से ऊंचा रहे। और यदि ऐसी पीढ़ी का निर्माण हम कर सके तो किसी भी हिम्मत नही होगी कि वह हमारे देश की ओर बुरी नजर से देख सकें।

"जय हिन्द"

जिनके घरों के दीपक जलते ही बुझ गये .....

तोपें जहाँ गरजती, लाशे जहाँ लरजतीं ।
गोले वहाँ बरसते, आँखे यहाँ बरसतीं ।।
सिन्दूर जिनकी मांगों से आज पुंछ रहा है ।
अपने पिता को खोकर बालक बिलख रहा है ।। १

दुश्मन की दोस्ती से हमको दगा मिली है ।
खूनी मुहिम की उसकी जो आंधियाँ चली है ।।
नेहरू की नीतियों ने भू-भाग जो गंवाया ।
बढ़ती हुई सेना को जब बीच से लौटाया ।।२

अब कारगिल ने हमको सोते से है जगाया ।
दुश्मन की दगाबाजी से देश को बचाया ।।
है शांति -अहिंसा ने हमको ये दिन दिखाया ।
सहसा ही आज भारत को युद्ध में फंसाया ।। ३

फौजों को कारगिल में चुपके से ला घुसाया ।
बंकर बनाये पक्के, टैंकों का ला जमाया ।।
जब सिर लगे कटने तो नानी की याद आयी ।
खूब उनको दी गई थी इस्लाम की दुहाई ।। ४

हद है नवाज की भी देखो तो बेहयाई ।
क्लिटंन के यहाँ दौड़े जब हार नजर आयी ।।
भारत को दोष देकर देने लगे सफायी ।
भरपूर खुशामद की, फिर भी न मदद पाई ।। ५

ज़ाहिद हो मुजाहिद, तुलवा या तालिबान ।
अपनी जमीं से इनका नामों-निशां मिटाना ।।
जो जल रही चिताएं, उनको न भूल जाना ।
रेखा हो कोई भी कोई भी अब तुमको है पार जाना ।।
अपनी ही वादियों में बरबादियां न लाना ।
ये वक्त फिर न आये, कुछ ऐसा कर दिखाना ।। ६

यों ही न लौट आना, दुश्मन का घर जलाना ।
यह देश यश बखाने, वह वीरता दिखाना ।।
मैत्री के मोह में जो हमको छला गया है ।
अपनी उदारता का जो यह सिला मिला है ।।
कश्मीर का जो हिस्सा है दिख रहा बेगाना ।
अब जीत कर उसे भी भारत में है मिलाना ।। ७

बलिदान इतने देकर खाली न लौट आना ।
जीती हैं चौकियां, वे फिर नहीं गवाँना ।।
कश्मीर के दामन में वे दाग तुम मिटाना ।
बलिदानी सैनिकों का ये श्राद्ध है कराना ।।
भारत ने आज दृढ़तर संकल्प कर लिया है ।
दुश्मन के तेवरों का अन्दाज कर लिया है ।। ८

सारी विजय का श्रेय शहीदों को ही दिया है ।
लाहौर को दंगा का अच्छा सबक दिया है ।।
बढ़ते जवानों ! बर्की तुम्हें बुलाती ।
दाहिर की बेटियों की कुरबानियाँ बुलाती ।।
तुम द्रास - बटालिक तक ही विरम न जाना ।
तुम को तो अभी बाकी कश्मीर है मिलाना ।। ९

वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

आस्तीन का साँप

नयी सुबह थी, नया सूर्य था आशा किरण बंधी थी,
पाक हो गया मित्र हमारा हमको खबर मिली थी ।
किसे पता था पाक नहीं वह छलकारी बिषधर है,
धोखा देना ही स्वभाव है वह दुश्मन कट्टर है ।

ढ़ोंग रचाकर स्वाँग बनाना उसका अपना पेशा,
क्रीकेट हो या बस चलवाना करना नहीं भरोसा ।।
द्रास कारगिल देख रहे थे भारत के वीरों की शान,
बनी जा रही थी वहीं जगह तब पाकिस्तानियों का शमशान ।।

समीर सिंह
अष्टम 'क'

युग के व्यास ने देखा अरे फिर से महाभारत !

क्या कहा? कारगिल कलम की नोक से लिख दूँ,
धधकते शौर्य का लावा उठाकर पृष्ठ पर रख दूँ?
कहाँ सम्भव?

कलम हो वज्र की जो पी सके स्याही हलाहल की
कि हों पन्ने अडिग चट्टान जो सह लें कथा बल की
तभी शायद लिखे कुछ वीर गाथा लेखनी किंचित
कदाचित दिख सके चट्टान की दुनिया लहू सिंचित।

अरे यह शौर्य का इतिहास है विश्वास जीवन का
अमरता का यशो गायन उमड़ता ज्वार यौवन का
इसे पढ़ते कुशीलव की गिरा अवरूद्ध हो जाती
घुमड़ती भावना के छन्द वाणी कह नहीं पाती

किशोरों का अदम उत्साह ज़ज्बा मौत छूने का
झपट बढ़कर उठाया जो गरल काँपा सफीने का
नहीं विश्वास होता है सुकोमल अधखिली कलियाँ
किलक जिनकी न भूली हैं अभी तक गाँव की गलियाँ

वही यम द्वार पर दस्तक बजाते हैं खड़े हँसते
विजय का ले अटल विश्वास अरि को रहे कसते
बढ़े जैसे शिखर की ओर तो भूडोल सा आया
हिमानी वादियाँ काँपी घिरा फिर मौत का साया

कि युग के व्यास ने देखा अरे फिर से महाभारत!
शताधिक दिख गये अभिमन्यु संगर में अटल अविरत
दिखी फिर व्योम में छायी भयानक दानवी सेना
गरज गूँजी उठी ललकार 'पग आगे न रख देना'

कहीं ललकार लक्ष्मण की कहीं अभिमन्यु अलबेला
कहीं गोरा कहीं बादल कहीं बस केसरी चेला
कहीं बन्दा बहादुर काटता अरि को कतारों में
अकेले ही जोरावर जूझता फिरता हजारों में

अजब माहौल है, कैसा नशा कुर्बान होने का
भरे अरमान अरि के वक्ष में खंजर चुभोने का
कहीं जय हो 'भवानी' वीर वर 'बजरंग' की जय हो
विजय हो 'भारती माँ' की विजयिना 'खंग' की जय हो
कहीं घनघोर रव में गूँजता 'हर हर महादेवम्'
'सत श्रीऽकाल' गूँजा मच गया अरि व्यूह में संभ्रम

परिणाम – अरे यह क्या? कहर बरपा? न सोचा था इसे सपने
कहाँ पर मर गये, वे सब बनाये थे जिन्हें अपने
अरे जेहाद, जन्नत, जिस्म, दौलत कुछ नही आई
फ़कत वीरान बर्फीली जलालत की कबर पाई
मची है एक ऊहापोह मजबूरी समर लड़ना
लुटेरे ये किराये के, न सीखा था कभी अड़ना

हुआ संग्राम धरती–व्योम के धुर मध्य अलबेला
किलकते दूध ने पावन लहू से फाग खुल खेला
बचाई आन भारत के मुकुट अवशेष की फिर से
किया संकल्प खंडित भाग पाने को अटल फिर से

शपथ ली है हिमालय के शिखर पर शौर्य ने फिर से
बजाई दुंदुभी जय की मुखर हो धैर्य ने फिर से
सुनी भेरी विजय की मस्त लरकाना हुआ फिर से
जयस्वी हाँक से आश्वस्त ननकाना हुआ फिर से
लिया संकल्प छू माटी धरा गूँजी गगन गूँजा
लहू से कर विजय–अभिषेक हिमगिरि भाल का पूजा
अटल संकल्प यह भारत अखण्डित अब पुनः होगा
बना अवरोध जो भी वह विखण्डित हो पड़ा होगा

चढ़ा सुविधा सलीबों पर सिसकता देश जोड़ूँगा
अपावन बन्धनों को तोड़ चिन्तन–राह मोड़ूँगा
लचर कायर कपूतों के कुकर्मों को मिटाऊँगा
कि विजयी मस्तकों पर चरण रज माँ की सजाऊँगा।

संदेश – विजय संकल्प अपने देश के घर गाँव में पहुँचा
भरी चौपाल से चल नीम वाली छाँव में पहुँचा
कि आँसू पोछ्ती माँ की विजय मुस्कान में पहुँचा
भविष्यत को छिपाये कोख की सन्तान में पहुँचा

सजी राखी तिलक अक्षत विजय के थाल में पहुँचा
भरे अरमान वाले देश के हर लाल में पहुँचा
कि दुश्मन के दरो दीवार के हर कोर में पहुँचा
मरण का दर्द बनकर ***पाक*** के हर पोर में पहुँचा

कि, मरना है तुम्हें ओ ***पाक*** जितने दिन मिले जी लो
हलाहल ही निगलना है अभी बेशक सुरा पी लो।

✍ **ओम शंकर**
प्रधानाचार्य

पोखरन का धमाका

(अपनी ओजस्वी वाणी से देश की तरूणायी को झंकृत करने वाले वीर रस के सिद्धहस्त कवि की प० धर्मपाल अवस्थी की पोखरन परमाणु विस्फोट पर अपनी दृष्टि)

मै मरुस्थल निरा नीर से हीन पर
भ्रम न पाले कोई मुझमें पानी नहीं।
शुष्करज में हमारी वो पानी रहा,
आज तक जिसका दुनियाँ में सानी नहीं।१
प्यास रिपु की बुझाते समय हम किसी
भी तरह की कोताही बरतते नहीं।
जिसने पानी दिखाने की ठानी उसे
जम के पानी पिलाने में थकते नहीं।।२
ऐसे रजपूत इस पूत रज ने जने
जो जिये शान से, मिट गये आन पर।
राष्ट्र–सम्मान के यज्ञ में हो गये
जो हवन आत्मा को अमर मान कर।।३
राणा सांगा जिये घाव अस्सी लिए,
जिन्दगी भर लड़े हार मानी नहीं।
झाला सरदार की आत्मबलि के सदृश
दूसरी आत्मबलि की कहानी नहीं।।४
आत्म–सम्मान पर आँच आने न दी,
घास की रोटियाँ खा के राणा जिये।
सर कटा जो दिया, पर झुकाया नहीं,
वीर ऐसे इसी रज ने पैदा किये।।५
रज वही कह रही, हार हिम्मत नहीं,
तू अकेला नहीं देश! हम साथ हैं।
हाथ जो खींचते खींचने दो कि तेरे
स्वयं दो अरब से न कम हाथ हैं।।६
पोखरन का धमाका, धमाका नहीं,
है ये जागे हुए सिंह की वर्जना।
शक्ति की अर्जना, दैन्य की सर्जना
है सुदृढ़ आत्मविश्वास की सर्जना।।७
आ रहे स्वर्णयुग की ये पदचाप है,
ये धमक है कदम की, धमाका नहीं।
हिम–शिखर पर फहरने से कोई भी अब
रोक सकता तिरंगा पताका नहीं।।८
आने वाली फिज़ा का ये आगाज़ है,
आने वाले ज़माने का अंदाज़ है।
ये धमाका नहीं, आरती के समय
राष्ट्र–मन्दिर के घंटे की आवाज़ है।।९
उस तरफ घात में है कपट मित्र तो
इस तरफ है प्रकट शत्रु से सामना।
आत्मरक्षा कवच से शुभारम्भ की
इसलिये देश ने शक्ति–आराधना ।।१०
मुल्क ऐसे कई हैं, जिन्हें खल गई
ये नई आत्मरक्षा मुहिम देश की।
हो गया गर्क गौरी–गरब, गर्द सी
उड़ गई पाक के युद्ध–आवेश की।।११
चीन की धाक धूमिल हुई ऐटमी,
शक्ति की धुर–धुरी डगमगाने लगी।
आ मरी आमरीका की दादागिरी
बीच में धींगा–मुश्ती दिखानी लगी।।१२
ये तो होना ही था, इसकी चिन्ता नहीं,
पर न हम एक मत, ये गलत बात है।

इस चिराभीष्ट साफल्य–अभियान पर,
क्षुद्र छींटाकशी राष्ट्र–आघात है।।१३
नीतियों के मुखौटे लगा देश को
व्यक्तिगत स्वार्थ गुमराह करने लगे।
बैठ संसद में कुछ वाक्–छल के धनी
श्रेय पर हेय आरोप मढ़ने लगे।।१४
हड़पा तिब्बत, किया आक्रमण देश पर
जब कपट मित्र ने, बोलती बन्द थी।
उसने जब अणुबमों के परीक्षण किये
उस समय इनके मुँह में कलाकन्द थी।।१५
"मेरी गौरी मिसाइल से होंगे शहर
नेस्तनाबूद हिन्दोस्तां के सभी"।
पाक कहता रहा किन्तु जिन कायरों–
की जुबाँ हमने हिलती न देखी कभी।।१६
जिनकी निष्ठाएँ संदिग्ध जो राष्ट्र के
संकटों के समय भ्रान्ति बोते दिखे।
वे सभी अपने अणुबम के विस्फोट पर
'मर गया बाप हो' ऐसे रोते दिखे।।१७
गर्व के योग्य उपलब्धि पर स्वार्थवश
पंक प्रतिपक्ष बौछार करने लगा।
अपनी सत्ता–हवस की घृणित गन्दगी
देश की हर्ष–गंगा में भरने लगा।।१८
वे नहीं जानते देश का हर बशर
लब्ध गौरव पै किस भाँति बलिहार है
उसको गुमराह करने की साजिश निरी
जल सें खींची लकीरों सी बेकार है।।१९
हम नहीं मानते, श्वान भौंकेंगे इस–
वास्ते गज गली से न गुजरे कभी
हम नहीं मानते, लोग छेड़ेंगे इस –
वास्ते कोई यौवन न सँवरे कभी।।२०
'जूता काटेगा' इस डर से चौबिस बरस
पाँव नंगे मेरा देश चलता रहा
उल्लूओं की खुशी के लिए रोशनी–
का धनी सूर्य उगने से बचता रहा।।२१
दूर मच्छर रहें, इस गरज से अगर
हमने घर में जरा सा धुआँ भर लिया
क्या गजब कर दिया? आग घर में लगे
इसके पहले कुएँ का खनन कर लिया।।२२
हमने जब भी प्रगति पर बढ़ाए कदम
आमरीका लिये रिक्त गागर मिला
चीन आतुर दिखा छींकने को, मुखौटा–
लगा रूप असली छिपा का मिला।।२३
पाक पाले हुए जन्म से दुश्मनी
द्वेष का चक्र चालू बदस्तूर है
मेरी राहों में असगुन अगर हो सके
उसको एकाक्ष होना भी मंजूर है।।२४
हादसे मिल रहे सरहदों से हमें,
धमकियाँ दे रहीं दानवी शक्तियाँ
तंग करने को छुटके मियाँ थे न कम
हैं सुभान्–अल्ला उनसे भी बड़के मियाँ।।२५
एक दाबे हमारा हिमालय शिखर,
एक दाबे हुए अंश कश्मीर का।
कब तलक हम अहिंसा की माला जपें,
रोना रोंते रहें अपनी तकदीर का।।२६
इसलिये जो जरूरी था हमने किया
और अपने किये पर हमें गर्व है।
आइये साथ मिलकर मनाएँ सभी
शक्ति का पर्व है, ये प्रगति पर्व है।।२७

✍ *पं० धर्मपाल अवस्थी*

आम साँचे में तो ये शहीद ढ़लते नहीं

पीठ पै लदा था बोझ बर्फ के पहाड़ जैसा
आग की कथा कहीं हैं तब मिली स्वतंत्रता ।
हाथ जोड़के या भीख माँग के नहीं मिली है
रक्त की नदी बही है तब मिली स्वतंत्रता ।
मौत भी झुका के शीश ज़िन्दगी से बार-बार
हार मानती रही है तब मिली स्वतंत्रता ।
पुत्र कितने हुए शहीद, पूछ लो धरा से
पीर कितनी सही है तब मिली स्वतंत्रता । १

अच्छा नहीं होता हैं पड़ोसियों से पंगा लेना
हेकड़ी तुम्हारी रही किसी भी न काम की ।
सोते हुये सिंह को जगा के क्या मिला हैं तुम्हें
अपनी ही जिन्दगी क्यों नाहक ही हराम की ?
हर दरबाजे पे झुका के शीश माँगी भीख
मिली न मदद कहीं कोशिशें तमाम की ।
हमने सलाम भेजा तुम लामबंद हुये
ऐसी-तैसी हो गई तुम्हारे इस लाम की । २

शौर्य की कथा ज्वलंत लेखनी लिखेगी कैसे
स्याही सूख - सूख जाती शब्द मिलते नहीं ।
माँ के लाड़लों की गाथा कवि क्या बखान करें ।
कंठ काँपता है और होंठ हिलते नहीं ।
धन्य होती मौत भी लगाके इनको गले से
आग के ये फूल रोज - रोज खिलते नहीं ।
जाने कौन सांचे में विधाता इन्हें ढालता है ।
आम सांचे में तो ये शहीद ढलते नहीं । ३

मातृभूमि के लिये शहीद हो गये जो वीर
कर्ज़ माँ के दूध का चुका के धन्य हो गये ।
जिस धरती पै खेल के हुये बड़े उसी पै
बूँद-बूँद रक्त की बहा के धन्य हो गये ।
ज़िन्दगी से कीमती था स्वाभिमान देश का सो
जिन्दगी को दॉव पै लगा के धन्य हो गये ।
माँ के लाड़ले सपूत वीर बाँकुरे स्वयं को
माँ की पुण्य गोद में सुला के धन्य हो गये । ४

एक साध पूरी होते-होते फिर रह गयी
इस बार फिर वारा-न्यारा क्यों हुआ नहीं ?
इस बार फिर दिल्ली पशोपेश में रही क्यों
शत्रु को मिटाने का इशारा क्यों हुआ नहीं ?
पाकिस्तान दुनिगाँ के मानचित्र में न होता
सारे झंझटों का निपटारा क्यों हुआ नहीं ?
कवि का नहीं, शहीद सैनिकों का प्रश्न हैं ये
पूरा कश्मीर ही हमारा क्यों हुआ नहीं ? ५

माथे की शिकन बूढ़े बाप की विकल हुई
माँ की सूनी-सूनी आँखें राह नापती रहीं
जड़ हो गया प्रिया के अधरों का कौतूहल
जिंदगी की आहट उसाँसें जाँचती रही।
शैशव अबोध पूछने लगा पिता का पता
आसमान रो पड़ा, दिशायें काँपती रही।
माँ धरा ने सीने से लगा लिया शहीद को तो
रोते-रोते मौत भी प्रशस्ति बाँचती रहीं। ६

सुमन दुबे
आचार्य

शत्-शत् नमन उनको

कारगिल में युद्ध चल रहा था ऊँचाई के कारण मौसम बहुत खराब था । चार-पाँच दिनो तक तो सैनिकों तक भोजन ही नही पहुँच पाया था। सैनिकों के पास सुरक्षित भोजन का भण्डार भी समाप्त हो गया था। सैनिकों की स्थिति बहुत खराब थी, भूख से वे हाल बेहाल थे, ऊपर से प्रतिकूल मौसम का बुरा प्रभाव। सैनिक अपनी भूख को खत्म करने के लिए बर्फ के टुकड़े खाने पड़ रहें थे। इस बात की खबर लद्दाख के छोटे-छोटे गावों को मिली। लामा लोगों ने गाँव के लोगो को जिम्मदारी सौपीं कि आप लोग भोजन की व्यवस्था करें तथा लामाा लोगेां ने ऊपर तक भोजन पँहुचाना प्रारम्भ किया। जब उन लामाओं से पूछा गया कि आप लोगों ने इस समस्या कों अन्य लोगों के पास क्यों नहीं बताई तो उन लामाओं का जवाब था कि हम भी इस भारत भूमि के ही नागरिक है।, हमारा भी इस राष्ट्र के प्रति कुछ कर्त्तव्य है कि यदि दुश्मनों को इस बात का पता चल जाता तो वे हमारे वीर जवानों को जहर भी दे सकते है। अतः कार्य गुप्त ही होना चाहिए। कारगिल क्षेत्र अत्यन्त ऊँचाई पर स्थित है परिणामतः उस क्षेत्र का तापमान शून्य से नीचे ही रहता है। ऊपर की चढाई चढने के कारण शरीर से पसीना आता है और तापमान कम होने कारण वह पसीना बर्फ में बदलने लगता है ऑक्सीजन की कमी कारण वहाँ पर स्वास्थय भी ठीक नही रहता है। वहाँ युद्ध करना इतना कठिन है कि जिसका बखान करना मुश्किल है परन्तु हमारे वीर सैनिकों के मुख पर असीम उत्साह है तथा मन मे विजय प्राप्ति की कामना है इसी उत्साह से वे विजय की ओर बढ रहे है। आर०एस०पुरा जम्मू के सीमान्त क्षेत्र के पास बेस कैम्प में हम समिति की बहनें मिलने गई थी। वहाँ पर एक लक्ष्मण ओझा नामक कर्नल बहुत उत्साह के साथ हमारे वीर सैनिकों के साथ हम लोगो से मिला। उसकी आंखों मे विजय प्राप्ति का विश्वास झलक रहा था, उसमें विजय पाने की लालसा थी। पूछने पर वह बोला बहनों की राखी और माँ का तिलक ही जीत दिलाता है । बिहार प्रान्त का निवासी यह जवान बोला कि मै लालू प्रसाद के बिहार का नही बल्कि चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अशोक के बिहार का हूँ। ऐसा अदम्य विश्वास तथा साहस को देखकर हम माँ, बहने अपने ऐसे वीर सपूतों पर गर्व का अनुभव करती है। जम्मु में राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख कार्यवाहिका मा० प्रमिलाताई मेढे जी के साथ हम समिति की बहनें एक शहीद के परिवार वालों से मिली। तरसेम सिहं नामक यह शहीद जवान चार बहनों में अकेला था। उनके पिता नागपुर में आर्डिनेन्स फैक्ट्री मे कार्यरत है। जब उनको वस्त्र दिये गये तो उनका कहना था कि यहाँ कोई कमी नही है मैं तो स्वयं सेना में था पर मुझे जो खुशी आज मिल रही है कि जो काम मै न कर सका वह मेरा पुत्र कर गया। बेस हॉस्पिटल दिल्ली में घायल सैनिकों से शाखा की सभी बहनें मिलने गई। इन छोटी- छोटी बालिकाओं में ये घायल सैनिक अपनी बहनों का प्रतिरूप देख रहे थे। उन सैनिकों मे तो किसी के दोनो हाथ नही किसी का एक पांव नही था, पर साहस तो उनमें कूट-कूटकर भरा था। पूछने पर ते बोले विज्ञान इतनी प्रगति कर रहा है हाथ पावं की बात क्या फिर लग जायेगे। पर राष्ट्र रक्षा सर्वोपरि है। हम तो कहते है कि नेताओं को कह दे कि हमें लाहौर तक जाने दें, बार-बार का युद्ध अव समाप्त होना चाहिए।

सुश्री रेखा राजे
उत्तर क्षेत्र प्रचारिका (राष्ट्र सेविका समिति)

विश्वमानचित्र भी नकारनें लगा तुम्हें

देश की माटी तुझे आवाज फिर देने लगी
देख दुश्मन आज फिर ललकारने लगा तुम्हे।
चीखती हैं यह धरा काट दुश्मनों का सिर
लाल मेरे लाल हैं कारगिल की भूमि फिर
कहकहे लगा रहा विश्वासघातियों का दल
मौन कर इन्हें अभी सुला दे मातृभूमि पर
मित्रता छला करें खुद ही खुद डरा करें
ऐसे मित्रद्रोही तो कदम कदम गिरा करें
भूल की सजा इन्हे आज दो कसम तुम्हें
जर्रा जर्रा देश का पुकारने लगा तुम्हे। १
देश हैं सपूतो का आज विश्व जान ले
कायरो का देश नहीं आज विश्व मान ले
काश्मीर की अगर वो, बात अब करें कभी
छीन लेगें हम तेरी सारी भूमि फिर अभी
मूर्ख जितना पा गया वो किसी की भूल थी
मिटाना तुझकों चाहते हैं आज भी हम नहीं
भाग पाक भाग तू सीमा से लाहौर तक
देशभक्त आगे बढ़के मारने लगा तुम्हें। २
स्वतंत्रता के युद्ध में तू हमारे साथ था।
सोच उस समय हमारे हाथों में ही हाथ था
माँ का एक अंग काट तू कपूत हो गया
शेष के ही साथ मैं शान्ति दूत हो गया
देख तुझसे आज परेशान विश्वसारा है
छीनकरके हम कहेगें पाक भी हमारा है
सोच समझ आज भी, चौथा मौका हैं तुम्हे
विश्व मानचित्र भी, नकारने लगा तुम्हे। ३
विश्व आज मौन हैं पूंछता हैं कौन है।
आंतकवादियो का सरगना भी आज कौन हैं
अपनी मातृभूमि पर अपनी जन्मभूमि पर
अपनी कर्म भूमि तो क्या सौ जनम मरें तो क्या
कुर्बान हिन्दुस्तान पर हर बार होते आयेगें
गीतेश को कसम यहाँ दुबारा नजर आना ना
काल बनके तेरा मैं निहारने लगा तुम्हे। ४

✍ *मयंक मणि*

कारगिल : सफलताओं और विफलताओं के मोर्चे

८ मई १९९९ को कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों मे भारत पाक सेना के मध्य हुये संघर्ष ने २६ मई को 'आपरेशन विजय ' का रूप तब ले लिया, जब उपग्रहों से प्राप्त चित्रों के आधार पर कारगिल, द्रास, मश्कोह, बटालिक सेक्टर, उप क्षेत्रों में ३०० घुसपैठियों की उपस्थिति का पता लगा। वास्तव में यह संख्या लगभग ३००० थी, तथा इसमें तालिबानों तथा मुजाहिदीन के साथ-साथ पाकिस्तानी सेना के नियमित सैनिक भी थे। इनके उद्देश्य वास्तविक नियंत्रण रेखा को अंतर्राष्ट्रीय रेखा में बदलना, जम्मू-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-१ का शेंष भारत से संपर्क काट देना तथा कश्मीर समस्या का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना था किंतु भारतीय रणबाकुरों ने ११००० से १९००० फीट ऊँचाई वाले बर्फीले पहाड़ों तथा ग्लेशियरों मे निरंतर शौर्य तथा वीरता का परिचय दिया और आत्माहुतियाँ देकर घुसपैठियों को मार भगाया। अब समय आ गया है कि हम विश्लेषण करें कि कारगिल संकट की शुरूआत कैसे हुई ? किन् मोर्चो पर हम सफल हुये तथा कहाँ हमे असफलता का मुँह देखना पड़ा कुछ प्रश्न है जो स्वाभविक रूप से मन में उठते है। इन पर विचार करना आवश्यक तथा सामयिक है।

गुप्तचर व्यवस्था

आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र में लिखा है जब गुप्तचर संस्थाये नाकाम सिद्ध होती है तो देश के लिये युद्ध अपरिहार्य हो जाता है तथा जो देश सीमांत क्षेत्रों में सजग नही रहते उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ती है। तथा सीमांत क्षेत्रों से हाथ धोना पड़ता है। करगिल संकट की प्रथम शिक्षा यही है कि हम अपनी गुप्तचर व्यवस्था की समीक्षा करें । यदि हमें समय रहते घुसपैठ की सूचना मिल गई होती, तो युद्ध की नौबत नही आती। यह तो हमारे सैनिको का कमाल है कि हमें विजय मिली अन्यथा हमें इस सामरिक महत्व वाले हिस्से से हाथ धोना पड़ता ।

भारतीय खुफिया तंत्र अपनी प्रमुख ऐजेंसियों रॉ (Research and analysiswing) आई वी (Intelligence Beavro) एवं एम आई (Military intelligence) पर आधारित है। क्या यह आश्चर्य जनक नहीं है कि पोखरण-२ के समय सी०आई०ए० को मात देने वाला भारत करगिल में बुरी तरह धोखा खा गया। यद्यपि भारतीय खुफिया संगठनों को अत्याधुनिक उपग्रहों इलेक्ट्रानिक उपकरणों आदि की व्यवस्थायें सुलभ है, फिर भी घुसपैठ की सूचना एक शिकारी गड़रिये के द्वारा भारतीय सेना को प्राप्त हुई।

यह एक शुभ संकेत है कि हमारे प्रधानमंत्री द्वारा गुप्तचर एजेंसियों की विफलता के कारणों के जाँच के लिये एक समिति गठित कर दी गई है किंतु इस संदर्भ में जाँच समिति के कार्य दायरे को लेकर कांग्रेस तथा अन्य विपक्षियों द्वारा जो आलोचना की गई है वह उचित नही हैं। हमारे देश की राजनीति की यह एक बिडंबना ही है कि विपक्ष सरकार से उन कार्यो को करने का तो दबाव डालता है जो उनके

हित में है किंतु उसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकता कि जाँच दायरा इतना विस्तृत कर दिया जाये कि खुद उस पर आँच आने लगे। स्मरण रहे कि यह कांग्रेस पार्टी ही थी जो संपूर्ण युद्ध के दौरान 'घुसपैठ' कैसे हुई? का बवेला मचाये हुई थी। हमें इस स्थिति से उबरना ही होगा।

राजनीतिक दलों की भूमिका

अत्यंत त्रासदीपूर्ण है इस निष्कर्ष पर पहुँचना कि चाहे कांग्रेस हो या भजपा, चाहे सपा हो या कम्युनिष्ट पार्टियाँ, किसी ने भी करगिल मुद्दे पर राजनीतिक रोटियाँ सेकने से बचने की कोशिश नही की । यह एक अलग बात है कि किसी ने इसे मुख्य मुद्दा बनाया तो किसी ने इसे पलटवार अस्त्र के रूप में प्रयोग किया । हम कब इस बात को समझेंगें कि युद्ध जैसे संवेदनशील विषयों को तो राजनीतिक तामझाम से दूर रखना चाहिये। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी बार-बार राज्य सभा का सत्र बुलाये जाने को कहती है। जबकि वे राज्यसभाकी सदस्या नही है। दूसरी ओर,सरकार द्वारा आहूत की गई सर्वदलीय बैठकों में एक बार भी नही गई, जो कि उनके लिये सर्वाधिक उपयुक्त मंच हो सकता था। क्या भारत की जनता यह नही जानती कि संसद के महत्व पूर्ण सत्रों मे कार्यवाहियाँ किस प्रकार संचालित होती है। क्या राज्यसभा का सत्र बुलाकर हो हल्लामचाकर, हम सैनिकों के मनोबल पर विपरीत असर नही डालते कि राष्ट्रीय संकट की घड़ी में भी हमे एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने से फुर्सत नही है। निः संदेह हमें इस प्रवृत्ति से बचने के मार्ग पर चलना होगा, अन्यथा इसकी परिणित एक कमजोर भारत के रूप में हो सकती है।

राजनीतिक दल, भारतीय सेना को अत्यधिक हानि पहले ही पहुँचा चुके है। भूतपूर्व प्रधानमत्री वी.पी. सिहं जिन बोफोर्स तोपों का मुद्दा बनाकर देश के प्रधानमंत्री बन बैठे थे, आज उन्हीं तोपों की कारगिल संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वी० पी० सिंह ने उस समझौते को रद्द कर दिया था, जिसके अनुसार भारत को तोपों के गोले ६००० रू० में मिलना तय हुआ था , आज वही गोला ४५,००० रू० में भारत को खरीदना पड़ रहा है। सौदा रद्द होने से भारत के पास सिर्फ ४००० तोपे है, जबकि सौदे के अनुसार १,६०० तोपें भारत को मिलनी थी। यह एक प्रकट तथ्य है कि भारतीय सेना अपने पास आवश्यक साजो-सामान न होने की बात कई मौकों पर कह चुकी है। क्या अब समय नही आ गया है कि वी०पी० सिंह अपनी उस भयानक भूल के लिये देश से माफी माँगे। ऐसा लगातार होता रहा है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है, अब इसे बंद होना चाहियें।

जनसमुदाय तथा सरकारें

देश की जनता इस राष्ट्रीय संकट के समय भारतीय सैनिकों के साथ एक जुट नजर आयी। देश भर में जहाँ- जहाँ रक्तदान शिविर लगे वहाँ-वहाँ युवाओं को केवल नाम पते लिखाकर वापस लौटना पडा। क्योंकि बहुत अधिक मात्राा में रक्त पहले ही एकत्र हो चुका था। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में सैनिकों के कल्याणार्थ धन देने का सिलसिला अभी जारी है , किंतु विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या हम केवल युद्ध की स्थिति में ही एक जुटता प्रदर्शित कर सकते है। शांतिकाल में नहीं ? हमें इस पर विचार करना चाहियें।

कारगिल संघर्ष में शहीद हुये सैनिकों की विधवाओं या उनके परिवारीजनों के आगे सम्मान तथा सुविधाओं के ढेर लगाने की होड में हर राज्य सरकार तथा नेताओं ने एक से बढकर एक वादे किये है। लेकिन हमें सेना के अनेक अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारियों के उन वक्तव्यों को नही भूलना चाहिये जिसमें कहा गया है कि सेना के प्रति युद्ध के दौरान जो सम्मान भाव होता है वैसा युद्ध समाप्त होने पर नही रहता। इनका यह भी मत है कि युद्ध समाप्त होते ही समाज एवं सरकार उन आश्वासनों को भूलना शुरू कर देती है जो युद्ध के दौरान वीरगति प्राप्त करने अथवा धायल हुये जवानो के संदर्भ में दिये जाते है। निश्चित रूप से ऐसा नही होना चाहिये पर यह एक यथार्थ है कि ऐसा होता है। इस क्रम में १९७१ के युद्ध में घायल हुये सूबेदार पान सिहं (कैप्ट, लखनऊ), सैनिक अजबेर सिहं यादव तथ वीरचक्र से सम्मानित, राजपूताना रेजीमेट के हवलदार राज सिहं की विधवा चंद्रमादेवी के नाम लिये जा सकते है जो सरकारी उपेक्षा का दंश झेलने को मजबूर है। उन्हें अपने 'शहीद निवास' को बचाने के लिये जूझने को मजबूर होना पड़ रहा है। यह उन्हें तत्कालीन युद्ध के दौरान सरकार ने सम्मान स्वरूप प्रदान किये थे। इस बार हमें यह संकल्प करना होगा कि आश्वासन खोखले न रह जायें बल्कि उन्हे वास्तविक जामा पहनाया जाये; अन्यथा इस बात की ही पुष्टि होगी कि भारत एक कृतघ्न राष्ट्र है।

विश्व समुदाय की भूमिका

हमें इस बात का अत्यन्त सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना होगा कि भारत के प्रति विश्व समुंदाय का अनुकूल रूख किन -किन कारणों के परिणाम स्वरूप है। इस संदर्भ में हमें विदेश नीति के विशेषज्ञों का वह वक्तव्य नहीं भूलना चाहिये जिसमें कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपनी विदेश नीति अपने हितो को ध्यान में रख कर ही बनाता है । हमें इस बात को लेकर अपनी पीठ थपथपाने की जरूरत नहीं है कि अमेरिका ने पाकिस्तान को फटकार लगायी,चीन जैसा पाकिस्तान का परम्परागत दोस्त तटस्थ रहा, जी-८ देशों ने घुसपैठ के लिय पाकिस्तान को दोषी ठहराया हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि आसियान बैठक में जिस दिन अमेरिका विदेश मंत्री मैडलीन अल्ब्राइट ने पाकिस्तान को कारगिल खाली करने को कहा, उसी के अगले दिन ब्रिटेन में वह जहाज रोक लिये गये जिनमें परमाणु हथियार बनाने की सामग्री लदी हुई थी और जो अमेरिका से पाकिस्तान जा रहे थे।

हमें अमेरिका की प्रशंसा प्राप्त करके इतना नहीं फूलना चाहिए कि हम यह भी न देख पायें कि ठीक इसी समय अमेरिका ने पाकिस्तान पर लगाये गये आर्थिक प्रतिबंध समाप्त कर दिये है। ये सारे तथ्य अमेरिका की पाकिस्तान के प्रति ढुलभूल नीति के ही परिचायक है। अतः हमे इस संदर्भ में अत्यंत सावधान रहना होगा क्योंकि अमेरिका कभी भी यह नहीं चाह सकता कि दक्षिणी एशिया के इस क्षेत्र में शाति स्थापित हो जिससे भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र बन सके ।

रवि प्रकाश पाण्डेय
दशम 'क'

कारगिल तक - ऐतिहासिक सिंहावलोकन

कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठ को लेकर ८ मई को जो युद्ध प्रांरभ हुआ था वह २६ मई से ऑपरेशन विजय में बदल गया। संघर्ष में भारतीय सेना ने महत्पूर्ण सफलताएं हासिल की। ये सफलताएं उन स्थितियों के रहते हुएमिली जब पाकिस्तानी घुसपैठिये (या सेना) ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर अपनी पोजीशन लिए हुए थे। ऊँचाई वाले इन स्थानों पर मजबूत बंकरों मे छिपे घुसपैठिये विमानो को मार गिराने बाले सैम, स्ट्रिंगर फ्रेन्च तथा चीनी प्रक्षेपास्त्रों तथा आधुनिक लाइटवेट तथा हैवीवेट मशीन गनों और मोर्टारों से युक्त थे। इसके अलावा पाकिस्तानी सेना द्वारा रसद व हथियारें के रूप में उनकी मदद कर रही थी। फिर भी भारतीय सेना ने अपूर्व साहस शौर्य तथा बलिदानों की झड़ी लगाकर शत्रु को परास्त कर पुनः भारत की एकता, अखण्डता व संप्रभुता की रक्षा की। भारतमाता के उन वीर सपूतों को शत् शत् नमन है जो देश की रक्षा के लिऐ शहीद हो गये। इस घटना क्रम से पाकिस्तानी के आस्तीन का सॉप होने तथा कभी बाज न आने के इरादो का पर्दाफाश हो गया पाकिस्तानी को भारतीय सेना के साहस व बलिदानों तथा अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण चलते घुसपैठियों को वापस बुलाना पड़ा । सैनिकों के बलिदानों ने आपरेशन विजय का नाम सार्थक कर हमें विजय दिलायी। पर क्या हमारी कहानी यहीं खत्म हो गयी? नही कदापि नही ! हमारे सम्पूर्ण देश की जनता ने आपसी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर देश व सेना के जावानों की जो सहायता की वह प्रशंसनीय है। सीमा पर लडते सैनिको से अधिक नहीं परतु सभी नागरिकों ने देशहित में कुछ न कुछ किया।

इस कहानी के यहाँ खत्म होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि यह तो कुचक्र है, पाकिस्तान का। यह कुचक्र पाकिस्तान ५० वर्ष से चला रहा है। पाकिस्तानी द्वारा चल रहे इस कुचक्र तथा भारत के क्षेत्र हडपने की साजिश पर एक नजर हम पूर्व हो चुके युद्धों पर डालते है।

पूर्व के भारत-पाक युद्धों पर एक नजर

अतीत में भारत व पाक के मध्य हुए तीन प्रत्यक्ष युद्ध सामने आते है सन् १९४७ का युद्ध, सन् १९६५ का युद्ध तथा सन १९७१ में हुआ बांग्लादेश की स्वतंत्रता का संग्राम । इन तीनों युद्धों पर यदि बारी-बारी से निगाह डालें तो प्रत्येक से पाकिस्तानी का एक ही चेहरा उभरता है और वह है धोखेबाज का। १९४७ का युद्ध पाकिस्तानी की एक घटिया नीति का ही हिस्सा था। अपने जन्म के पूर्व से ही पाकिस्तानी कश्मीर हड़पने की साजिशें करता आ रहा है। भारत पाकिस्तान बँटवारे के समय कबालियों के भेष में अपनी सेना को कश्मीर में श्री नगर से पचास मील दूर बारामूला तक प्रवेश करने वाले पाकिस्तानी के मंसूवे महाराजा हरिसिहं को हटाकर खुद कश्मीर पर अधिपत्य जमाने के थे । महाराज हरि सिहं द्वारा भारत से रक्षा की गुहार व कश्मीर का भारत में विलय के आश्वासन पाकर भारतीय

सेनाए घुसपैठियों को मार भगाने लगी भारत के प्रधानमंत्री नेहरू जी द्वारा मामले को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने पर १९४९ तक युद्ध विराम लागू होने तक पाकिस्तानी का अधिकांश पर कब्जा हो गया। कराची समझौता होजाने के उपरान्त कश्मीर का अधिकांश क्षेत्र पाकिस्तानी के अधिकार में ही रहा ।

१९६५ के युद्ध के समय भी पाक अपनी घटिया नीतियों से बाज न आया। ४०,००० प्रशिक्षित युवकों को स्थानीय बाशिदें बनाकर गोलाबारी की आड में भेजा गया। योजना के अनुरूप इन लोगों को ९ अगस्त को श्रीनगर में दंगा भड़का कर शहर में कब्जा कर लेना था पाकिस्तान ने श्री नगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भी ४००० मी० की ऊँचाई पर सैन्य चौकी स्थापित की । सेना ने पुनः वीरता का परिचय देते हुये योजना असफल कर दी। १ सितम्बर को पाकिस्तानी पैटन टैकों की सहायता से छबं से अखनूर की ओर बढ़ने लगा। छबं जोरिया के मैदान में अब्दुल हमीद सरीखें बहादुरों ने ८ से ११ सितम्बर के बीच अपने बलिदान देकर उनकी कब्रें खोद दी। २३ दिन चलें युद्ध में भारतीय फौजों ने न केवल कश्मीर बचाया अपितु पाकिस्तान में काफी अंदर तक प्रवेश कर तिरंगा फहरा दिया। दिल्ली में रामलीला मैदान से जनता को संबोधित करते हुये तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने कहा था,"अयूब कहते थे कि हम टहलते हुये जायेंगें और दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा फहरा देंगें अब अगर हम भी टहलते हुये जाकर पाकिस्तान में लाहौर में तिरंगा फहरा दें तो दिक्कत क्यों हो रही है।"

रूस की मध्यस्थता से ताशंकद समझौता हो गया और भारत ने विजित क्षेत्र लौटा दियें।

१९७१ के युद्ध में पाकिस्तानी के दो चेहरे सामने आये एक तो जिसके बूते पर वह कश्मीर मे सरपरस्त होने का स्वांग भरता है दूसरा वह शैतानी असली चेहरा जो अपने ही हम वतनों का खून पीने से भी नहीं हिचकिचाते। पूर्वी पाकिस्तानी के नागरिक पाकिस्तानी नियमों के विरूद्ध क्रान्ति पर उतर आये थे तथा क्रांति रोकने में असमर्थ पाकिस्तानी सरकार अपने ही नागरिकों की हत्या जैसे पाशिविक कृत्यों पर उतर आयी। पूर्वी पाकिस्तानी के नागरिकों ने भारत से रक्षा की गुहार की भारत ने भी अपने बढते शरणर्थियों का बोझ घटाने के लिये ३ दिसंबर को हमलाकर दिया। पाकिस्तान की सबसे बड़ी गाजी, खैबर तथा शाहजहाँ पनडुब्बियाँ डुबा दी गयी। जीत पुनः भारत की हुयी। १७ दिसंबर को युद्ध विराम की घोषणा व बांग्लादेश की स्वतंत्रता की घोषणा की गयी। इस प्रकार पाकिस्तान को हर बार भारतीय सेना के द्वारा मुँह की खानी पडी है। परंतु पाकिस्तान के मंसूबे अभी भी दृढ़ है। इसका कारण भारत का नरमी तथा शांति पूर्ण वातावरण तथा संधियों के गलत परिणाम है।

संधियों के दुष्परिणाम - कारगिल समस्या

जनवरी १९४९ में सम्पन्न कराची समझौते के बाद भारत न पाकिस्तान के क्षेत्र लैटा दियें १९६२ की भारत चीन जंग में भारत का १२००० वर्ग कि.मी. क्षेत्र चीन ने हड़प लिया तथा भारत ने संधि प्रस्ताव में उन हिस्सों को मांगा तक नही। १९६५ के युद्ध में भी भारत ने पाकिस्तान के विजित क्षेत्रों

को ताशकन्द समझौते के तहत वापस कर दिया और पाक अधिकृत कश्मीर जिसे वह आजाद कश्मीर कहता है। और जो भारत का एक अभिन्न अंग है मांगा तक नहीं आज पाक इसी क्षेत्र में अपने आतकंवादी प्रशिक्षण केन्द्र भारत आक्रमण कर रहा है। इन्हीं संधियों व भारत के रवैये का दुष्परिणाम है कि पाकिस्तान बाज नहीं आया है और उसने १९४८ और १९६५ की स्थिति पुनः पैदा करने की एक और कोशिश की जिसे भारतीय सेना ने अटूट धैर्य व साहस के साथ नाकाम कर दिया । अटूट धैर्य व सहन शक्ति का जो अद्वितीय परिचय भारतीय सेना ने दिया हैं वह अविस्मरणीय तथा आश्चर्य योग्य है पर क्या आश्चर्य कि भारत माँ के इन सपूतों के बलिदानों की परवाह न कर पाक पुनः ऐसी हरकत करें।

पाकिस्तान की वही पुरानी चाल

पाकिस्तान ने गिरगिट की तरह रंग बदल कर एक बार फिर भारत की पीठ में छुरा भोंकना चाहा। एक तरफ लाहौर समझौते में दोस्ती का दम भरने वाला पाकिस्तान पीठ पीछे कारगिल में घुसपैठिये भेज रहा था। मुँह में राम बगल में छूरी की नीयत से पाकिस्तान अभी भी बाज नही आया है। सन ४८ तथा ६५ की तरह ही पाकिस्तान ने इस बार भी मौके का फायदा उठा भारत में घुसपैठिये भेजे। सन् १९४८ का युद्ध पाकिस्तान द्वारा कबायलियों के रूप में सशस्त्र सेना की घुसपैठ के कारण तो १९६५ का युद्ध भारत को स्थानीय बाशिंदों के रूप में आंतकवादी तथा पकिस्तानी सशस्त्र सेना की घुसपैठ के कारण लड़ना पड़ा था। १९४७ में बटँवारें का लाभ उठा, १९६५ में श्री नगर में चल रहे स्थानीय उत्सव तथा १९९९ में लाहौर समझौते का लाभ उठा पाकिस्तान ने हर बार भारत में एक ही तरीके से घुसपैठ कर कश्मीर में कब्जा करने की रणनीति बनायी है। परन्तु पाकिस्तान यह नही जानता कि हम भारतीय कंचन कांच या चिटके पात्र न होकर जाग्रत सिहं है। इसकी परीक्षा वह तीन बार कर चुका है परंतु अभी भी वह चेता नहीं है और पुनः युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर रहा है। परंतु पाकिस्तान यह नही जानता कि भारत माँ के ये सपूत भारत माँ का कोई भी हिस्सा पाकिस्तान के हाथ में जाकर नापक नहीं होने देगें व यदि उसने इसे नापाक करने की कोशिश की तो इस ऑचल को अपने रक्त से धोकर पाक करेंगें।

पाकिस्तान को भारत द्वारा कश्मीर में मिली तीनों पराजयों से सीख लेकर या तो अपनी रणनीति बदल देनी चाहिये क्योकि घुसपैठियों के रूप में आतकवादी तथा सेना भेजने की उसकी रणनीति की दाल न तो अब तक गली है न अब गलेगी।

नियंत्रण रेखा कहाँ तक अस्पष्ट

सन् १९४९ ई० में हुये कराची समझौते में मानचित्र पर भारत पाक सीमा रेखा प्वाइंट **N.J.** ९८४२ तक खींच दी गयी। प्वांइट **N.J.**९८४२ सियाचिन में पड़ता है इसलिये सियाचिन तक सीमा रेखा स्पष्ट मानी जानी चाहिये। संयुक्तराष्ट्र संघ के सैनिक पर्यवेक्षक समूह द्वारा इसका निरीक्षण किया गया तथा भारत-पाक दोनों देशों ने इस पर अपनी सहमति व्यक्त की।

शिमला समझौते में सन् १९४९ में सम्पन्न कराची समझौते में चिन्हित युद्ध विराम रेखा को वास्तविक नियंत्रण रेखा माना गया और इसे दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों द्वारा पुनः चिन्हित किया गया। इन सबूतों के बाद भी पाकिस्तान कहता है कि नियंत्रण रेखा स्पष्ट नहीं है यह चालबाजी ही है। पता नहीं पाकिस्तान यह चालबाजी किससे करना चाहता है? भारत से या विश्वसमुदाय से। भारत अथवा विश्व समुदाय दूध पीते छोटे बच्चे नहीं जिन्हे वह बरगला ले। नियंत्रण रेखा के संबंध में शिमला समझौते के अर्न्तगत स्पष्ट निर्देश हैं व इन निर्देशों पर दोनें देशों के हस्ताक्षर भी है।

शिमला समझौते की धार ४ (ख) में स्पष्ट उल्लेख है कि जम्मू कश्मीर में १७ दिसम्बर १९७१ को हुये युद्ध विराम के फल स्वरूप वास्तविक नियंत्रण रेखा का दोनों पक्ष सम्मान करेंगे। शिमला समझौते के अर्न्तगत देानें पक्ष इस बात के लिये भी बचन बद्ध है कि वे इस नियंत्रण रेखा का उल्लघंन करने में न तो शक्ति का इस्तेमाल करेंगे और न ही इसकी धमकी देंगे। इन सबके बावजूद पाकिस्तान नियंत्रण रेखा का बराबर उल्लंघन करता आया है । और अब तो उसने नियन्त्रण रेखा को मान्यता देने से भी इन्कार कर दिया है ।

शिमला समझौते की धारा १ (६) में यह स्पष्ट है कि संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र के अनुरूप दोनों देश एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता या राजनीतिक स्वंत्रता के विरूद्ध बल का प्रयोग नहीं करेंगे और नहीं ऐसी धमकी देंगे ।

धारा १ (३) में यह भी उल्लेख है कि किसी भी समस्या के समाधान तक कोई भी पक्ष एक तरफा तौर पर स्थिति में परिर्वतन नही करेगा, न कोई ऐसी कार्यवाही करेगा, न उसमें कोई सहयोग तथा प्रोत्साहन देगा जिससे शान्ति व सद्भाव पूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने में बाधा आती हो।

पाकिस्तान : एक आंतकवादी राष्ट्र

आंतकवाद विश्व राजनीति का एक अत्यन्त घृणित एवं त्रासद रूप है और यह सर्वविदित तथ्य है कि पाकिस्तान आंतकवाद इस्लामी आंतक वाद का सबसे बड़ा निर्यातक देश है। अफगानिस्तान पर पूर्व सोवियत संघ के नियंत्रण के दौरान अमेरिका ने पाकिस्तान में आंतकवादी गतिविधियों के प्रशिक्षण का प्रमुख केन्द्र बनाया था, जहाँ पर अफगान पृथकतावादी लोगों को सैनिक प्रशिक्षण दिया गया, ताकि वे अफगानिस्तान में अपनी विध्वंसात्मक कार्यवाहियों को जारी रखें । अमेरिका ने पाकिस्तान में एक आतंकवादी संगठन "हरकत-उल-अंसार" को आंतकवादी संगठन घोषित कर दिया है। अमेंरिका को वास्तव में पाक के आतंकवादी राष्ट्र होने की घोषणा कर देनी चाहिये थी। लेकिन अभी तक अमेरिका ने ऐसा नही किया है। यह स्मरणीय है कि क्लिंटन प्रशासन ने विश्व के जिन तीस संगठनों को आंतकवाद संगठन घोषित किया है, उनमें पाकिस्तान स्थित हरकत-उल-अंसार तथा श्री लंका का लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल इलम भी है।

पाकिस्तान के गुप्तचर संगठन इंटर सर्विसेज इंटेलिजेस की भारत विरोधी विध्वंसात्मक कार्यवाइयों के बारे में भारत ने अब तक पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किये है। बम्बई बम विस्फोट कांड के समय भी सन्१९९३ मे अमेरिका पाकिस्तान को आंतकवादी राष्ट्रघोषित करने से रूक गया। आई० एस. आई. के पूर्व डायरेक्टर जनरल जावेद नासिर ने 'हरकत-उल-अंसार ' का गठन किया था जिससे आज अमेरिका की परराष्ट्र सचिव मैडलिन अल्ब्राइट भी भयभीत है।

अप्रैल १९९६ में अमेरिकी परराष्ट्र विभाग ने कश्मीर में आंतकवादियों की सहायता न करने की अपील को अमान्य कर यह स्वीकार कर लिया कि पाकिस्तान एक आतंकवादी राष्ट्र है परंतु उस समय भी इसकी औपचारिक घोषणा नहीं की गयी। अमेरिकी विदेश विभाग की उस समय की रपट में स्पष्ट है कि कश्मीर में पाक समर्थित आतंकवाद गुट हरकत-उल-अंसार के कई हजार सशस्त्र सदस्य पाक अधिकृत कश्मीर, दक्षिण पूर्व कश्मीर तथा भारत के डोडा क्षेत्र में मौजूद है।

हरकत-उल- अंसार का उलफरान से संबंध है जिन्होने जुलाई १९९५ मे दो अमरीकी, एक ब्रिटिश तथा एक नार्वे वासी का अपहरण किया था । नार्वेवासी की हत्या पहले ही कर दी गयी। एक बच निकला तथा शेष की संभवतः अब तक हत्या की जा चुकी है।

जनवरी १९९६ में इथोपिया ने सुरक्षा परिषद से शिकायत की थी कि मिस्र के राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक की हत्या की साजिश में पकड़े गये लोगों में कई पाकिस्तान में प्रशिक्षित किये गये थे। इससे भी पूर्व १९९४ में अल्जीरिया व मिस्त्र ने पाक पर आरोप लगाया था कि पाक प्रशिक्षित आंतकवादी काहिरा व अल्जीरिया में सक्रिय है । पाक प्रशिक्षित आंतकी फिलीपीन्स में भी पकड़े गये है। यह सर्वविदित है कि कश्मीरी, पठान, अरब तथा अन्य देशों के प्रशिक्षित नागरिकों द्वारा पाक भारत में उपद्रव करा रहा है।

फरवरी १९९६ मे पाक अधिकृत या कथित आजाद कश्मीर के मुजफ्फराबाद से जम्मू कश्मीर राष्ट्रीय छात्र संघ और नेशनल आवामी पार्टी द्वारा जारी एक पत्र में कहा गया था "यहाँ पर आतंक और बर्बरता की स्थिति हैं तथा राजनीतिक विरोधियों का पूर्णतः सफाया किया जा रहा है। पाक अधिकृत क्षेत्रों के हम लोग अपने इतिहास के नाजुक दौर से गुजर रहें और पाकिस्तान अधिकृत यह क्षेत्र एक नाजी शिविर में तब्दील हो चुका है।"

सन् १९९६ से अब तक यह हालात सम्पूर्ण पाक में फैल गये है मुजाहिद कौमी मूवमेंट के सदस्यों को फाँसी की सजा देना, आतंक वादी संगठनों तथा प्रशिक्षण शिविर स्थापित करना इसके प्रमुख साक्ष्य है। पाकिस्तान में इस समय करीब दो दर्जन आतंक वादी संगठन है। इनका और विशेष रूप से ओसामा-विन-लादेन का एक मात्र लक्ष्य पाकिस्तान को कट्टर इस्लामी देश अर्थात अफगानिस्तान बनाना है इसके साक्ष्य शिया मुसलमानों की पाक में तेजी से हो रही हत्याए है। अफगान लड़ाकों के अलावा सूडान लेबनान, लीविया और अन्य इस्लामी देशों के आतंकवादी पाक के मेहमान बने हुए है । आई०एस०आई०

के लिए ये आतंकवादी उसकी सबसे बडी ताकत है। आई०एस०आई० की मदद के चलते ही विश्व न०१ इस्लामी आतंकवादी ओसामा-बिन-लादेन पाकिस्तान व अफगानिस्तान में अपने अडडे चला रहा है। आतंकवादी लादेन का इस्लामी आतंकवादी संगठन अल-बदर इस समय विश्व का सबसे खूँखार इस्लामी आतंकवादी संगठन हैं। चूँकि आई० एस० आई सभी आतंकवादी की सरंक्षक की भूमिका में है इसलिये इनके हौसले बुलंद है। इन बुलंद हौसलों का इजहार पिछले दिनों आई. एस.आई. के भूतपूर्व अध्यक्ष लेफ्टीनेन्ट जनरल हमीद गुल ने नवाज शरीफ को सीधे-सीधे धमकी दी कि अगर उनका भारत विरोधी रूख नरम हुआ ते इस्लामी लडाके अपनी बंदूकों का मुहँ कश्मीर से घुमाकर इस्लामाबाद की ओर कर देगें । यह धमकी भारत से घुसपैठियों को वापस बुलाने के एवज में और अंततोगत्वा नवाज शरीफ के द्वारा विलक्लिंटन के साथ दिये गये एक संयुक्त बयान में घुसपैठियों का वापस बुला लेने की बात कहने पर भारत से कारगिल में लड़ा जा रहा युद्ध यकायक पाकिस्तान की धरती पर पहुँच गया यह युद्ध पाकिस्तान भारत के खिलाफ नही, पाक सरकार तथ नवाज शरीफ के खिलाफ है। इस बयान के बाद पाकिस्तान में विरोध के जो स्वर उभरें है। उनसे पाकिस्तान के तालिबानीकरण का खतरा उत्पन्न हो गया है। खतरनाक यह है कि सभी आतंकवादीसंगठन इस बयान को धता बताकर नवाजशरीफ को देखलेने जैसी शैली में धमकियाँ भी दे रहे है। आतंकवादियों के अतिरिक्त खुफिया ऐजेंसी आई०एस०आई० भी नवाज शरीफ से खार खाये बैठी है। पाक सेना को भी नवाज रास नहीं आया है। ऐसा लगता है कि कोई भी भारत से दोस्ती तो क्या, युद्ध न करने की भी बात तक सुनना चाहता। नवाजशरीफ रातों रात भारत समर्थक की करार दिये गये है। पाकिस्तान के हर छोटे-बड़े शहर में मुजाहिदीनों की भर्ती उसी तरह शुरू हो गयी है जैसे सेना की भर्ती होती है। ये सभी भारत से लड़ना चाहते है। यह विडम्बना ही है कि पाकिस्तानी जिसका नामकरण पाक (पवित्र) के रूप में हुआ था, आज बड़ी तेजी के साथ तालिबानीकरण अर्थात तबाही की ओर बढ़ रहा हैं।

ऐसे में भी यदि 'पाक ' को आतंकवादी राष्ट्र घाषित न किया जया तो क्या ये भारत तथा सम्पूर्ण विश्व समुदाय के साथ बेमानी न होगी ? पाक के उग्रवादी अब भारत या अन्य देशों ही नही अपितु स्वयं पाक में भी तबाही बरपा रहें हैं पाक एक आतंकवादी राष्ट्र था, है, व अगर यही हालात रहे तो अपने अंत तक सदा आतंकवादी राष्ट्र ही रहेगा । यदि तत्काल ही पाकिस्तान ने कोई कारगर कदम नही उठाये तो आतंकवाद के साथ-साथ पाक भी खत्म हो जायेगा।

अभय शुक्ला
दशम 'क'

भारतीय उपमहाद्वीप की त्रासदी
(जून-१९९९)

प्रतियोगिता के विषय जो कि निर्धारित थे क्रमवार सुनाये जा रहे थे। सभी विषय इतने अच्छे ये कि मैं सोचने लगा क्या लिखूँ? विषय थे - पर्यावरण, आध्यात्म, यात्रा वर्णन ..... कारगिल । "कारगिल" यह शब्द सुनते ही मेरे मन में बिजली सी कौंध गयी। इस शब्द ने मेरे मन को झकझोर दिया । कारगिल शब्द सुनते ही मेरी आँखों के साामने पाकिस्तान का वह क्रूर व कायर चेहरा उभरने लगा और ऐसा लगा कि उसे बदसूरत चेहरे को वहीं नष्ट कर दूँ। मेरी आँखें देश के शहीद एवं सीमा पर लड़ रहे जवानों के प्रति उनकी स्मृति में आर्द्र हो गयीं। मेरे मन में यह भाव जागा कि मैं भी युद्ध स्थल पर जाऊँ और दुश्मन के कम से कम एक सैनिक को तो मार ही दूँ।

इस विषय को सुनकर ऐसा लगा कि मैं अपने मनोभावों को देश के लोगों के सामने प्रस्तुत करूँ। इस विषय ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला कि अन्य सभी विषय इतने अच्छे होते हुए भी गौण लगने लगे तथा मैंने इस विषय पर कुछ लिखने का निश्चय किया। मैं विषय रूपी माला में भाव जो मेरे मन में स्वाभाविक रूप से उठ रहे है। रूपी मोती पिरोकर व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूँ।

कारगिल संघर्ष

"पाकिस्तान" शब्द सुनते ही मेरे मन में कभी-२ ऐसा भ्रम होता हैं कि यह किसी देश का नाम है या किसी ऐसी कंपनी का जो हर तरफ आतंकवाद तथा दहशत फैलाने वाले प्रोडक्ट सप्लाई करती है। पाकिस्तान अपने जन्म १४ अगस्त १९४७ के बाद से ही भारतीय क्षेत्र हड़पने के अनेक प्रयास करता रहा है । सर्वप्रथम १९६५ में उसने भारत पर हमला किया तो उसे मुँह की खानी पड़ी थी। यही सन् १९७१ के युद्ध में हुआ। २८ वर्ष शांत रहने के पश्चात पाक की वही राक्षसी प्रवृत्ति फिर जागी तथा इस बार उसका निशाना था 'कारगिल' एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्र द्रास, बटालिक, काक्सर एवं मश्कोह घाटी।

८ मई से १५ मई १९९९ तक भारतीय सेना के पेट्रोल्स (खोजी दस्तों) ने यह पता लगाया कि लगभग १०० घुसपैठिये नियंत्रण रेखा से भारतीय इलाकों में पच्चीस कि.मी. तक घुस आये हैं। उस समय मामलें को अधिक महत्व नहीं दिया गया परंतु यही से भारत में पाक घुसपैठियों का आगमन प्रारंभ हुआ। १ मई के अंतिम एवं जून के आते आते इस मामले ने तूल पकडा एवं यह समस्या बड़े आश्चर्यजनक ढंग से सामने आयी।

जून में अखबार इस समस्या से पटे हुए थे। देश में पाकिस्तान के प्रति घृणा की भावना बढती जा रही थी, देश का बच्चा-बच्चा सीमा पर जाने व युद्ध के लिए लालायित था। पूरा देश सैनिकों के

पीछे खड़ा था। परंतु मुझे इस बात ने दुःख दिया कि हमारे ही भाई (पाक) ने इतने वर्षों तक दुश्मनी निभाने के बाद कुछ क्षणों के लिये दोस्ती का हाथ बढ़ाया एवं बीच में ही हाथ वापस खीच लिया । दिल्ली - लाहैर बस सेवा के रूप में मित्रता स्थपित करने का हमने जो प्रयास किया उसे पाक ने अपने इस कुकृत्य से नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इसी संदर्भ में हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा, "हम तो दोस्ती का पैगाम लेकर बस से लाहैर गये परंतु हमें न पता था कि यह बस करगिल पहुँच जायेगी।"

पाकिस्तानी दिमाग की दाद देनी पड़ेगी कि उसने घुसपैट के लिये ऐसा समय चुना जबकि करगिल आदि क्षेत्रों में अधिक ठंड नही थी। वे अपने लिए आवश्यक सामग्री लेकर घुसपैठियें एवं पाकिस्तानी सैनिक पर्वत की चोटियों पर जा पहुँचें द्रास, बटालिक आदि क्षेत्रों में जो दुर्गम बर्फीली चोटियाँ है, उनकी ऊँचाई ११००० फीट से १६००० फीट तक है तथा ऐसी जगह पर और इससे भी कठिन बात कि भारत को नीचे से ऊपर हमला करना था परंतु भारतीय जवानों में हौसला था तथा उनकें मन में बार-बार यही बात गूँज रही थी :-

अपनी आजादी को हम हरगिज भुला सकते नहीं ।
सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं ।।

वे तो बस कहते हैं :- शान तेरी कभी कम न हो, ऐ वतन, ऐ वतन ।

पाक घुसपैठ की सूचना बी० एस० एफ० कों १६६८ के अन्त में कुख्यात आतंकी संगठन 'अलबदर' के एक कार्यकर्ता द्वारा मालूम हुई और इसकी सूचना उसने २७ दिसम्बर १६६६ को गृह एवं रक्षा मंत्रालय को दे दी; परन्तु कोई कार्यवाही न हुई क्योंकि इन मंत्रालयों द्वारा बताया गया कि यह सूचना उन्हें २६ मई. १६६६ को मिली । जून में यह अघोषित छद्म युद्ध अपने चरम पर जा पहुँचा । इसमें राजपूताना व बिहार रेजीमेंट के जवानों ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन किया परन्तु मेरे कहने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि अन्य जवानों का उसने कम योगदान रहा । वह दक्षिण का मरियप्पन सर्वानन हो या डोडा का मेजर कमलेश प्रसाद, पुणे का मेजर तलवार हो या स्क्वाड्रन लीडर अजय अहूजा या फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता । सबके मन में यही बात थी- *'पहले हम भारत के बेटे हैं फिर अपनी माताओं के'* । ये तो बस राम प्रसाद बिस्मिल की इस उक्ति को आत्मसात करके उसी पर अमल करने का प्रयास कर रहे थे :-

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है । देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है" । वे कहते हैं, "एक लड़ाई हमने तब जीती थी यह लड़ाई भी हम जीतेंगे" ।

युद्ध बढ़ता गया । जून के शुरू में भारत का 'आपरेशन विजय- का अभियान शुरू हुआ । इस कड़ी में सबसे बड़ी सफलता ४ जुलाई १६६६ को सबसे ऊँची चोटी 'टाइगर हिल्स' (१६००० फुट) पर कब्जा करके मिली । ५ जुलाई १६६६ को 'गनहिल' फिर 'जुबार हिल्स' पर कब्जा किया और फिर सफलता का दौर शुरू हुआ। पाकिस्तान को जब महसूस हुआ कि वह युद्ध में भारत से न जीत सकेगा

तो उसने अपने मित्रों से मदद की गुहार लगायी पर उन्होंने (चीन व अमेरिका) ने उससे पल्ला झाड़ लिया और भारत को अंतराष्ट्रीय समर्थन मिलने लगा । युद्ध में भारतीय सैनिकों द्वारा मारे गये सैनिकों को पाकिस्तान ने अपना कहने से इंकार कर दिया, तब भारतीयों ने अपूर्व मानवता का परिचय देते हुए उनका अंतिम संस्कार करने का निर्णय किया पर तब पाक ने उन्हें अपना लिया । जब पाक लगभग हार सा गया तथा उस पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ने लगा तो उसने कहा, *" हम घुसपैठियों को वापस आने को ही कह सकते हैं, आना या न आ आना मुहाजिदिनों (घुसपैठियों) पर निर्भर है"* । इसी तरह का बयान पाकिस्तानी विदेश मंत्री मियां सरताज अजीज़ ने दिया कि *'घुसपैटिये हमारे नियंत्रण में नहीं है ।'*

अन्ततः भारत ने कहा कि कहीं हमारे सब्र का पैमाना न टूट जाय अतः हम घुसपैठियों को १६ जुलाई १९९९ तक नियंत्रण रेखा के उस पार १ किमी० तक जाने की मोहलत देते हैं, नहीं तो इसे पाक की आक्रामक नीति माना जायेगा । अतः इस चेतावनी को गंभीरता से लेकर भारत से घुसपैठिये जाने लगे व इसीलिए भारत ने यह अवधि १ दिन बढ़ा दी । अब यह युद्ध लगभग समाप्त हो गया है । इस युद्ध से भारत ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में धाक जमा ली ।

इस युद्ध से भारतीय एकता का प्रदर्शन हुआ । लोगों ने घर-घर जाकर करगिल सहायतार्थ धन इकटठा किया तथा धन इकट्ठा करने के उद्देश्य से भारतीय क्रिकेटरों व फिल्म स्टारों के बीच फुटबाल मैच व चेन्नई में क्रिकेट मैच खेला गया। उन दोनों मैचों में लगभग ३ करोड़ रू० एकत्र हुए । इसी प्रकार फिल्म स्टारों द्वारा आयोजित दो कार्यक्रमों 'श्रद्धांजलि' व 'ऐ वतन तेरे लिए' से भी धन राशि एकत्र हुई । ऐसी परिस्थितियों में धन के साथ-साथ देश भक्ति की भावना का भी महत्व होता है ।

प्रायः युद्ध के बाद सैनिकों व उनके परिवारों को भुला दिया जाता है परन्तु हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हम स्वतंत्र हैं उन्ही की बदौलत न जाने कितनी माँओं ने अपने बेटे खोए, कितनी बहनों ने भाई, कितनी पत्नियों ने पति व दोस्तों ने दोस्त खोये । इसीलिए अटल जी ने कहा 'वीर जवान जिन्दाबाद' । श्री जार्ज फर्नान्डीज ने कहा, "यह देश तुम्हें कभी न भुला पायेगा।" व श्री प्रमोद महाजन ने कहा, "बहादुर जवानों तुम्हें सलाम" । ऐसे लगभग ३०० परिवार जिन्होंने अपने बेटों को खोया है की जिम्मेदारी सहारा परिवार ने ली है जो कि प्रशंसनीय कार्य है । भारत सरकार को चाहिए कि और ऐसी योजनाएं चलायी जाएं । मुझे शर्म से पाक के बारे में कहना पड़ता है कि जैसे एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है उसी प्रकार पाक पूरे विश्व में आतंक फैलाना चाहता है । उन शहीदों के लिए मैं कवि के कथन को पुनः कहना चाहता हूँ :-

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

राहुल जोशी
दशम 'क'

बेचारे पाकिस्तान को कुछ और क्यों नहीं सूझता ?

सन् १६३० का वह दिन, जब कैम्ब्रिज के बुद्धिजीवी रहमत अली ने 'पाकिस्तान' शब्द गढ़ा था, भारत के ज़ेहन में सदैव एक कांटे के समान चुभता रहेगा । यही पाकिस्तान न जाने कितनी ही बार विश्वासघात कर चुका है । कारगिल भी इसी श्रंखला की एक कड़ी था । यद्यपि युद्ध समाप्त होने को है परन्तु इस युद्ध के पश्चात् पाकिस्तान को विश्व में एक आतंकवादी राष्ट्र की संज्ञा मिल गयी है ।

पाकिस्तान में अनेक आतंकवादी संगठन इस्लामी कट्टरपंथी आंदोलन चला रहे हैं । ऐसा ही एक संगठन हरकत-उल-मुजाहिदीन पेशावर (पाकिस्तान) में स्थित है । जो कश्मीर में समस्त गतिविधियां संचालित करता है । साथ ही पाकिस्तान का सम्बन्ध तालिबान, अल-फरान, अल - बदर एवं आतंकवादी सरगना ओसामा बिन लादेन से भी है । इन सभी के सहयोग से योजनाबद्ध तरीके से पाकिस्तान ने अपने नापाक इरादों को अंजाम देने का असफल प्रयत्न किया । पाकिस्तान की कारगिल योजना नवम्बर '६६ में बनने का अनुमान है । सैनिकों की कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ १५ अप्रैल '६६ के करीब हुई । २० मई के आस -पास इन सैनिकों (आतंकवादी कहना विवेकहीनता का परिचय देना होगा) ने स्वयं को इस क्षेत्र में स्थापित कर लिया और प्रारम्भ हुआ कारगिल का युद्ध ।

इस युद्ध को छेड़कर पाकिस्तान ने सिर्फ अपनी अविश्वसनीयता का परिचय दिया है क्योंकि 'लाहौर बस सेवा' द्वारा दोस्ती का हाथ भारत की ओर से बढ़ाकर पुनः पीठ में छुरा भोंका । युद्ध में पाकिस्तान की कायरता स्पष्ट रूप से अंतर्राष्ट्रीय जगत के समक्ष प्रकट हुई । पाकिस्तान ने अपने सैनिकों को आतंकवादियों के रूप में कारगिल भेजा । युद्ध में अपने सैनिकों के शवों को पहचानने से इंकार करना उसकी कायरता का प्रमाण नहीं तो और क्या है ?

जब पाकिस्तान ने युद्ध में अपने को असफल होते देखा तो अपने प्रचार के लिए उसने अपने देश के कुछ समाचार पत्रों का दामन पकड़ा । समाचार पत्रों ने भी भारत के विरूद्ध अनाप - शनाप उगलना प्रारंभ कर दिया - "कितने मख़ौल की बात है कि हिन्दुस्तान ने कारगिल में ४०,००० फौजी भर दिये हैं और गिनती के मुजाहिदीन उन्हें शिकस्त दे रहे हैं। ", " हिन्दुस्तानी इंतज़ामात इस कदर बिगड़ गये हैं कि उनके जो घायल लोग किस्मत से हवाई जहाज से श्रीनगर ले जाये गये, उन्हें अस्पताल में भरती होने के लिए तीन - तीन दिन का इंतज़ार करना पड़ा" पाकिस्तान के अखबारों में ये तथ्य उबा देने की हद तक छापे गये । 'नजम सेठी' की 'फ्राइडे-टाइम्स ने ४-१० जून की अपनी संपादकीय में लिखा "भाजपा सरकार अपनी लोकप्रिय 'एटमी नीति' के बावजूद परस्त हो गयी है, फिर भी वोट बटोरने के लिए अपने पुराने सियासी हथकंड़े इस्तेमाल कर रही है ।" इस प्रकार पाकिस्तानी अखबारों ने अपने देश की जनता के साथ जो भद्दा मजाक किया, उसकी स्वयं कल्पना नहीं की जा सकती ।

पाकिस्तान ने इस युद्ध को ज़ेहाद का रूप भी देना चाहा । उसने इसे मज़हबी मुहिम तथा अल्लाह द्वारा बताये गये कर्ज़ की संज्ञा दी । जबकि पैगम्बर ने कहा है कि "जंग एक छल-बल है, एक कपट है।" (सहीह मुस्लिम, खण्ड ३, पेज ६४५, ६६० - ६१ ; सहीह अल बुखारी, खण्ड - ४, पेज ११६-६७, सुमन अबु दाऊद, खंड-२, पेज ७२८) है। अतः उनका एक और प्रयास असफल हो गया ।

पाक निरंतर बर्बादी की ओर अग्रसर हो रहा है। उसने अपने रक्षा बजट को १२८ अरब रुपये से बढ़ाकर १४२ अरब रुपये कर दिये । यद्यपि पाक में इस समय गृहयुद्ध जैसी स्थिति जारी है । अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने उसे दिया जाने वाला ऋण का आधा भाग निरस्त कर दिया है । अतः यह युद्ध उसके लिए एक आत्मघाती कदम सिद्ध होगा। यदि देखा जाये तो पाकिस्तान की सैन्य क्षमता भारत के सामने बहुत कम है । इसे निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं -

भारत - पाक की तुलनात्मक सैन्य शक्ति

भारत		पाकिस्तान
पैदल सैनिक	9,80,00	5,20,000
डिवीजन	5	5
इंटीग्रेटेडबल	10	9
आर्म्स डिवीजन	2	2
मैकेनाइज्ड	1	-
इफेंट्री व माउंटैन	32	19
एअर बोर्न टूप्स	2	1
युद्धक वाहन	1000	900
वायु सैनिक	1,15000	40,000
नौ सैनिक	47,000	30,100
डिस्ट्रायर	8	6
फ्रिगेट	14	11
युद्धक टैंक	3,500	2,850

भारत - पाक तुलनात्मक प्रक्षेपास्त्र क्षमता

भारत		पाकिस्तान	
मिसाइल	मारक दूरी किमी०	मिसाइल	मारक दूरी किमी०
पृथ्वी -1	150	हत्फ -1	80
पृथ्वी-2	250	हत्फ-1A	100
अग्नि-1	1500	हत्फ-2	300
अग्नि-2	2500	हत्फ-3	600
त्रिशूल (सतह से हवा)	09	गौरी	1500
आकाश (सतह से हवा)	25	गौरी-2	2000
		शहीन	600
टैंक रोधी नाग	05	एम-11	950

अतः १ अरब आबादी वाले भारत के आगे १४ करोड़ आबादी वाले पाकिस्तान (जिसकी आबादी उ० प्र० से कम है) का इस प्रकार का कदम अत्यन्त अविवेकपूर्ण एवं 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' को चरितार्थ करने वाला लगता है ।

वहीं भारत ने इस युद्ध में वीरता का परिचय देते हुए पाक से द्रास, कारगिल, मश्कोह घाटी, तोलोलिंग चोटी, टाइगर हिल आदि पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया । भारतीय जवान ' नाइट ऑफ फेथ' व 'ट्रैजिक-हीरो' के नाम से विश्व प्रसिद्ध हो गये है । वे जवान मौत की खिल्ली उड़ाते हैं जैसा कि विलयन बटलर यीट्स ने कहा है -

"इन्सान जब मरता है तो,
सभी से डरता है, सभी से आस करता है ।
अनेक बार मरा अनेक बार जी उठा
जो स्वाभिमानी पुरूष, वह
हत्यारों के सामने नहीं शीश झुकाता है,
उखड़ती सांस की खिल्ली उड़ाता है ।
वह जानता है कि मौत की क्या सच्चाई है,
और वह यह कि मौत उसी ने बनाई है ।"

कारगिल युद्ध

द्रास, कारगिल और बटालिक, पर है मातम छाया ।
भारत की कार्यवाही से, पाकिस्तान है घबराया ।

इस पर अपने भाड़े के, सैनिकों को है भिजवाया ।
फिर भी माँ के वीरों ने, है आश्चर्य दिखाया ।

अगर आक्रमण किया देश पर, तो आगे पछताना होगा ।
माँ के वीर सपूतों द्वारा, लोहे के चने चबाना होगा ।

युद्ध भूमि पर उतर गये तो, सर पर तेरे ताज न होगा ।
अपने खुद के स्थानों पर, तेरा कोई राज न होगा ।

अमर शहीदों की कुर्बानी, याद हमेशा की जायेगी ।
इसीलिये उनकी कुर्बानी, हर किताब में लिखी जायेगी ।

कीर्तिमान मिश्र
सप्तम 'क'

कारगिल बनी समरभूमि

कश्मीर भारतमाता का मुकुट, धरती का नन्दनवन, प्रकृति का सुषमास्थल, महर्षि कश्यप की कर्मभूमि और जगद्गुरू शंकराचार्य की तपोभूमि सदा-सदा से भारत का एक महत्वपूर्ण अंग है। यही कल्हण की राजतरंगिणी गूँजी थी और यही भगवान मार्तण्ड का मंदिर बना। भारत की "श्री" का पर्याय श्री नगर यही है। यही के सम्राट ललितादित्य की सेनाओं तिब्बत और मध्य एशिया पार कर चीन की राजधानी तक धावा बोला था।

किन्तु हमारी राजनैतिक अस्थिरता जिसके अर्न्तगत अपनी कश्मीरियत को भारत के प्रधानमंत्रित्व से भी अधिक महत्व का मानने वाले किन्तु दूसरे पर संकुचित प्रान्तीयता का आरोप मढ़ने वाले, दूसरों को साम्प्रदायिकता की गाली से विभूषित करने वाले किन्तु स्वयं को भारत के विभाजन के लिये जिम्मेदार मुस्लिम लीग से सन् १९५७ में समझौता कर मुस्लिम साम्प्रदायिकता को पुनः फलने -फूलने का मौका देने वाले, अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति समझकर तिब्बत को चीन की झोली में डालकर अपने सिर पर विस्तारवादी देश को बैठा देने वाले और चीन द्वारा लद्दाख तथा अरूणाचल प्रदेश में की गयी घुसपैठ की ओर से आखें मूँद लेने वाले तथा अन्त में चीन द्वारा किये गये आक्रमण के पश्चात अपनी असज्जित, अर्धशिक्षित सेना को चीनियों को बाहर भगाने का आदेश देकर भारत के माथे पर पराजय का कलंक लगवा देने वाले और "हम स्वप्नलोक में विचारते रहें" कहकर अपनी गलतियों का खप्पर तत्कालीन रक्षामंत्री के मत्थे फोड़कर अपने आपको दोषमुक्त समझने वाले भारत में प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने हक द्वारा किये गये पापों का फल आज तक अपना देश भोग रहा है।

(परिणाम-आँकड़ों में "जम्मू कश्मीर भौगोलिक दृष्टि से)

सम्पूर्ण क्षेत्रफल	२,२२,२३६ वर्ग किलोमीटर	१००	प्रतिशत
पाक के कब्जे में	७८,१४४ "	"	३५.१५प्रतिशत
पाक के द्वारा चीन को दान	५,१८० "	"	२.२९प्रतिशत
चीन द्वारा कब्जाया	३७,५५५ "	"	१६.९२प्रतिशत
भारत में शेष	१,०१,३८७ "	"	४५.६४प्रतिशत

समय आधी शताब्दी से अधिक बीत गया भारत-माता के लाड़लों को अपनी माता के सिरदर्द को मिटाने के लिये अपने सिर की बाजी लगातें; पर क्यों नहीं हल हो रहा है और कब तक छेदेगा यह शुल कब तक हमारे वीर बलिदान देते रहेंगे ? कब तक कश्मीर की पवित्र धरती घिनौने पाकिस्तान के कब्जे में रहेगी ? कब तक कश्मीर में भारतमाता की जय कहने वाले गोलियों का निशाना बनेंगें और अपने पुरखों का घर छोड़ने को विवश होगें ? कब तक कश्मीर को शेष भारत के अन्य प्रदेशों की भाँति समान

नहीं माना जायेगा

असमदर्शिता का ही परिणाम है कि कश्मीर आज फिर धधक रहा है। बर्फ से जमी पहाड़ियों पर से पाकिस्तान शोले बरसा रहा है। कारगिल, बटालिक, द्रास, मश्कोह, टाइगर हिल की ऊँची पहड़ियों पर कब्जे के साथ-साथ भारतमाता के पवित्र आँचल मुक्त कराने का संकल्प लेकर घुसपैठियों को नियंत्रण रेखा से पार भगाने के लिये भारतीय सेना के जवान जान की बाजी लगायें हुये है। रण बाँकुरों की वीर गाथायें और शहीदों के बलिदान चर्चा में है। ले० सौरभ कालिया और उसके छह साथियों के साथ किये गये पैशाचिक अत्याचारों से देशभक्तों का खून उबल रहा है। जगह-जगह घायल सैनिकों के लिये रक्तदान करने वालों की पंक्तियाँ लग रही है। शहीदों के परिवारों के प्रति सहानुभूति उमड रही है। राष्ट्रीय स्वाभिमान अब अंगड़ाई लेकर जागता प्रतीत हो रहा है। गलियों और चौपालों पर एक ही चर्चा का का विषय बना है। "कारगिल का युद्ध" और एक ही संकल्प है "हम अपना कश्मीर नही देगें" क्योकि कारगिल का संकट या कश्मीर का दर्द स्थानीय नही अपितु राष्ट्रीय संकट है। कश्मीर पर प्रहार भारत माता के सिर पर प्रहार है।

इसे मिटाने की साजिश करने वालों से, कह दो चिनगारी का खेल बुरा होता है।
औरों के घर आग लगाने का जो सपना,
वह अपने ही घर में सदा खरा होता है।

फिर भी भारत को इस बात से सावधान रहने की जरूरत है कि पाकिस्तान का जन्म व विकास का आधार भारत-विद्वेष है।अमेरिका न्यायप्रिय एवं मानवीय देश नही है। बल्कि दुनिया का पुलिसमैन है। भारत की वर्तमान सरकार की यह भारी राजनैतिक जीत है कि हम इस कारगिल युद्ध में विश्व जनमत को सच्चाई के मार्ग पर ला खड़ा कर सकें । इसलिये अमेरिका, चीन, फ्रान्स, इंगलैण्ड आदि सभी देशों ने पाकिस्तान को उसकी दस नीच हरकत के लिये लताड़ा है। परन्तु अमेरिका की कूटनीति है कि वह चीन तथा भारत को नियन्त्रण में रखने के लिये कश्मीर चाहता है। इसलिये पाक को सदा पालने पोसने का कार्य करता है व करता रहेगा। अमेरिका प्रयास करेगा कि नियन्त्रण रेखा को अन्तर्राष्ट्रीय रेखा मान लिया जाये परन्तु राष्ट्रपति बिल क्लिन्टन के निमन्त्रण को ठुकराया जाना भारत के नेतृत्व के गौरव व मजबूती को कई गुना बलशाली बनाता है। देश की जनता भारत सरकार के पीछे एकजुट खड़ी है। देशभक्तों के उबलते रक्त से एक ही आवाज आती है-

जब तक गंगा की धार, सिंधु में ज्वार,
अग्नि में जलन, सूर्य में तपन शेष।
स्वातं य समर की वेदी पर अर्पित होंगे,
अगणित जीवन, यौवन अशेष।

पवन कुमार त्रिवेदी
द्वादश -"ख"

पोखरन भूमि जब गुर्रायी

हो सावधान भिडने वाले अब हम भी शस्त्र उठाते हैं
करने को नष्ट समूल आज फिर समर भूमि में आते हैं ।
किस हद तक हमने सहन किये '48 के मारक प्रहार,
'65 में फिर कुछ सबक दिया बेशर्म न मानी अभी हार ॥

अमरीका की जिस ताकत पर तू झूम रहा था अरे दुष्ट !
उसके हथियारों ने तुझको कर पाया अब तक कहां पुष्ट
जिन्ना की जिस जयचन्दी ने टुकडे काटे भारत माँ के,
उसको समाप्त करने का फिर हम बीडा आज उठाते हैं ।
करने को नष्ट -------- ॥

इकहत्तर का वह महासमर देता तुझको जड से उखाड,
मेरी सहिष्णुता के चलते तूने फिर झण्डे लिये गाड ।
इन्दिरा ने तुझको एक बार था फिर से जीवन दान दिया,
लेकिन उसके प्रतिशोध हेतु तूने फिर अथक प्रयास किया ॥
पर हे 'गोरी' ! यह याद रखो अब 'पृथ्वीराज' न भाते हैं ।
करने को नष्ट ---------- ॥

शायद तूने यह सोचा था हम बौद्ध धर्म के अनुयायी,
थी वह तिथि बुद्ध-जयन्ती ही पोखरण भूमि जब गुर्रायी
भेजे थे सैनिक छिपकर के आये थे हमें मिटाने को,
पर धूल चाटकर भाग गये आये थे हमें चटाने को ॥

थे कुछ जयचन्द जहाँ पर भी अब उन्हें मिटाने जाते हैं ।
करने को नष्ट समूल आज फिर समर-भूमि में आते हैं ।

॥ भारत माता की जय ॥

परेश पाण्डेय
दशम 'ख'

"दोस्ती की पीठ पर पाकिस्तान का खंजर"

सन् १९४७, हमारी आजादी का स्वर्णिम वर्ष । परन्तु आजादी के साथ - साथ हमें अपने भारतवर्ष का एक अंग कुरबान करना पड़ा । सन् १९४७ के पूर्व हम ही से जुड़ा हमारा भाई पाकिस्तान विभाजन के पश्चात् हमारा सौतेला बन बैठा । परन्तु शायद उस समय के राजनीतिज्ञों के मन में सत्ता की भूख जाग उठी और वे जल्दी से जल्दी सत्ता पाने के लिये लालायति हो उठे । अगर ऐसा नहीं था, तो फिर गांधी जी ने ऐसा क्यों कहा था कि पट्टाभिसीता रमैया की हार मेरी हार है । क्या 'नेता जी' सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिये उपयुक्त नहीं थे ?

शायद इन्हीं राजनीतिक दाँव पेचों के कारण हमारा भारत विभाजित हो गया। एक तरफ भारत -चीन युद्ध के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने मान सरोवर झील का पवित्र भाग तथा तिब्बत को चीन को सौंप दिया, तो दूसरी तरफ जिन्ना की मांग पर पाकिस्तान का निर्माण हो गया ।

सन् १९४८ में कबायलियों के आवरण में पाकिस्तान सेना कश्मीर घाटी में घुस आयी थी और उसने कुछ समय के लिये श्रीनगर पर कब्जा कर लिया था । पुनः सन् १९६५ में इसी प्रकार घुसपैठ करके युद्ध को आमंत्रित किया गया था । दोनों बार पाकिस्तान ने घुसपैठियों से अपना रिश्ता नकारा था, किन्तु जब भारतीय सेना ने उन घुसपैठियों के विरूद्ध कार्यवाही शुरू की, तो पाकिस्तानी सेना मैदान में कूद पड़ी । जिसके फलस्वरूप भारत को दो युद्धों को लड़ना पड़ा ।

माननीय अटल जी की सरकार को काम चलाऊ तथा कमजोर मानते हुये एक तरफ पाकिस्तान ने लाहौर-बस-यात्रा प्रारम्भ कर शतरंजी चाल फेंकी, तो दूसरी तरफ कारगिल में घुसपैठिये भेजे । लेकिन शायद वे भूल गये कि-

"हम छुई -मुई के वृक्ष नहीं, जो छूने से ही मुरझा जायें,
हम उस वटवृक्ष की शाखा हैं, जो तड़ित आघात भी सह जायें।"

यह स्पष्ट है कि कारगिल - द्रास क्षेत्र निर्जन है, अति दुर्गम है, पूरी तरह हिमाच्छादित है । घुसपैठ के लिये इसका इस्तेमाल किया जा सकता है यह सोचना कठिन था । इसलिये भारत थोड़ा असावधान रहा है।

राकेटों और मिसाइलों से लैस २००-२५० घुसपैठियों ने बटालिक के शिखर पर मोर्चाबन्दी की, ८०-१०० घुसपैठिये कारगिल के निकट जम गये, २००-२५० का झुण्ड मशकोह पर डट गया तथा ६०-७० घुसपैठियों ने द्रास के निकट बंकर खोद लिये । नियंत्रण रेखा पर यह अतिक्रमण तो अप्रैल माह में ही प्रारम्भ हो गया था, किन्तु ५ मई को पहली बार भारतीय सेना के गश्ती दल की निगाहें काले कोट पहने कुछ घुसपैठियों पर पड़ गई । सूचना पाते ही भारतीय सेना इस अतिक्रमण को समाप्त करने के लिए सक्रिय हो गई । इसे घुसपैठ की सामान्य घटना समझकर जब भारतीय सेना की एक टुकड़ी ६

मई को वहाँ पहुंची, तो इस ऊंची पहाड़ियों से धुंआधार गोलाबारी शुरू हो गयी और तब यह अहसास हुआ कि यह मुकाबला मामूली घुसपैठियों से नहीं, बल्कि आधुनिकतम शस्त्रों से लैस प्रशिक्षित मुजाहिदीनों तथा पाकिस्तानी सैनिकों से है, किन्तु भारतीय सेना ने हिम्मत नहीं हारी । भारत सरकार के वर्तमान नेतृत्व ने भी नेहरू जी का पलायनवादी रास्ता नहीं अपनाया ।

स्वाहा, सधा तथा पंचशील का जाप करने वाला भारत अपनी रक्षा करने में पूर्णतयः सक्षम है । यहां के जवानों के रक्त के कण - कण में संचार है कि -

"जवानों अब उठो इस देश का नक्शा बदल डालो,
तमस की चीर कर छाती निशा को सुबह में बदलो ।
नये इतिहास की रचना नया ही खून करता है,
नये विश्वास - चेतन को नया मजमून धरता है।"

अपनी मातृभूमि को माँ से भी बड़ा दर्जा देने वाले भारतीय रणबांकुरों ने अपनी जान की परवाह न करते हुये उन पाकिस्तानी घुसपैठियों को छठी का दूध याद करा दिया । भारत माता के अनेक सपूतों ने अपनी जिन्दगी इस अग्निकुण्ड में होम कर दी और इस देश की युवा पीढ़ी को एक नया आदर्श प्रस्तुत कर गये--।

अपने पीछे छोड़ गये अपने बेटों का इन्तजार करती, रोती - बिलखती माँओं को, सूने घरों में अपने पति के लौटने का इन्तजार करती नवविवाहित पत्नियों को, हाथों में राखी पकड़े भाइयों की सूनी कलाइयों का इन्तजार करती अपनी बहनों को तथा उन अबोध शिशुओं को जिन्हें अभी पिता शब्द का अर्थ भी नहीं पता। इसी के साथ - साथ एक ऐसी अमिट कहानी छोड़ गये जिसे याद कर हमारी आँखें अपने आप छलछला जाती हैं और श्रद्धा से हमारा शीश उनके आगे नतमस्तक हो जाता है ---------- ।

"प्राण लगाकर जिन वीरों ने दुश्मन को ललकारा है,
उनके बलिदानों के आगे झुकता शीश हमारा है ।"

राहुल वर्मा
अष्टम 'ख'

पड़ोसी देशो से कैसे हो सम्बन्ध

हमारी सहिष्णुता, सहनशीलता तथा विनम्रता को कायरता समझने वाले पड़ोसी देश हमें दबाने के प्रयासों में लगे है । उन्हें हमारे साहसपूर्ण, पूरी धीरता तथा गम्भीरता के साथ परमाणु शक्ति के विस्फोट से आघात लगना स्वाभाविक है । अहिंसा और शान्ति का पुजारी देश हजारों वर्षों से आक्रमणों को झेलता आ रहा है। इसकी विलक्षणता के कारण इसकी हस्ती मिटाने आये स्वयं धूल धूसरित हो गये । भारत की सनातन संस्कृति को अपसंस्कृत होने से आध्यात्मिक तथा सत्यपरखनिष्ठा ने सदैव हमारी रक्षा की । पड़ोसी देशों के ही कारण भारत को तीन घोषित तथा लगातार चल रहे अघोषित युद्ध लड़ने पड़ रहे हैं । पड़ोसी देशों में नेपाल, वर्मा, श्रीलंका आदि से तो भारत के सम्बन्ध मित्रवत् हैं परन्तु कटुता की शुरूआत तो पड़ोसी इस्लामी राष्ट्रों तथा चीन से होती है।

पाकिस्तान जिसने साधारण क्षमता की मिसाइल 'गौरी' के प्रक्षेपण से भारत को डराने की कुचेष्टा की जिसका प्रत्युत्तर भारत ने उचित समय पर सफल आणविक परीक्षण से दिया । पड़ोसी इस्लामी देशों की धर्मान्धता ही अशान्ति का पर्याय बन चुकी है । सभ्य मानव जीवन की सर्वमान्य सीमाओं का उल्लघंन कर खून की होली खेलना, भारत का मूकदर्शक बन बैठे देखते रहना उचित नहीं था और इन्हीं कारणों से ११ तथा १३ मई को पोखरन की रेत ने इतिहास रच दिया । विस्फोटों से गुंजित ध्वनि ने विश्व के चप्पे-चप्पे को कंपित कर दिया । पाकिस्तान, जो कि इस्लामी राष्ट्रों की सहायता से तथा आई. एस. आई. के माध्यम से कश्मीर में छाया युद्ध कर रहा है । पाकिस्तान और भारत के मध्य युद्ध केवल कश्मीर पर ही नहीं अपितु पाकिस्तान की असहिष्णुता, इस्लामी धर्मान्धता और भारत की सहिष्णुता तथा पंथ निरपेक्षता का है । कश्मीर का पाकिस्तान में विलय करवाने के लिये उग्रवादी प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं तो क्या राम और कृष्ण के वंशज अपनी प्रभुसत्ता का अपहरण देखते रहेंगे ? पौरुषता क्या नपुंसकता में परिवर्तित हो जायेगी ? नहीं, इसी पौरुषता का परिणाम है पूर्व के दो पाकिस्तानी युद्धों की विजय ।

स्वतंत्रता के पश्चात तीन युद्धों के कटु सत्य तथा परमाणु परीक्षणों के बाद चली आ रही राजनैतिक अस्थिरता से निपटने तथा कश्मीर के आतंकवाद की समस्या का समाधान करने का अवसर भारत को मिला है । पिछले दशक में पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद के कारण लगभग १० हजार से भी अधिक लोग मारे गये । मुस्लिम समाज का सामाजिक तथा राजनैतिक संगठन मज़हब पर आधारित है । अतः विपत्तियों से छुटकारा पाने के लिय कट्टरवादी मज़हब को त्यागना होगा । भारत, जो आजादी के पश्चात भी आतंकवाद का शिकार रहा है और इन्ही उग्रवादी नीतियों को रोकने के लिये प्रोएक्टिव कार्यनीति का निर्धारण किया गया तो अमेरिका ने इसे मूर्खतापूर्ण तथा अनुत्तरदायी नीति बताया भारत तो मण्डलाकार समाज हितकारी चिन्तन प्रधान देश है । वह सम्पूर्ण विश्व से मित्रवत सम्बन्ध रखने का इच्छुक है परन्तु भारतीय सम्बन्धों मे मित्रता से अधिक ऊँचा स्थान आत्म सम्मान तथा स्वाभिमान का

है । पाकिस्तान एवं भारत जो कश्मीर पर अवव्यय कर रहे हैं उससे बचने के लिये दोनो को वार्ता करनी चाहिये तथा व्यापार को भी बढ़ाकर सम्बन्ध सुधारने चाहिए। इन्हीं सम्बन्धों को सुधारने के प्रयास में प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की लाहौर यात्रा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यदि अब भी पाकिस्तान उचित निर्णय लेने में चूक गया तो तूफान में फंसे तिनके तथा सागर में विलीन बूँद के समान वह अपना अस्तित्व खोजता रहेगा । परमाणु परीक्षणों की आवश्यकता इसलिये भी थी कि रामचरित मानस में भी कहा गया है कि -

''भय बिनु होय न प्रीत''

अफगानिस्तान, जो पाकिस्तान की सहायता के बल पर एक कट्टरपंथी तथा दाहक अंचल है, यह आतंकवाद की शरण स्थली तथा पोषक भूमि है, इसे भी सम्बन्ध सुधारने होंगे ।

तिब्बत का बहुत बड़ा भूभाग जो चीन के कब्जे में है उसका सम्बन्ध भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता से रहा है। मानसरोवर जो अभिन्न अंग है, तथा मैकमोहन रेख जिसके सहमति पत्र पर तीनों देशों के प्रधानमंत्रियों के हस्ताक्षर थे, उसे चीन ने १९६२ ई० में ही ''हिन्दी चीनी भाई-भाई'' का नारा लगाते हुए कुटिलता से प्राप्त कर लिया था । १९६२ में चीन ने अचानक आक्रमण कर ८६००० वर्ग कि०मी० भूमि पर कब्जा कर लिया तथा उसे अपनी बताकर यह कहता है कि भारत ने उसकी भूमि हड़पी तथा पहले आक्रमण किया था । १९६२ में चीन की सेना के अधिकारियों ने तिब्बत तथा भारत के समीपवर्ती गाँववासियों से दोस्ती का हाथ बढ़ाकर अनेक प्रलोभन देकर गाइड के रूप में इस्तेमाल किया । १९८८ में राजीव गांधी ने चीन की ऐतिहासिक यात्रा की थी, तब से वह फिर से सम्बन्ध सुधारने की आड़ में युद्ध की लगातार तैयारियां कर रहा है । आंकड़ों के आधार पर चीन ने पिछले वर्ष से ही अपनी ११ हवाई पट्टियों की लम्बाई बढ़ा ली है वह पड़ोसी देश वर्मा की सेना को आधुनिकतम हथियारों से लैस कर रहा है, तथा चीन की नौसेना के जहाज वर्मा के पश्चिमी तट तथा काको द्वीप को जल सेना का अड्डा बना रहे है जो कि अण्डमान निकोबार से मात्र ४० कि० मी० दूर है । अगर चीन भारत को अपना मित्र बताता है तो रूस और वर्मा की तरह सीमा विवादों को वह भारत के साथ क्यों नहीं सुलझाता तिब्बत में तैनात मध्यम दूरी की मिसाइलें जो भारत को निशाना बनाए हैं उन्हें क्यों नहीं हटाता और यदि चीन, भारत को शत्रु मानकर युद्ध की तैयारियां कर रहा है तो उसे यह बताना भी आवश्यक है कि भारत की नौसेना के लड़ाकू विमान तथा जहाजी बेड़ा, वायु सेना के लड़ाकू विमान तथा थल सेना के जवान जो ऊँची चट्टानों, घने जंगलों तथा बर्फ से ढ़की पहाड़ियों पर तैनात रहते हैं तथा भारत अब परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र भी बन गया है । प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के शब्दों में -

''आँधी लघु-लघु दीप बुझाती पर धधकाती है दावानल ।
कोटि-कोटि हृदयों की ज्वाला, कौन बुझाएगा किसमें बल।।

भारत के रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडींस ने चीन को अपना शत्रु बताकर बंद कमरों मे होने वाली चर्चाओं को देशवासियों के सामने रख दिया । भारत जो कि विशालतम लोकतंत्र की गरिमा को संयोये

विभिन्न धर्म तथा जातियेां का समुच्चय संस्कृतिधारक राष्ट्र हैं । पड़ोसी देशों में चीन, पाकिस्तान तथा अन्य इस्लामी राष्ट्र उग्रवाद से उसी प्रकार मुक्त है जिस प्रकार चोरों के गांव चोरी से मुक्त होते हैं । आज आतंकवाद मुठ्ठी भर बिच्छुओं के साथ भारत पर हावी है । जिस दिन नवाज शरीफ प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का स्वागत कर रहे थे उसी दिन कश्मीर घाटी से गोलियों की गूंज तथा मरने वालों की कराह सुनाई दे रही थी । आतंकवाद का पौधा, जिसने अपने पोषण के लिये भारत में भी अपनी जड़ें फैलानी प्रारम्भ कर दीं हैं । चीन पाकिस्तान को लुके-छिपे परमाणु शक्ति सम्पन्न कर रहा है । भारत की चीन तथा पाकिस्तान के साथ मित्रता तो आवश्यक है परन्तु पड़ोसी देशों द्वारा हड़पी भूमि और भारत की घायल भौगोलिक संप्रभुता का समाधान अपरिहार्य है पड़ोसी देश को यह याद रखना चाहिए –

"चाहे जितनी कोशिश कर लो वीरत्व रंग दिखलाएगा ।
नापाक इरादों का परचम लहरा न कभी फिर पाएगा ।
हमसे टकराने का हौसलागर किसी ने बांधा तो इतिहास
गवाह यह धरा गवाह वह मिट्टी में मिल जायएगा ।"

दुश्मन देश के द्वार पर बारूद बिछाए, उस देश के पहरेदार सुसुप्त पड़े हों तथा बाद में दोस्ती की भीख मांगने को राष्ट्रीय सुरक्षा की अक्षुण्णता और अखण्डता का बीज मेत्र बताते घूमें । हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि बातचीत के द्वारा समस्याओं का समाधान भी हो जाए, भारत भूमि का अधूरापन भी भर जाए, पड़ोसी देश मित्र के समान हो जाए लेकिन शत्रुता करने का दुःसाहस न कर पाए तथा भारत के अस्तित्व को चुनौती देने का साहस तथा उसकी प्रभुसत्ता तथा अखण्डता को खण्डित करने के लिए षड़यन्त्र न रच सके । यदि पड़ोसी देशों का मित्रवत् व्यवहार पसन्द नहीं है तो फिर –

"कल तक था जो चक्र सुदर्शन, वही आज अणुबम भारी ।
ओ मदान्ध हो सावधान, यह विश्व विजय की तैयारी
सभी आततायी दुनियाँ को एकमात्र सन्देश यही
शान्ति पाठ हो चुका बहुत अब बल प्रयोग की बारी ।।

आलोक चतुर्वेदी
दशम 'क'

पाक तुझे धिक्कार है

यह साधारण घुसपैठ नहीं, हिन्दुत्व को ललकार है ।
सत्य और अहिंसा को लगी तगड़ी फटकार है ।
पाक को चढ़ा धोखेबाजी का बुखार है ।
अटल की नीति पर शरीफ का प्रहार है ।
यह कैसा अनाचार है ? यह कैसा दुराचार है ?

एक ओर बस यात्रा प्रेमपूर्ण व्यवहार है ।
दूसरी ओर कारगिल का दुःखदायी समाचार है ।
मित्रता के पुजारियों को पाक की दुत्कार है ।
साम्राज्यवादी नीति का खुला प्रचार प्रसार है ।
यह कैसा भ्रष्टाचार है ? यह कैसा अत्याचार है ?

भाई, भाई की पीठ में भोंक रहा कटार है ।
लूटने को भाई को भाई बेकरार है ।
पाक, काश्मीर पर जता रहा नाजायज अधिकार है ।
पाक, तुझे मिला यह कैसा संस्कार है ।
यह कैसा सदाचार है ? यह कैसा शिष्टाचार है ।

पाक कोई राष्ट्र नहीं आतंकियों की सभागार है ।
जहाँ आतंकियों को मिलता सैनिकों सा सत्कार है ।
शासनतंत्र नाममात्र का, लादेन की सरकार है ।
पाक से बड़ा भी क्या कोई मक्कार है ।
पाक तुझे धिक्कार है, तुझे धिक्कार है ।

पाकिस्तानी रावणों ने मचाया कारगिल में हाहाकार है ।
किन्तु, फिर भी भारतीय रामों का वर्चस्व बरकरार है ।
चारों ओर गूँज उठी बोफोर्सों की मार है ।
अब तो केवल लाहौर पर चढ़ाई का इंतजार है ।
पाक की नीति पर यहीं सही प्रहार है, यही सही प्रहार है ।

प्रशान्त त्रिवेदी
दशम -'क'

मॉं धरा ने सीने से लगा लिया शहीद को तो
रोते-रोते मौत भी प्रशस्ति बाँचती रही

(महावीर चक्र) **मेजर राजेश अधिकारी–29 वर्ष** (18 ग्रेनेडियर्स)

दस सदस्यीय तीन टीमों में से एक का नेतृत्व कर रहे राजेश सोलह हजार फुट पर एक बंकर कब्जाने की कोशिश में थे। वे शहीद हो गये लेकिन उस बंकर पर कब्जा कर लिया गया।

(महावीर चक्र) **मेजर विवेक गुप्ता–29 वर्ष** (राजपूताना रायफल्स)

दूसरे कम्पनी कमांडरों की भांति गुप्ता भी घुसपैठियों की मोर्चेबन्दी के खिलाफ अभियान की अगुवाई कर रहे थे। शहीद होने से पूर्व उन्होनें दो बंकर हथिया लिये।

नायक राजकुमार पूनिया – 23 वर्ष (18 ग्रेनेडियर्स)

पूनिया घुसपैठियों को रोकने की कार्यवाही में शामिल थे, वे आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें गोली लगी, लेकिन मरने से पहले एक हथगोला फेंककर बरस्ती गोलियों के ठिकाने को नष्ट कर दिया।

सिपाही जसविन्दर सिंह – 22 वर्ष (8 सिख रेजीमेन्ट)

श्रीनगर लेह राजमार्ग के ऊपर टाइगर हिल को वापस लेने का जिम्मा जिस दस्ते को सौंपा गया उसमें शामिल जसविन्दर ने गोली लगने से पहले तीन घुसपैठियों को मार गिराया।

लांस नायक भगवान सिंह (27 राजपूत रेजीमेन्ट)

27 राजपूत रेजीमेन्ट के लांस नायक भगवान सिंह सियाचीन ग्लेशियर में 28 जून को आपरेशन मेघदूत के दौरान पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ने की कार्यवाही में शहीद हो गयें।

स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा

स्क्वाड्रन लीडर आहूजा के साथ पाकिस्तानियों का बर्बर व्यवहार अविस्मरणीय रहेगा। मिग-21 विमान उड़ाते हुये वे पाकिस्तान की स्ट्रिंगर मिसाइल का निशाना बने। कूदने पर उनका शरीर गोलियों से छलनी कर दिया गया।

(महावीर चक्र) मेजर पद्मापणि आचार्य (२ राजपूताना रायफल्स)

मेजर पद्मापणि तोतोलिंग पर कब्जा करने के लिये आगे बढ़ते हुये पाकिस्तानियों के शवों के चिथडे उड़ा रहे थे। अचानक पाकिस्तानी तोप का गोला उनके पास आकर गिरा और आठ रणबांकुरो के साथ मेजर आचार्य शहीद हुये।

(परमवीर चक्र) ले0 मनोज कुमार पाण्डेय

परमवीर चक्र से सम्मानित ले0 मनोज कुमार पाण्डेय अपने साथियों के साथ तीन बंकरो को नष्ट करते हुये चौथे बंकर में अकेले घुसे और वहाँ मौजूद ग्यारह घुसपैठियों को गोलियों से भून डाला। आगे बढ़ने पर एक गोली उनके भेजे को भेद गयी और वे शहीद हो गये।

(परमवीर चक्र) ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव

अपने साथियो के शहीद होने के पश्चात अपने टूटे हुये हाथ को अपनी बेल्ट से सीने पर बांधकर ग्रेनेड से पाकिस्तानी बंकर को नष्ट किया। पन्द्राह गोलियाँ लगने के बाद भी दुश्मन को मारकर लुढ़कता हुआ नीचे आया।

मेजर मनोज तलवार (महार रेजीमेन्ट)

दृढसंकल्प का परिचय देते हुये मेजर मनोज तलवार ने सियाचिन रवाना होने से पूर्व माँ से दुश्मनों के छक्के छुडाकर लौटने की बात कही थी। और अपनी जान की कुर्बानी देकर ऐसा कर दिखाया। मेजर तलवार सियाचिन में एक गश्तीदल का नेतृत्व कर रहे थे और उन्होनें गजब की वीरता ,से दुश्मन का सामना किया।

(वीर चक्र) कैप्टन अमोल कालिया - 25 वर्ष

(12 जम्मू एण्ड कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री)

कालिया और उनका दस्ता घुसपैठियों की भीषण गोलाबारी से बचने की जद्दोजेहद में लगा था। सहसा उन्होंने एक मशीनगन उठाई और गोली लगने से पहले दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिये।

(वीर चक्र) कैप्टन हनीफुद्दीन - 24 वर्ष (11,राजपूताना राफल्स)

तुर्तक संबसेक्टर में एक अत्यधिक संवेदनशील मोर्चे पर पाकिस्तान की ओर से जबरदस्त गोलीबारी हो रही थी। एक गोली कैप्टन हनीफ के सीने को चीरती हुयी निकल गयी। अपने साथियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर मशीनगन से दुश्मन की गोलियों का सामना करते हुये शहीद हो गये ।

सिपाही अमरदीप सिंह - 24 वर्ष (१६ ग्रेनेडियर्स)

गश्ती दल में शामिल सिपाही अमरदीप सिंह और उनका एक साथी शहीद जवानों का शव लाने के प्रयास में खुद शहीद हो गया।

डिप्टी कमांडेंट सुखवीर सिंह यादव

हरियाणा के रेवाड़ी जिले के धमलावास गाँव के जवान सुखवीर सिंह यादव भी दुश्मन से लोहा लेते हुये शहीद हुये। अपने देश पर धोखे से किये दुश्मन के वार का जब सुखवीर मुँहतोड जवाब दे रहे थे तभी एक गोली उनके सीने को भेद गयी।

(वीर चक्र) मेजर सवनिन मरियप्पन

मेजर सवनिन मरियप्पन जो बिहार रेजीमेन्ट से सम्बद्ध थे, 29 मई को बटालिक की पहाडियों पर भीषण विपरीत मौसम में घुसपैठियों को खदेडते हुये शहीद हुये।

हमें गर्व है अपने अमर शहीदों पर

हवलदार जय प्रकाश सिंह

सिपाही सुशील आईमा

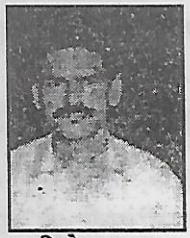
विनोद कुमार

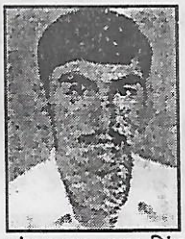
लांसनायक श्याम सिंह

लांसनायक आजाद सिंह

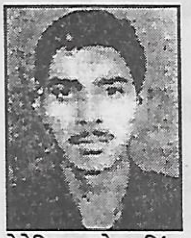
ग्रेनेडियर सुरेन्द्र सिंह

ग्रेनेडियर मनोहर लाल

सिपाही धर्मवीर

सूबेदार भंवरलाल

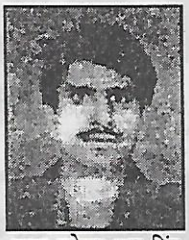
नायब सूबेदार लाल सिंह

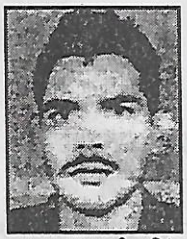
हवलदार राजबीर सिंह

सिपाही सुरिन्द्र सिंह

ग्रेनेडियर संजय सिंह

ग्रेनेडियर संजय सिंह

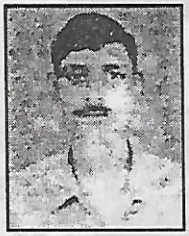
नायक ऋषिपाल त्यागी

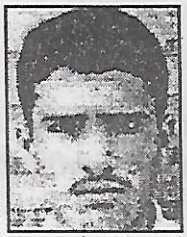
ग्रनेडियर अमरदीप

लांस नायक राजेश

परमिन्द सिंह

सुबेदार सुमेर सिंह

नायक हवलदार लेखराम

सिपाही बार्बर हरप्रसाद

मेजर संदीप कुमार

कैप्टन संजीव दहिया

सिपाही रविन्द्र सिंह

लांस नायक जसबीर सिंह

कैप्टन अमित वर्मा

रणबांकुरा ले. विजयंत थापर

रइफलमैन बच्चन सिंह

रइफलमैन जसवीर सिंह

ले.कर्नल आर. विश्वनाथ

कैप्टन आदित्य मिश्र

नायक चमन सिंह

नायक सुरेन्द्र सिंह

ले. कर्नल एन.वी.राघवन

मेजर विवेक गुप्ता

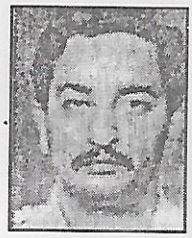

स्वा. ली. अजय आहूजा

कैप्टन पी.पी. विक्रम

राईफलमैन प्रवेश कुमार

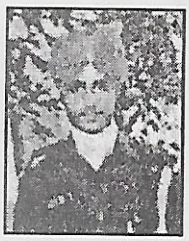

सिपाही मानजीत सिंह

सिपाही गुलाब सिंह.

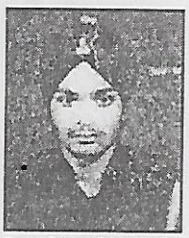

सिपाही संजीव कुमार

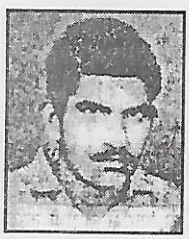

नायक सत्यपाल

अभ्यर्चन

अर्चन है उस तपस्वी का
जिसके जीवन का प्रत्येक
क्षण माँ सरस्वती
की सेवा में ही
व्यतीत
हुआ।

तप ही जिनके जीवन का अभिप्रेत रहा

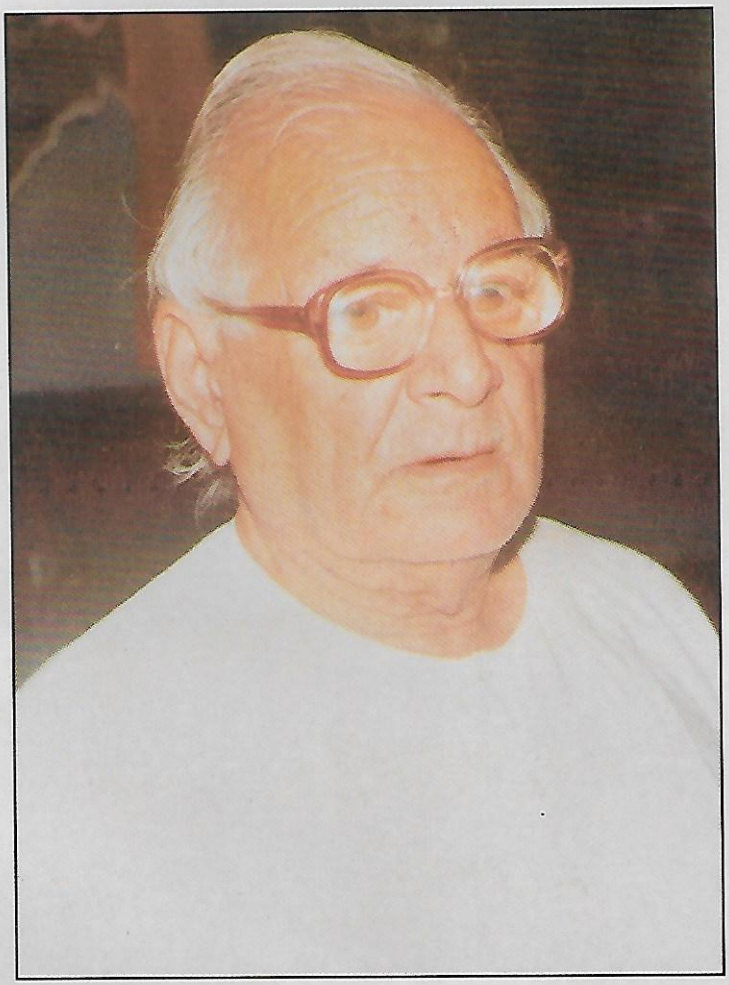

श्रद्धेय पं० शिवशरण शर्मा

तुम्हारा कर्म पथ ही हमारा पाथेय है

'पं० शिवशरण शर्मा नहीं रहे' - इस प्रचलित वाक्य को जितनी बार सोचा उतने ही भाव मन को मथने लगे । ऐसा लगा कि चाणक्य की परम्परा का एक और दीप अंधेरे को चुनौती देता हुआ अपनी अन्तिम किरण को तिरोहित कर चला । दधीचि - कुल का एक और उत्तराधिकारी इस प्रपंच-मण्डल को त्याग अंतरिक्ष में विलीन हो गया । आचार्य - वंश का अवत से अपनी शान और गुमान को अक्षुण बनाये हुए इस दुनिया वालों को अलविदा कह गया ।

निष्ठा मूर्ति : आज से ठीक पांच वर्ष और छः दिन पूर्व इस परिपाटी का एक और आचार्य अपना दायित्व तुमको सौंप कर अपनी थकान मिटाने के लिए धीरे से उठ गया था । भोली दुनिया उस आचार्य को बैरिस्टर ही समझती रही, किन्तु .... । बहुत थोड़े विवेकी ऐसे थे जो उसके द्रष्टा आचार्यत्व को समझते थे। उन पहचानकर्ताओं में से एक तुम थे । सखा, सहोदर, परामर्शदाता के साथ ही अनुशासित अनुयायी भी ।

विवेकी : विद्या और विवेक के संगम, कर्त्तव्य और चिन्तन के समन्वय, ज्ञान और भक्ति के समाहार, दृढ़ता और शील के स्वरूप, संयम और सदाचार की परिभाषा आदि-आदि । हम लेखन - व्यापारियों द्वारा चाहें जितने सद्गुणों का अम्बार लगा दिया जाये तुम्हारी कल्पना - मूर्ति को गढ़ने के लिए, किन्तु सत्य यही है कि तुम केवल पं० शिवशरण शर्मा थे-अपने में पूर्ण और सत्य, आडम्बर-मुक्त और तप संयुक्त ।

तपस्वी : वाणी तथा कर्म का ऐसा यौगिक थे तुम कि बहुतों ने तुम्हें, अपनी - अपनी कसौटी पर कसने की असफल चेष्टा की । लेकिन व्यर्थ ! तुम्हारे एक से अधिक खण्ड हो ही नहीं सकते । सचमुच आज की दुनिया के तुम अजूबा थे । संसार वालों की ओछी मुस्कानें, सस्ती बातें और हल्की दलीलें तुमको न तो अपने मार्ग से विचलित कर सकती थी और न ही तुम उनकी उपेक्षा करते थे । और कमाल यह कि तुम्हारा आदर्श केवल तुम तक ही सीमित न रहकर तुम्हारी धर्म-पत्नी (माता जी) तथा तुम्हारे पुत्र बालेश्वर को भी गढ़ गया ।

हम जैसे जाने कितने उनके प्रशंसक अनुयायी उनसे जो कुछ भी पा सके, अब उसको संवारने की बारी है । ऐसा लगता है कि वे अंतरिक्ष से निर्निमेष हमको आगाह कर रहे हैं -

" हार न मानना, पथ के बीच में न बैठ जाना।"

द्रष्टा ! आश्वस्त होने के पहले हम कमजोर अनुयायियों को शक्ति दो कि तुम्हारी - परम्परा की यज्ञ - ज्वाला अपनी जीवन - समिधा से तब तक बुझने न दें, जब तक उसका एक भी क्षण अपने अस्तित्व में है ।

ओमशंकर त्रिपाठी
प्रधानाचार्य

मेरे सगे अग्रज-तुल्य शर्मा जी

अपने स्वंय के अनुभव के आधार पर ही मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जीवन में जो कुछ भी होता है वह एक दैवी विधान के अनुसार ही होता है। श्री शिवशरण शर्मा से मेरा सम्पर्क भी ऐसे ही एक दैवी विधान के अनुसार हुआ। उनका जन्म १९०९ के अन्तिम मास दिसम्बर में हुआ था और मेरा १९११ के जून मास में। परन्तु इसी विधान के अनुसार मेरा जन्म २ जून १९१० लिखा गया और मैं २ जून १९७० को सेवा-निवृत हुआ, जबकि शर्मा जी १९०९ के अन्त में अथवा १९७० के प्रारम्भ में रिटायर हुये।

मेरा परिचय श्री शर्माजी से श्री विश्वेश्वर दयाल शुक्ल के (जो मेरे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के टीचर्स ट्रेनिग कालिज के सहपाठी तथा हरदोई के राजा रूक्यांगद इण्टर कालिज के साथी थे।) माध्यम से हुआ। शुक्ला जी हिन्दी और अंग्रजी के अच्छे वक्ता और लेखक थे और उनका मकान कानपुर में विद्यालय के निकट ही था। शर्मा जी का मकान भी थोडा और आगे आजाद नगर मे था इस प्रकार शर्माजी मकान 'ऋतम्भरा' में शुक्ला जी के साथ आना-जाना होता रहा। शर्माजी हमारे विद्यालय के उपाध्यक्ष भी थे। जब तब विद्यालय और छात्रावास का निरीक्षण करने भी आते । मेरा परिचय तत्कालीन कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री राधाकृष्ण अग्रवाल से भी था। वे मेरे विद्यालय सनातन धर्म इण्टर कालेज हरदोई के , जिसका मैं ७ वर्ष प्रधानाचार्य रहा था, अध्यक्ष भी रह चुके थे और मेरे ऊपर उनकी कृपा थी। मैने उन्हें तथा ठा० जयदेव सिंह, सेवानिवृत प्राचार्य युवराज दत्त डिग्री कालेज लखीमपुर-खीरी, जिनके मार्गदर्शन में मै तीन वर्ष युवराज दत्त इण्टर कालेज ओयल में अंग्रेजी का प्रवक्ता रह चुका था, अपने इस नये विद्यालय का,अलग अलग अवसरों पर निरक्षण करने बुलाया था। उन दोनों महानुभावों ने विद्यालय की निरिक्षण पुस्तिक में इस विद्यालय की, जो अब ८वीं कक्षा तक मान्यता प्राप्त कर चुका था, प्रशंसा में जो शव्द लिखे थें उनका प्रभाव भी शर्माजी पर पड़ा होगा । इस बीच शुक्ला तो राम के प्यारे हो गये थे परन्तु शर्माजी से मिलना चलता रहा। १९९० में हम लोगों की पेंशन के नवीकरण एवं पुनर्निधारण सम्बन्धी एक राजाज्ञा हुई, परन्तु शिक्षाविभाग ने उसका गलत अर्थ लगाकर हमारी पेंशन को जितना होना चाहिये था उसके लगभग आधा ही रखा। उस समय भाजपा सरकार ही प्रदेश में थी। शर्माजी के साथ जो अन्याय हो रहा था उसका परिहार तो एक नई ही राजाज्ञाँ निकालकर कर दिया गया। परन्तु माध्यमिक अध्ययापकों सम्बन्धी राजाज्ञा में कोई परिर्वतन नहीं हुआ। मेरी गणना माध्यिमिक अध्यापकों मे होती थी । अतः शर्माजी ने मुझे परामर्श दिया कि मैं अपने अधिकार के लिये हाईकोर्ट में रिट लगाऊँ । यद्यपि वे एल०एल०बी के छात्र कभी नहीं रहें, परन्तु उनमें प्रत्येक विषय का ज्ञान, जबभी आवश्यक होता, उनको प्राप्त करने की अपूर्व क्षमता थी। उन्होने गणित और अर्थशास्त्र में एम०ए० कर रखा था और वे दोनों विषय समाधिकार पढ़ाते भी थे। परन्तु उनकी गति प्रत्येक विषय में थी। अपनी बड़ी पतोहू को उन्होने हिन्दी में प्रथम श्रेणी में एम०ए० प्राईवेट पास कराया स्वंय पाठ्य पुस्तकों का अध्ध्यन कर तथा अपनी पौत्री को अंग्रेजी में एम०ए० प्रथम श्रेणी में पास कराया। वह अंग्रेजी (एम०ए०) महाविद्यालय में नाम लिखाकर पढ़ी। परन्तु शर्मा जी उसकी पाठ्य पुस्तकें स्वंय पढ़कर उसे घर पर भी

पाठ्य पुस्तकें स्वंय पढ़कर उसे घर पर भी पढ़ाते थे। उसके बाद उन्होने अपनी उसी पौत्री को एल०एल०बी० कराया तथा स्वंय उसकी पाठ्य पुस्तकें पढ़कर उसका मार्गदर्शन किया तथा उसे एडवोकेट बनाया, यद्यपि गृहस्थों के झंझटों तथा बच्चों के पालन -पोषण के कारण वह न एल०आई०सी० की सर्विस कर पाई, न लॉ की प्रेक्टिस ही कर पाई। शर्माजी में विलछण प्रतिभा थी। उन्होने अपने विधि ज्ञान के आधार पर ही मेरी रिट तैयार की जिसको मेरे वकील ने लगभग वैसे ही स्वीकार कर लिया। उनका कानूनी ज्ञान इतना विशद था कि वे अंग्रेजी में बोलते जाते थे और मै लिखता जाता था। उसी के आधार पर मेरे वकील अपने प्रत्युत्तर तैयार कर प्रतिपक्षी के तर्कों का उत्तर देने थे। मुझे वकील के साथ कभी इलाहाबाद पैरवी करने नही जाना पड़ा । चार वर्षो के पश्चात मेरी जीत हुई और वकील ने शर्माजी का पुराना शिष्य होने के कारण मैने जो भी पुरस्कार स्वरूप उन्हें दिया उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

यद्यपि शर्माजी विज्ञान के छात्र कभी नहीं रहे, परन्तु विज्ञान की प्रत्येक शाखा का उन्हें ज्ञान था कि उसके आधार पर वे उस विषय के प्रत्याशी का साक्षात्कार लेने में सफल हो जाते थे। न केवल वे अपने विषयें के पूर्ण ज्ञाता थे वरन अन्य विषय जो अनेक कालेज या मेरे कालेज में पढ़ाये जाते थे उनके भी सम्यक् ज्ञानके वे पारखी थे । वे ओ०री०सी० (आफीसर्व ट्रेनिग कोर) के ज्यों स्वतन्त्रा के पश्चात एन०सी० सी० (नेशनल कैडेट कोर) कहलाने लगा था, बड़े योग्य सदस्य थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ब्रिटिस सरकार उन्हें सेना में उच्चपद देने को तैयार थी, परन्तु उन्होनें अपने कालेज की सेवा को प्रमुखता देते हुये अस्वीकार कर दिया था । चाहे महाविद्यालय की प्रिसिपल शिप रही हो अथवा छात्रावास की वार्डन शिप, चाहे किसी विषय विभाग की अध्यक्षा हो अथवा ओ०टी० सी० के कैम्प की प्रबन्ध पटुता सभी में शर्माजी की अद्वितीयता प्रकट होती थी । कड़े प्रशासक होते हुये भी वे सर्वप्रिय थे छात्रों में, प्राध्यापकों में, एवं कर्मचारियों में भी।

शर्माजी की सबसे बडी विशेषता उनकी अर्थिक सुचिता थी। वे न किसी से कुछ (रिश्वत रूप में) लेते थे और न किसी को प्रसन्न करने हेतु देते थे। एक बार उनकी पेंशन कुछ कारणों से रूक गई। कई हजार रूपये की बात थी। जो कारण पेंशन रूकने के बताये गये उनका भी समुचित उत्तर दे दिया गया था। परन्तु उच्च शिक्षा निदेशक का लेखधिकारी कुछ प्रतिशत उत्क्रोच चाहता था। इन्होनें स्पष्टताः मना कर दिया कि वे एक पैसा भी रिश्वत नहीं देंगे, यद्यपि देर से उनका धन मिलने से उसकी ब्याज की हानी होती थी और लोगों ने जो लौकिक बातों में निपुण होते है कुछ देकर अपनी रूकी हुई पेशंन शर्माजी से पूर्व ही निकलवा ली थी परन्तु शर्माजी ने एक पैसा रिश्वत में देना ठीक नहीं समझा । कोषाधिकारी का क्लर्क जो पेंशन देता है कुछ प्रतिशत अवश्य पेंशनर से ले लेता है तभी पेंशन देता है, परन्तु शर्मा जी ने कभी एक पैसा भी नहीं दिया । उनके इस स्वभाव को जानकर कोषाधिकारी शर्माजी को अपने पास बिठाला लेता था और क्लर्क को बुलाकर फार्म अपने सामने भरवाकर क्लर्क को आदेश कर देता था कि शर्माजी की पेंशन उसके सामने ही देदे। मैने स्वयं ऐसा होते देखा।

मुझे तो शर्माजी वास्तव में अपना छोटा भाई ही मानते थे। चाहे मेरे काम से मेरेसाथ जारहें हों अथवा अपने काम से वे मुझे अपना या मेरा किराया नहीं देने देते थे । जिस दिन मै उनसे मिलने उनके घर किसी कारणवश नहीं पहुँच पाता था, तो वे स्वंय विद्यालय जिसके एक कमरे में मै रहता था आ जाते थे। वास्तव में उनके सानिध्य के कारण ही विद्यालय की रजत जयन्ती के पश्चात् भी मैं कानपुर में रहना पसन्द करता था। परन्तु उनके दिवंगत होने के पश्चात् आज कानपुर मेरे लिये सूना -सूना सा लगता है।

चन्द्रपाल सिंह
संस्थापक प्राचार्य,
पं० दीन दयाल उपाध्याय स० धर्म विद्यालय
कानपुर

वरदान

हे राम ! आज तुझसे वरदान माँगता हूँ
माँ भारती की तुझसे मैं शान माँगता हूँ
इस राष्ट्र का खोया स्वाभिमान माँगता हूँ
वीरों को जो जगा दे वो तान माँगता हूँ।

इस देश के गद्दरों का भाल माँगता हूँ
त्रिनेत्रधारी शिव की मुण्डमाल माँगता हूँ
मैं यम की भुजाएँ विशाल माँगता हूँ
दुनिया को जो झुका दे ऐसा लाल माँगता हूँ।

हे राम ! बोल कब तक वनवास तू धरेगा
कब तक रावणों का ये खेल यूँ चलेगा
क्या मेघनाथ यूँ ही इन्द्र को ठगेगा
बोल असुरराज कब तक साधुओं का खूँ पियेगा।

विकास दीक्षित
द्वादश (ख)

अनुशासन प्रिय पं० शिवशरण शर्मा

कहा जाता है कि अनुशासन ही किसी देश का जीवन होता है । जिस देश के नागरिक अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं वह देश सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जाता है । वास्तव में अनुशासन तथा कर्त्तव्य दोनों का अटूट गठबन्धन है । जब तक व्यक्ति को अपने सामाजिक व व्यक्तिगत दायित्व का बोध नहीं होता है तब तक वह मनमानी करता रहता है और जैसे ही उसे अपने दायित्व का बोध होता है वह अनुशासित स्वयं व सहज रूप में हो जाता है, तथा उसके अनुरूप कर्त्तव्य करने लगता है । यही रहस्य है जीवन का तथा कर्त्तव्य पालन का ।

स्वर्गीय शर्मा जी इन विचारों के साकार स्वरूप थे । उनको किसी ने अपने चार दशक से अधिक के सेवा काल में, कहीं भी बिलम्ब से पहुँचते नहीं देखा चाहे वह विद्यार्थियों की कक्षा हो, चाहे प्राचार्य का कार्यालय, अथवा किसी समिति की बैठक अथवा कोई अन्य स्थान जहां उनको जाना होता था । उनके पास स्वयं को कोई आने जाने का वाहन/साधन नहीं था, परन्तु क्या मजाल कि कभी घर से दूर किसी बैठक/मीटिंग चाहे वह ब्रहमावर्त सनातन धर्म महामण्डल की हो अथवा सुदूर पुखरायां के विद्यालय की प्रबन्ध समिति की (जिसके वे अध्यक्ष थे) । शिक्षक के रूप में विद्यार्थियों को कक्षा में तो देर से पहुँचने का प्रश्न ही नहीं उठ सका उनके जीवन में ।

जहाँ तक उनके कर्मठ, कर्त्तव्य परायण तथा स्वच्छ जीवन होने का रहस्य था वह भी अनुशासन प्रियता की देन कहा जा सकता है । जब व्यक्ति आत्मानुशासन को सहज रूप में अपना लेता है तब आलस्य, लोभ, मोह, द्वेष आदि विकारों पर अनजाने ही विजय पा लेता है । यही कारण था कि अपने शर्मा जी जब प्राचार्य थे तथा परीक्षाएं तीन-तीन पालियों में प्रातः सात बजे से सायं ६ बजे तक होती थी । तब परीक्षा प्रारम्भ के आधा घण्टा पूर्व ही अपनी कुर्सी पर पहुँच जाते थे तथा परीक्षा कार्य पूर्ण करा के ही जाते थे चाहे रात्रि के सात बजे या आठ ।

जीवन में उनको कभी लोभ नहीं सता सका, एन० सी० सी० के अधिकारी रहे, कालेज के लम्बे समय तक प्राचार्य रहे, विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों में रहे, कहीं कोई उनकी ईमानदारी पर अंगुली उठाने का साहस नहीं कर सकता है ।

मुझे तो उनके साथ आपातकाल में कई महीने (वर्ष १९७५) में कारागार में रहने का सौभाग्य रहा है । कभी भी वे आर्थिक/भौतिक दृष्टि से लाभ हानि की चर्चा नहीं करते थे । यदि चर्चा होती थी तो रामायण, गीता तथा महाभारत के प्रसंगों की । उनको कभी अपनी आर्थिक दृष्टि से असन्तुष्ट होते नहीं सुना ।

सारा जीवन उच्च विचार का आदर्श भी जीवन में उतार सकना, श्री शर्मा जी के रहन सहन में देखा जा सकता था । आत्मानुशासन के कारण ही यह सफल हो सकता है ।

श्री शर्मा जी किसी भी कार्य को पूर्ण मनोयोग से तथा उससे सम्बन्धित नियम, उपनियमों को अच्छीं तरह समझ करते थे, यही कारण था कि उनके प्रत्येक कार्य में पूर्णता रहती थी । शर्मा जी के जीवन में व्यक्तिगत हित कभी भी सामाजिक हित के ऊपर हावी नहीं हो सका । मैं समझता हूँ ये सभी गुण उनके जीवन में अनुशासन प्रिय होने के कारण ही सम्भव हो सके ।

अतः यह निष्कर्ष कि अनुशासन ही किसी देश का जीवन होता है । पूर्णतया व्यवहारिक एवं सत्य सिद्धान्त सिद्ध होता है । यदि अपने समाज में सामान्य व्यक्ति इस सिद्धान्त को अपना लेता है तो निश्चित ही भारत देश एक शक्तिशाली तथा वैभवशाली देश बन सकेगा ।

डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल

श्रद्धेय आदर्श प्राचार्य पं० शिवशरण जी शर्मा एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

परम आदरणीय शर्मा जी का मैं सदैव कृपापात्र रहा और मैं नहीं जानता कि वह मेरे किस गुण से प्रभावित हुए थे । वी० एस० एस० डी० कालेज में सन् १९४६ में मैं अंग्रेजी विभाग में प्रवक्ता बना । सन् १९४९ में उन्होंने प्राचार्य टंडन जी से कहकर एन० सी० सी० ट्रेनिंग के लिए मुझे भिजवाया मैंने उनसे कहा कि मैं तो खिलाड़ी भी नहीं हूँ पर उन्होने कहा कि मैं जानता हूँ कि तुम एक अच्छे आफीसर बनोगे । उस समय तक मैं शर्मा जी को भलीभांति समझता भी नहीं था । दूसरे महाविद्यालयों से एक पोस्ट के लिए दो - दो अभ्यर्थी थे पर वी० एस० एस० डी० कालेज से मैं ही अकेला था । तीन माह की एन० सी० सी० ट्रेनिंग के बाद लौटा तो उन्होंने मेरे सहयोगी श्री अम्बा प्रसाद जी गौड़ तथा मुझे बी० ए० प्रथम वर्ष का एक - एक सैन्य अध्ययन का प्रश्न-पत्र पढ़ाने को दे दिया । शर्मा जी उस समय सैन्य अध्ययन विभाग के अध्यक्ष थे ।

सन् १९६२ में उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अंग्रेजी के स्थान पर सैन्य अध्ययन को अपना विषय बनाऊँ उस समय तक सैन्य अध्ययन एक स्नातक स्तर का विषय था । मैंने उनसे कहा कि ऐसा करने से मैं स्नातकोत्तर विभाग के स्थान पर स्नातकी विभाग में हूँगा । उन्होंने मुझे सैन्य-अध्ययन विभाग के अध्यक्ष होने पर स्नातकोत्तर विभाग का ग्रेड दिलवाया क्योंकि मैं पिछले १५ वर्ष से अंग्रेजी की स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ा रहा था ।

१९७२ में उनके अथक प्रयास एवं सहयोग से मैंने सैन्य अध्ययन विभाग को स्नातकोत्तर विभाग बनाया । १९८४ में मैंने अवकाश प्राप्त किया । इस तरह मैं देखता हूँ कि शर्मा जी ने १९४९ से ही मेरे अध्यापक जीवन की दिश निर्दिष्ट कर दी थी ।

श्री शर्मा जी मेरे ही नहीं अन्य सहकर्मियों के प्रेरणा-स्रोत थे । एन० सी० सी० कैम्प में वह डा० गौड़ तथा मेरे साथ एक ही तम्बू में रहते थे तब उन्हें देखने और समझने का और अवसर मिला । एक बार उन्होंने मुझे कैडेट्स की मैस का खाना सदस्य नियुक्त किया । उसमें डी० ए० वी० कालेज के दिवंगत कैप्टन प्रधान भी थे, खाने के एलाउन्स में से रसोईघर के बड़े - बड़े बर्तनों के लिये कुछ रुपया बचाने का प्रस्ताव किया, मैंने उसका विरोध किया । मैंने कहा कि बच्चों के खाने में से कुछ नहीं बचाया जाना चाहिए । अन्त में अफसरों की मीटिंग में यह मामला पहुँचा, प्रधान साहब ने इस प्रस्ताव को रखा, आदरणीय शर्मा जी ने मुझे सहायता दी और वह प्रस्ताव रद्द हो गया ।

श्रद्धेय शर्मा जी की विशेषता थी कि जिस वस्तु को वह पसन्द करते थे, उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहते थे । रुपये - पैसे के मामले में पूरी तरह ईमानदार थे यही कारण

था कि मैं और वह इतने नजदीक आ सके थे । मुझे स्मरण नहीं आता है कि किसी गम्भीर मामले में उनके और मेरे मध्य कभी मतभेद आया होगा । उनका रूख सदैव स्पष्ट होता था कि उसमें गलतफहमी के अवसर ही नहीं होते थे । जब तक महाविद्यालय में रहे, उनके और मेरे सम्बन्ध मधुर रहे और जब उन्होंने अवकाश प्राप्त किया तो उनके पड़ोस में ही मुझे एक प्लाट मिला और मैंने उसे प्रावीडेण्ट - फण्ड मिलने पर बनवा भी लिया और इस तरह मुझे उनके पड़ोसी होने का गौरव भी मिला ।

आदरणीय शर्मा जी सिद्धान्त पर डटे रहने वाले व्यक्ति थे । जब मैंने सैन्य अध्ययन विभाग को स्नातकोत्तर बनाया, अध्ययन विभाग के लिए सैन्य अध्ययन के प्राध्यापक की आवश्यकता थी । एक व्यक्ति सब प्रकार से प्रवक्ता के पद के योग्य थे पर बी० एस० सी० में १ नम्बर से तृतीय श्रेणी पाई थी । मैं तो उनसे उन तृतीय श्रेणी वाले व्यक्ति का प्रस्ताव रखने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था पर एक दिन मैं साहस करके उनके पास गया और चकित रह गया जब उन्होंने स्वयं ही ''पाण्डेय जी, आप कब तक सुयोग्य प्राध्यापक की प्रतीक्षा करेंगे, अध्यापन कार्य चलने लगा है, आप उन्हीं सज्जन को बुला लीजिए''। इससे उनके प्राचार्य रहते मुझे अपने नये विभाग को चलाने में कटिनाई नहीं हुई। उनके बाद डा० गौड़ प्राचार्य बने, उनसे भी हमारे सम्बन्ध अच्छे ही रहे और सात सदस्यों का विभाग बनाकर मैंने अवकाश प्राप्त किया ।

उनकी इहलीला समाप्त होने के लगभग १५ दिन पहले मैं उनको देखने गया । मैं बात करने में उनकी बीमारी के कारण संकोच कर रहा था पर उन्होंने लगभग आधे घण्टे तक बातचीत की और किसी प्रसंग में कह दिया कि आपका स्थान मेरे हृदय में है । मैं चकित रह गया । उनके परीक्षण में मैं खरा उतरा यही मेरे गौरव एवं सन्तोष का विषय था । उने कुटुम्ब से भी मेरा सौहार्द्र रहा । पूज्यनीया भाभी जी का आशीर्वाद मुझे मिलता रहा है । उनकी बेटी सौ० मीरा जो वी० एस० डी० कालेज में भूगोल के कुशल प्रवक्ता हैं मेरी सैन्य अध्ययन की छात्रा थी । आज भी मेरे सम्बन्ध शर्मा जी के परिवार से मधुर हैं, इसका श्रेय भाभी जी और उनके ज्येष्ठ पुत्र बालेश्वर शर्मा को है ।

इन शब्दो के साथ मैं अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति दें ।

मेजर के० एन० पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष सैन्य विज्ञान
श्री विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म
महाविद्यालय, कानपुर।

भूरिद्द पं० शिवशरण शर्मा जी के सान्निध्य के रजत वर्ष

'नीराजन' का एक अर्थ ''अर्चना के रूप में देव मूर्ति के सामने प्रज्ज्वलित दीपक घुमाना'' भी होता है । इसी सन्दर्भ में सुधी शर्मा जी की और मेरी संगति के सक्रिय लगभग लगभग २५ वर्ष (१९४७-७२) की स्मृतियां प्रस्तुत लेख के माध्यम से उन्हीं को साँजलि समर्पित हैं ।

वर्ष १९३६ में मैं सनातन धर्म विद्यालय का इण्टर कक्षा का छात्र था । यहाँ पर गणित विषय के शिक्षक श्री कुंवर बहादुर श्रीवास्तव जी थे जिनका कि अगले वर्ष निधन हो गया । तब उनके स्थान पर गणित विषय पढ़ाने के लिए श्री शर्मा जी को वी० एस० एस० डी० कालेज से सनातन धर्म कालेज बुलाया गया । एक दिन मेरे अंग्रेजी विषय के शिक्षक किसी कारण से विद्यालय नहीं आ सके तो उनके स्थान पर तात्कालिक प्राचार्य श्री एच० के० भट्टाचार्य जी ने हम लोगों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए श्री शर्मा जी को कक्षा में भेजा । मेरे लिए शर्मा जी के दर्शन लाभ का वह प्रथम दिवस था । इस प्रकार मैंने श्री शर्मा जी को गुरू के रूप में पाया और तब से उनको वास्तव में गुरू के रूप में ही पाया । अभूतपूर्व आदर्श गुरूत्वाकर्षण था श्री शर्मा जी के व्यक्तित्व में ।

इतिहास का पढ़ना अच्छा होता है किन्तु उनसे अच्छे वे होते हैं जो स्वयं इतिहास की विषयवस्तु अर्थात कड़ी बनते हैं। श्री शर्मा जी इतिहास पुरूष हैं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था। वे अपने आप में एक महान संस्थान थे। उनके संस्मरणों के अनेकानेक पक्ष हैं, किन्तु मैं उनके और अपने सनातन धर्म विद्यालय में एक साथ सक्रिय रूप से बिताये दिनों को ही अवलोकित कर रहा हूँ

वर्ष १९४८ में सनातन धर्म कालेज की कक्षाएं (इण्टर की कक्षाएं) बी० एन० एस० डी० कालेज स्थानान्तरित हो गई । इस बीच शर्मा जी ने ओ० टी० सी० का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था । इसी समय सनातन धर्म कालेज में स्नातक स्तर पर सैन्य विज्ञान विषय खुल गया तथा श्री शर्मा जी सैन्य विज्ञान के अध्यक्ष बनायें गये । इसी दौरान मैं भी ओ० टी० सी० प्रशिक्षण प्राप्त करके सैन्य विज्ञान की कक्षाएं लेने लगा । बाद में १९५१ में अर्थ शास्त्र विभाग का अध्यक्ष बन गया परन्तु श्री शर्मा जी की स्नेहिल आकांक्षा और व्यवस्थानुसार सैन्य विज्ञान की कुछ कक्षायें मुझे तब भी पढ़ानी पड़ती थी । श्री शर्मा जी वर्ष १९६१ तक सैन्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रहे और वर्ष १९६१ में वे प्राचार्य पद पर नियुक्त हो गये तथा वर्ष १९७२ में इस पद से सेवामुक्त हुए । इस काल में उनका अध्यवसाय, शिक्षण कला, एन० सी० सी० के कैप्टन पद पर रह कैडेट्स का नेतृत्व व प्रशिक्षण, शिविर कालीन दायित्व, तत्परता, समबद्धता, अनुशासन, स्फूर्ति, व्यवस्था निर्णायक क्षमता, तर्क शीलता, सिद्धान्त प्रियता, बाहर से कुछ कठोर किन्तु अन्दर से कोमल सहृदयता,

सहयोग, परोपकार आदि जैसे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों से हुआ और पाया कि वास्तव में श्री शर्मा जी आदर्श गुणों की विशाल खान हैं ।

श्री शर्मा जी दीर्घ काल तक छात्रावास अधीक्षक भी रहे । कुशाग्र बुद्धि के छात्रों के लिए प्राध्यापक निवास के सन्निकट 'योगाश्रम' नामक छात्रावास की विशेष व्यवस्था दी । पुराने छात्रावास के अतिरिक्त 'न्यू ब्लाक' तथा वर्ष १९७१ में महाविद्यालय के 'स्वर्ण जयन्ती' वर्ष में 'जुबली हास्टल' छात्रों को अर्पित किया । छात्रावास में छात्रों के अध्ययन, भोजन, स्नान, ध्यान, मनोरंजन आदि की व्यवस्था अनेक सहयोगियों के होने के उपरान्त भी उक्त सभी की निगरानी वे नियमित रूप से स्वयं करते था।

श्री शर्मा जी दिव्य भव्य सुदर्शन काया युक्त अति कुशल व सक्षम प्राचार्य थे । 'विद्यार्थी कल्याण' उनका कृत संकल्प था । अध्यापक व कर्मचारियों की भावनाओं का व्यक्तिगत रूप से बहुत सम्मान करते थे । विद्यार्थी, अध्यापक तथा कर्मचारियों के सुख- दुःख में सदैव श्री शर्मा जी साथ रहते थे । प्रार्थना कक्ष में नियमित प्रार्थना सभा में उपस्थित रहने तथा गीता पर उपदेश सुनते - सुनते उनका कृतित्व एवं व्यक्तित्व गीतामय हो गया था । गीता को श्री शर्मा जी जीवन का आधार मानते थे । इसका उदाहरण उनके द्वारा वी० एस० एस० डी० कालेज के स्वर्ण जयंती वर्ष १९७१ की स्मारिका मे लिखित लेख "गीता में दिव्य त्रिवेणी" पठनीय है । इस लेख में श्री शर्मा जी के व्यक्तित्व की अन्तर्बाह्य गीतामय प्रतिछाया के दर्शन किये जा सकते हैं । प्राचार्य पद पर रहते हुए भी उनकी सिद्धान्त प्रिय, त्यागमयी और कर्मनिष्ठ छवि का क्या कहना ? अद्‌भुत अनुशासक, कार्यालय पर दृढ़ पकड़, त्वरित कार्य निष्पादन, एक समय पर केवल एक व्यक्ति से भेंट, विद्यालय हित सर्वोपरि, उनकी शैली के मूल स्वर थे । प्रसंग तो अनेक हैं, मात्र एक का उल्लेख करता हूँ । सन् १९७२ में एक छात्र प्रतिनिधि द्वारा एक वरिष्ठ प्राध्यापक के साथ दुर्व्यवहार किया गया । इस घटना से प्राध्यापक वर्ग में बड़ा रोष था । अतः प्राचार्य श्री शर्मा जी ने प्रार्थना कक्ष में प्रार्थना के उपरान्त डायस पर उपस्थित प्राध्यापकों को समस्या निवारण हेतु सभा करने को कहा तथा सभापति के रूप में एक वरिष्ठ प्राध्यापक को नियुक्त करके उस छात्र के प्रति कार्यवाही सुनिश्चित करने का आग्रह किया । सभा में उपस्थित सभी प्राध्यापकों की सम्मति के अनुसार सभापति जी ने श्री शर्मा जी की उपस्थिति मे उस छात्र को अनुशासन हीनता और दुर्व्यवहार का दोषी पाये जाने के कारण कालेज से निष्कासित किये जाने की निर्णायक अनुशंसा की सगर्व घोषणा की । बस फिर क्या था ? प्राचार्य श्री शर्मा जी अचानक खड़े हुए और निर्णयदाता सभापति जी पर बरस पड़े । उन्होंने कहा कि, "मैंने आप जैसे वरिष्ठ अनुभवी और योग्य प्राध्यापक को सभापति के रूप में इसलिए नहीं नियुक्त किया था कि आप छात्र के विरूद्ध इतना कठोर निर्णय लें । अध्यापक विद्यार्थी का, विद्यार्थियों के लिए और विद्यार्थियों द्वारा होता है । आपने निर्णय सुनाते हुए

छात्रहित को ध्यान में नहीं रखा । अरे, उस छात्र द्वारा उसकी भूल स्वीकार करवा कर क्षमा याचना जैसा कोई हल्का-फुल्का दण्ड का निर्णय आपको सुनाना चाहिए था। "यह सुनकर सभापति स्तब्ध रह गये और उनका चेहरा देखने लायक था । सभी प्राध्यापक सभापति जी की बेबसी पर ठहाके लगाते हुए वहाँ से भाग खड़े हुए । और अन्ततः वही हुआ कि उस छात्र को प्रार्थना कक्ष में सभी विद्यार्थियों और अध्यापकों के सम्मुख उपस्थित होकर सामूहिक क्षमा याचना करनी पड़ी और भुक्तभोगी प्राध्यापक को क्षमादान करना पड़ा । तो ऐसी थी हमारे प्राचार्य शर्मा जी की विद्यार्थी पक्षधरता और कल्याण भावना । कभी किसी सामूहिक कार्यक्रम के आयोजन होने पर समय के पूर्व से लेकर बाद में अतिथियों की विदाई, सभी सामानों की तुरन्त पुनर्व्यवस्था, सभी उप व मुख्य द्वारों के बन्द होने की सुनिश्चितता स्वयं करके सभी कर्मचारियों के चले जाने के बाद ही वे अकेले पैदल ही निजगृह को प्रस्थान करते थे । इस कार्य में चाहे रात के दो बजे हों या चार किन्तु होता यही था ।

श्री शर्मा जी से कोई भी व्यक्ति कभी भी मिलकर अपनी बात कह सकता था । वे अच्छे समस्या नैदानिक तो थे ही वे उससे बढ़कर एक बहुत अच्छे श्रोता थे ।

इस प्रकार एक अध्यापक, अध्येता, विभिन्न विषयों पर एकाधिकार, सैन्य व्यक्तित्व, कुशल प्रशासक, दृढ़ संकल्पित, त्वरित निर्णय की क्षमता, कार्यों की तत्काल सम्पन्नता, स्वावलम्बी आदि जैसे कितने ही ज्ञात और अज्ञात गुणों से भरपूर था श्री शर्मा जी का व्यक्तित्व ।

यद्यपि यह सत्य है कि श्री शर्मा जी भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं रहे किन्तु मुझे यह आत्म व लोक कथ्य अविश्वसनीय सा प्रतीत होता है । वे अपने कार्य, व्यवहार तथा स्मृतियों के माध्यम से हम सब में इतना रच - बस गये हैं कि उनकी स्मृति मात्र ही हम सब के सनातन पथ प्रदर्शन करती रहेगी । वही हैं इतिहास के पुरूषार्थी अमर सपूत ।

साँजलि नमन

डा० ए० पी० गौड़
भूतपूर्व प्राचार्य
वी० एस० एस० डी० कालेज, कानपुर।

प्रकाश स्तम्भ – श्रद्धेय प्राचार्य शिव शरण शर्मा 'बाबू जी'

उन्नत भव्य व्यक्तित्व, ओजपूर्ण वाणी, दृढ़ संकल्पवान, अनुशासन व कर्त्तव्यनिष्ठता की प्रतिमूर्ति आचार्यवर श्रद्धेय बाबू जी नहीं रहे, यह सहज ही विश्वास नहीं होता है, उनके आशीर्वाद के लिए उठे हाथ, सूक्ष्म दृष्टि, मधुर स्मितपूर्ण मुखाकृति, प्रशासन में दृढ़तापूर्वक निर्णय लेकर उस पर अडिग रहने की प्रेरणा मेरे अन्तम् मन में आज तक चिर जीवित है।

कहाँ से स्मृतियों के झरोखों में प्रवेश करूँ उलझन में हूँ। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व सभी के लिए प्रेरणादायक है।

प्रबन्धन में अग्रणी : उच्चादर्शों पर आधारित कार्य पद्धति उनकी ऐसी विशिष्टता थी, जिसने आज की पीढ़ी के इस चिन्तन पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है, ''जीवन में श्रेष्ठ सिद्धान्तों का पालन असंभव है'' परम राष्ट्र भक्त : 'इदम् राष्ट्राय, इदं न मम' के भाव से अनुप्रमाणित श्रद्धेय बाबू जी आजीवन स्वयं सेवक के रूप में कार्य करते रहे तथा प्रत्येक उत्तरदायित्व को राष्ट्रीय कार्य के रूप में संपादित करके उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र को समर्पित करके जिया है ।

कर्मठ निडर व्यक्तित्व : उन्होंने गीता के ज्ञानयोग व कर्मयोग ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' को जीवन में चरितार्थ कर स्वामी विवेकानन्द की उक्ति को आत्मसात् किया है ''अंधेरा -अंधेरा चिल्लाने से अन्धकार दूर नहीं होता है, प्रकाश के लिए एक दीपक जलाना आवश्यक है''।

निस्पृह जीवन : अपने निस्पृह जीवन उत्कृष्ट दर्शन, असीम वात्सल्य तथा अटूट राष्ट्रभक्ति की त्रिवेणी से आप्लावित श्रद्धेय बाबू जी आज की युवा पीढ़ी के लिए अजस्र प्रेरणा स्रोत हैं। आध्यात्मिक आस्थाओं से अनुप्रमाणित उन्होंने मनुस्मृति के धर्म के लक्षण को वस्तुतः धारण किया है –

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह :
धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम्।

भावी पीढ़ी के प्रेरक : धर्मनिष्ठ युवकों के निर्माण हेतु वैदिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु समर्पित वह शिक्षा के ''संस्कार'' पक्ष को सर्वोपरि महत्व देते थे क्योंकि हम संस्कारों की दृढ़ता से प्रहलाद व ध्रुव की भांति अटूट आत्मविश्वास से परिपूर्ण बालकों का निर्माण कर सकते हैं ।

पितृतुल्य वात्सल्य : उनका वी० एस० एस० डी० कालेज में विद्यार्थियों पर पितृतुल्य स्नेह का उद्धरण है, जब छात्रावास में पुलिस के लाठी चार्ज करने पर स्वयं आगे बढ़कर पुलिस के रोष का सामना किया, उनकी चेतावनी भरी ललकार ''ऐसी बर्बरता मैने ब्रिटिश काल में भी नहीं देखी'', आज भी कानों में गूंजती है, ऐसे प्राचार्य को पाकर महाविद्यालय धन्य हुआ ।

दृढ़- निश्चयी : जहाँ वह सिद्धान्तों व नियमों के सूक्ष्म ज्ञाता थे, वहीं समाज और राष्ट्र को सुदृढ़ता प्रदान करने में एक 'उपकरण' सिद्ध हों, यह प्रयास उन्होंने सदा किया । श्रेष्ठ लक्ष्य लेकर उसको इति तक पहुँचाने की ''चरैवति चरैवति'' की भावना से वह कवि के शब्दों में दृढ़ रहते थे -

''दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी जीवन भर अविचल चलता है।
जीवन का शाश्वत व्रत लेकर पथ पर संभल-संभल कर बढ़ता है।।

डा० आशा रानी राय
प्राचार्या, कानपुर विद्या मन्दिर महिला पी० जी०
महाविद्यालय, कानपुर

श्रद्धेय बाबू जी आज भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु जिन उच्च मूल्यों को उन्होंने जीवन में धारण किया, वे हमारा सम्बल व पाथेय है । उनका ऋषि तुल्य जीवन वह प्रकाश स्तम्भ है, जिसमें आज के विषय व कालिमायुक्त वातावरण में भी उचित दिशा की ओर संकेत करने की अप्रतिम व अद्वितीय क्षमता है ।

एक निष्कलुष दिव्य जीवन (ब्रहमलीन पं० शिवशरण शर्मा)

पूजनीय शर्मा जी का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया । किन्तु उनका तेजस्वी यशः शरीर सदा स्मृति- शेष रहेगा और प्रेरणा - स्रोत भी । कर्मोपासना से उन्होंने तेज और ओज अर्जित किया था, जिसने उनकी आत्मा को बलिष्ठ और निर्भीक बनाया । शर्मा जी में एक सिद्ध शिक्षक, कुशल प्रशासक, कठोर अनुशासक एवं मनस्वी विचारक निवास करता था । अर्थ शुचिता की वे साक्षात् मूर्ति थे । मुझे उनका सान्निध्य मात्र दो वर्ष ही प्राप्त हुआ पर जब मैं उनके समीप बैठंता था तो उनका कोई भी कथन, कोई वार्ता बड़ी स्पृहणीय लगती थी । शब्द सहज और कथन निश्छल होता था । हृदय की निर्मलता और चरित्र की पवित्रता मुग्ध कर देती थी । वे अति विनम्र पर दीन न थे, स्वाभिमानी पर अभिमानी न थे, व्यवहार में सहज पर विचार में गम्भीर थे । अब कहाँ मिलेंगे ऐसे लोग, जिन्होंने दिव्यता अर्जित की और दिव्यता बिखेरी भीं । यह पुरानी पीढ़ी जा रही है पर नयी पीढ़ी चरित्र की पावन आभा से रीती और अकिंचन है । इस कारण ऐसे सत् पुरूषों के विदा होने से रिक्तता अधिक पीड़ा देती है । शर्मा जी के निधन से जो रिक्तता हुई है, उसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं दिखती । वे तो अपना जीवन धन्य कर चले गये, चिर निद्रा में निमग्न हो परमशान्ति को प्राप्त हुए । हम तो इतना ही कह सकते हैं - ''भ्रवो हि लोकाभ्युदयास तादृशाय्।'' उनके चरणों में शत्-शत् नमन और श्रद्धा- सुमन ।

लक्ष्मीशंकर द्विवेदी
छात्रावास अधीक्षक

..... और शर्मा जी चले गए

चश्में के मोटे लेंसों के पीछे अवस्थित गुरु गंभीर नेत्रों की दृष्टि समय के पार जाया करती थी । उनके श्रीमुख से निकला कोई भी वाक्य या तो ज्ञान-गोमुख से निकला होता था या फिर भावों की गहराइयों से । ज्ञान या प्रेम भाव से विहीन बातचीत करते उन्हें किसी ने नहीं देखा । जब पहली बार मैंने उन्हें देखा, कुछ कुछ समझना शुरू किया, तब वे जीवन के ढलान पर ही थे कर्मनिष्ठ, सिद्धांतवादी पूज्य शर्मा जी पार्थिव रूप से हमारे बीच से ०७ नवम्बर १९९८ को चले गए परन्तु हमारे मन-मानस में वे आज भी और कल भी प्रेरणा और पाथेय बनकर स्थापित हैं और रहेंगे ।

जन्म और शिक्षा : १३ दिसम्बर १९०९ को भोन, चकवाल, जिला झेलम (पश्चिम पाकिस्तान) में प्रसिद्ध प्रकाण्ड वैद्य पंडित दामोदर दास शर्मा जी के पौत्र और पंडित गौरी शंकर शर्मा जी के पुत्र के रूप में शिव शरण शर्मा नाम से एक जीवन-गीता का अवतरण हुआ । जीवन-गीता इसलिये क्योंकि शर्मा जी का पूरा जीवन ही 'गीता' था । जहाँ शर्मा जी के दादा आयुर्वेद के विद्वान थे वहीं शर्मा जी के पिता संस्कृत और हिन्दी के पंडित थे । दादा जी धर्मार्थ दवाइयाँ बनाते और लोगों का सेवा भाव से इलाज करते थे उन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा और औषधियों पर अनेक पुस्तकें लिखी । पूर्वजों से विरासत में मिली प्रतिभा और अपनी अध्ययनशीलता के चलते शर्मा जी मैट्रिक से एम० ए० तक हमेशा प्रथम श्रेणी में ससम्मान उत्तीर्ण होते चले गये । हाई स्कूल - इण्टर विज्ञान वर्ग से प्रथम श्रेणी ससम्मान उत्तीर्ण करने के बाद उनकी शिक्षा लाहौर में हुई । मेधावी छात्र होने के कारण १९२५ से सन् १९३१ तक शर्मा जी को लगातार सरकार की ओर से वज़ीफा मिलता रहा । बी० ए० आनर्स (गणित) और एम० ए० गणित भी उन्होने ससम्मान प्रथम श्रेणी में पास किया ।

बचपन से ही अध्ययन प्रेमी : विद्यार्थी जीवन में अपनी बुद्धि-कुशाग्रता अध्ययनशीलता, अनुशासन और विनम्रता के कारण शर्मा जी अपने सभी प्राध्यापकों के प्रिय हो गए। पंजाब विश्वविद्यालय के विद्वान प्रोफेसर इन्हें पढ़ाते और अपनी पुस्तकें घर ले जाकर पढ़ने को देते। शर्मा जी पुस्तकालय में घुस जाते तो पढ़ते-पढ़ते रात हो जाती। अध्यवसाय का उनका यह गुण मृत्यु से एक माह पहले तक क्षीण होने पर भी बना रहा। लाहौर उस समय भारत की कला-संस्कृति और शिक्षा की प्रमुख नगरी थी। लाहौर की महत्ता इसके धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलनों के कारण भी थी। लाहौर विश्वविद्यालय में देश-विदेश के ख्यातिनाम विद्वान अपने व्याख्यान देने आया करते जिनका शर्मा जी ने भरपूर बौद्धिक लाभ उठाया। यहाँ शर्मा जी को लाला हसंराज और लाला लाजपतराय जैसे महानपुरूषों का भी मार्गदर्शन मिला।

कालेज के लिये : कानपुर के सर्वाधिक प्रतिष्ठित वकील श्री विक्रमाजीत सिंह के निमंत्रण पर श्री शिव शरण शर्मा जी अपने दादा श्री दामोदर दास शर्मा के साथ अगस्त १९३१ में कानपुर आये और फिर यहीं के हो गये । सन् १९३१ से १९३७ तक शर्मा जी ने वी० एस० एस० डी० कालेज में गणित और अंग्रेजी विषयो का बड़ी निष्ठा के साथ अध्यापन किया । थोड़े ही समय में उनकी काफी ख्याति हो गयी । सन् १९३७ मे ही शर्मा जी की नियुक्ति "विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय" (एस० डी० कालेज) में गणित के प्राध्यापक के रूप में हो गयी । सन् १९४१, जब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था) ब्रिटिश सरकार ने आदेश दिया कि हर महाविद्यालय को U.O.T.C. में भर्ती होने तथा युद्ध के लिये एक अध्यापक को भेजना होगा नहीं तो कालेज की मान्यता रद्द कर दी जायेगी । शर्मा जी ने पहल करते हुए यह दायित्व ले लिया और कालेजों की मान्यता रद्द होने से बचा ली । जबकि कोई अध्यापक द्वितीय विश्व युद्ध में जाने का बॉण्ड भरने को तैयार न था । शर्मा जी देश भर में पहले ऐसे अध्यापक थे जिन्हें यूनीवर्सिटी आफीसर्स ट्रेनिंग कोर (U.O.T.C.) के साक्षात्कार के बाद नियमित सेना (Regular Army) में लेफ्टिनेंट का पद सौंपा गया । चूँकि शर्मा जी ने इस साक्षात्कार में उच्च स्थान प्राप्त किया था इसलिए सेना के अधिकारियों ने कहा कि आप सेना में ही रहें वापस न जाएं, यदि आपकी दिलचस्पी शिक्षा में ही है तो आपकी नियुक्ति मिलिट्री एकेडमी ट्रेनिंग सेंटर में कर देंगे । आपको दिल्ली में बंग्ला जीप और फोन की सुविधा भी देंगे । शर्मा जी का उत्तर था कि मैं कालेज के प्राचार्य, अध्यापकों सभी को वचन देकर आया हूँ कि मैं बॉण्ड भरने के बाद वापस आ जाऊँगा", इसलिए मैं यह नहीं स्वीकार कर सकता । मेरा व्यक्तिगत हित रेगुलर आर्मी में जाने से है लेकिन कालेज हित के लिये मैं ऐसा नहीं कर सकता ।

छात्रों के लिए चलती गोलियों के बीच कूदे : किसी भ्रामक सूचना पर विश्वास करके प्रशासन ने एस० डी० कालेज छात्रावास मे पुलिस और पी० ए० सी० भेज दी । यह घटना सन् १९६६ की है । पी० ए० सी० ने पूरे छात्रावास को चारो तरफ से घेर लिया और फायरिंग शुरू कर दी । चारों तरफ भगदड़ और कोहराम मच गया । उस समय शर्मा जी एस० डी० कालेज के प्राचार्य थे । अपने कार्यालय में बैठे शर्मा जी उस समय काम कर रहे थे, सूचना मिलते ही वे घटना स्थल की ओर भागे । "मेरे बच्चों को बचाओ, मेरे बच्चों को बचाओ" चिल्लाते हुए व चलती गोलियों के बीच कूद पड़े । पी० ए० सी० ने शर्मा जी पर भी फायरिंग की लेकिन उसी समय उनके पैर में नीम के पेड़ की बाहर निकली जड़ फँस गयी और गिर पड़े, उन पर दागी गयी गोलियाँ उनके ऊपर से निकल कर दीवारों में समा गयी । जिनके निशान आज भी हैं । इस अकारण, निर्मम गोली काण्ड

की दुनियां भर में भर्त्सना की गयी । बी० बी० सी० लंदन, वाइस ऑफ अमेरिका, रेडियो मास्को, रेडियो पीकिंग ने इस सूचना को प्रसारित किया । अपनी फजीहत होती देख प्रशासन ने मांफी मांगी । केन्द्र और राज्य शर्मा जी को दीनदयाल विद्यालय से बड़ा लगाव था जीवन संध्या में वे इस विद्यालय की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष बने । चौबीसों घण्टे वे विद्यालय का ही हित चिंतन किया करते थे और जब भी कोई बात याद आती वे पैदल भागते चले आते । कई बार मैं उन्हें घर तक छोड़ आने का निवेदन करता लेकिन वे बड़ी कुशलता और स्नेह के साथ अस्वीकार कर देते थे । वे कहते थे कि यथाशक्य अपने बूते चलना चाहिए । मुझे करीब ग्यारह वर्ष तक उनका आशीष मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा । मैं वर्णन नहीं कर सकता कि उनका भावुक और प्रेमी हृदय कितना विशाल था ।

एक दिन जेठ की भरी दोपहर में शर्मा जी विद्यालय कोई निर्देश देने के लिए आ गये । मैंने देखते ही आदर पूर्वक उनको बैठाया और प्राचार्य जी को सूचना देने चला गया । बातचीत होने के बाद जब शर्मा जी घर जाने लगे तब प्राचार्य जी ने मुझसे ''शर्मा जी'' को घर तक भेज आने को कहा, मैंने भी निवेदन किया परन्तु शर्मा जी में 'नहीं' कहा । प्रयास पूर्वक उन्हें किसी वाहन से घर तक भिजवाया गया । यह घटना उनके देहान्त से २८ दिन पूर्व की है । शर्मा जी की हालत खराब होती गयी । एक दिन जब वे अचेत हो गए तब उन्हें रीजेन्सी अस्पताल में भर्ती कराया गया, पेसमेकर लगा, लेकिन कुछ दिन बाद फिर हालत बिगड़ना शुरू हो गई। एक दिन सुबह उनका कुशल क्षेम लेने पहुँचा । शर्मा जी अब बोल नहीं पाते थे इशारा करते थे और प्रयास करने पर घरघराहट की आवाज होती थी । शर्मा जी देखकर मन से बड़े प्रसन्न हुए लेकिन शरीर साथ नहीं दे रहा था । उन्होंने माता जी से मुझे कुछ खिलाने को कहा । माता जी ने मुझे हलुवा खिलाया। शर्मा जी भीगी आँखों से मुझे लगातार देख रहे थे और घरघराती आवाज के साथ संकेतों से मेरा हाल-चाल पूछ रहे थे । शर्मा जी कुर्सी पर बैठे थे, उनका पेट और पैर फूल चुके थे । एक घण्टे बाद मैं चला आया ।

मैं शर्मा जी से बातचीत कर उनके जीवन के तमाम वृत्तान्तों को लिपिबद्ध करना चाहता था। एक दिन यह सब बातें इतिहास होकर रह गयीं और शर्मा जी चले गए। शर्मा जी इतिहास बनाकर गये हैं, वे व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे, संस्था थे। ऐसे कर्मयोग के समाधिपुरूष को नमन।

दुर्गेश बाजपेयी
पूर्व छात्र

अभ्युदय

अँखुवाती लेखनी जिसे देश
की गौरवशाली परम्परा
को आत्मसात् करने
तथा विद्रूप को
ललकारने का
हौसला भी
है ।

दूध का धुला नहीं है 'दूध'

दूध प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण, विटामिन तथा जल का एक सक्रिय संतुलित मिश्रण है। इस बात की जानकारी सभी व्यक्तियों को है लेकिन आजकल दूध का विज्ञापन होने लगा है । आखिर इस विज्ञापन का क्या उद्देश्य हो सकता है ? क्या दूध से हम सभी अपरिचित हैं ? क्या दुग्ध उत्पादन संकट में है ? क्या दूध के प्रति हम लोगों में अरूचि हो रही है अथवा दूध में हो रही है ?

आजकल दूध को अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं । आज हम अधिकतर जिस दूध का सेवन करते हैं उसमें अनेक प्रकार के रसायनों का बड़ा अंश मिला रहता है जो हमारे शरीर के लिए घातक होता है । 'आक्सीटोसिन' के नाम से हम सभी परिचित हैं। आक्सीटोसिन एक प्रकार का इंजेक्शन होता है । दूध की चाहत में यह इंजेक्शन गाय तथा भैंसों को लगाया जाता है । इसके प्रभाव से गाय को अत्यधिक पीड़ा होती है । अतः वह कम समय में बिना बच्चे के दूध उतार देती है । यह ऑक्सीटोसिन न सिर्फ गाय को प्रभावित करता है, बल्कि उसके दूध में भी छनकर आता है । जिसके प्रभाव से आँखों की रोशनी कम हो जाती है, श्रवण शक्ति कम हो जाती है तथा मस्तिष्क की ग्रन्थियां शिथिल पड़ जाती हैं ।

दूध को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के कारण उसके फटने के भय से उसमें यूरिया मिला देते हैं । ऐसा प्रायः डेरियों में होता है । कुछ माह पहले आगरा शहर में दूध को 'इमल्सीफाई' तथा दूध को अधिक सफेद तथा गाढ़ा बनाने के लिए दूध में डिटर्जेन्ट मिलाने वाली घटना का भी भंडाफोड़ हुआ । दूध में आरारोड मिलाना, सेलम का बुरादा मिलाना, बेसन तथा आटा मिलाना एक आम बात हो गयी है । इसके अतिरिक्त दूध में पानी मिलाना तथा दूध की क्रीम निकलवाना तो एक रिवाज सा बन गया है ।

चूँकि प्राचीन काल से ही दूध के नाम की साख एक पौष्टिक पदार्थ के रूप में है । अतः बच्चे व जवान सभी इसके सेवन की इच्छा रखते हैं । लेकिन आज भ्रष्टाचार युक्त समाज के भ्रष्ट व्यापारियों ने दूध को भी अपने सदृश भ्रष्ट बना दिया है । आजकल सिंथेटिक दूध का बोलवाला बढ़ता जा रहा है । आज अधिकांश रूप से उत्पादित सिंथेटिक दूध में रिफाइण्ड तेल, यूरिया, कास्टिक सोडा, डिटर्जेन्ट पाउडर तथा चीनी का मिश्रण होता है । जिसके कारण मुख्यतः रक्तचाप अनियंत्रित हो जाता है । गुर्दों में खराबी आ जाती है, तथा पेट में सूजन आ जाती है । इस प्रकार के दूध के सेवन से हृदय भी कमजोर हो जाता है तथा शरीर में घबराहट होने लगती है । वैज्ञानिकों

के अनुसार एक दुग्धमापी यंत्र लैक्टोमीटर भी दूध में हो रही इन सभी मिलावटों का पता लगाने में असमर्थ है ।

हमारे देश में गाय को माँ माना जाता है, उसकी पूजा की जाती है । परन्तु गाय को आज दूध देने वाली मशीन समझा जाता है । उसका दुलारा लाड़ला बेटा आज मोहरा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है । उसे भूखा रखकर अपनी माँ से दूर रखा जाता है । इतनी दुश्मनी निभाने के बाद भी बेरहम मनुष्यों का कर्त्तव्य पूरा नहीं होता और गाय को मारकर भी कसाइयों के हाथ बेच कर जीव भक्षी मनुष्यों की भूख को शान्त किया जा रहा है ।

आज आवश्यकता है कि देश के सभी नागरिक जागरूक होकर इन सभी पापकर्मों का प्रतिकार कर सकें । कभी भगवान श्रीकृष्ण गायें पाला करते थे । इसलिए उन्हें गोपाल कहा जाता है । उस समय देश में इतना दूध, दही, घी था कि लोग कहा करते थे कि यहाँ दूध की नदियाँ बहती हैं लेकिन आज पैसे के लिए अन्धे हो चुके दूधिए और डेरियाँ किसी भी हद तक जा रहे हैं । दूध में यूरिया, निरमा, कास्टिक और न जाने क्या - क्या मिलाकर देश को रोग और मौत बेच रहे है । समाज को सुधारने का दायित्व स्वयं अपने कंधों पर लेना पड़ेगा। केवल सरकार को कोसने से काम नहीं चलने वाला है।

प्रदीप कुमार त्रिपाठी
अष्टम 'क'

बुद्धिमान किशन

रामपुर नामक गाँव मे किशन नामक एक कुम्हार रहता था । उसके पास एक गधा था वह गधा ही किशन के परिवार की रोजी रोटी का साधन था । किशन गाँव के दुकानदारों के लिए शहर से माल लाता था । इससे जो पैसा मिलता उससे अपने परिवार का गुजारा करता था । वह ईमानदार होने के साथ-साथ बहुत बुद्धिमान भी था । एक रात किसी ने उसके गधे को चुरा लिया । उसने उसे बहुत ढूढ़ा पर गधे का कहीं पता न चला । गधे के बिना किशन की रोजी रोटी बंद हो गयी । अतः मजबूर होकर उसने दूसरा गधा खरीदने की योजना बनाई और एक सेठ से कुछ रूपये लेकर पशुओं की मण्डी की ओर चल पड़ा । मंडी में उसे मन पसन्द गधा नहीं मिला । खोजते - खोजते अचानक उसे एक आदमी उसका गधा लिए एक जगह खड़ा होकर बोली लगाता हुआ दिखा । किशन ने गधे को पहचान लिया और उस आदमी से कहा, यह गधा तो मेरा है तुम इसे चोरी करके लाये हो । मेरा गधा मुझे वापस करो नही मैं शोर मचाऊँगा । ''कौन कहता है कि यह तुम्हारा गधा है मैने इसे बचपन से पाला है । तुम झूठ बोलकर इसे हथियाना चाहते हो ।'' कुम्हार की बात सुनकर उसने कहा ।

तब तक उनका झगड़ा सुनकर आस-पास के कई लोक एकत्र हो गये । दोनों की बात सुन लोगों ने पूँछा, तुम लोगों के पास अपनी बात सिद्ध करने का क्या सबूत है । किशन बुद्धिमान था । उसे एक उपाय सूझा और उसने एक कपड़े को लेकर गधे की आँखों पर बांध दिया । फिर बोला मेरा गधा एक आँख से अंधा है। फिर भी उसे जबाव तो देना ही था । तो उसने कहा मेरे गधे को बाई आँस से दिखाई नहीं देता, किशन की योजना काम कर गयी । उसने कहा इसकी चोरी पकड़ी गई । मेरा गधा दोनों आँख से देख सकता है । आप खुद ही देख लीजिए, कह किशन ने गधे की आँखों से पटटी खोल दी । लोगों ने जब देखा कि सचमुच गधा दोनों आँखों से देख सकता है । तो उन्होंने चोर को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया । किशन की बुद्धिमानी से उसे उसका गधा वापस मिल गया ।

सागर वर्मा
नवम 'ग'

नकल : एक संस्मरण

मैं अपने संस्मरण में उस घटना का वर्णन करने जा रहा हूँ जो शायद अब तक के मेरे जीवन की सबसे बुरी घटना है । तब मैं षष्ठ कक्षा में पढ़ता था । अर्द्ध वार्षिक परीक्षा चल रही थी, उस दिन अंग्रेजी का पर्चा था अंग्रेजी विषय मेरा सबसे कमजोर और अप्रिय विषय था मैं भी सबकी देखा - दाखी कॉपी विद्यालय ले आया । पहले परीक्षा भवन में बैठा पढ़ता रहा, फिर प्रार्थना की घंटी बजने पर कॉपी डेस्क में छोड़कर चला गया । लौटकर आया तो पर्चा मिला । पहले तो मैं सोच - सोच कर पर्चा हल करता रहा । मगर जब प्रश्नोत्तर की बारी आई तो वे कुछ ज्यादा कठिन लगे। कॉपी डेस्क में रखी देख मेरे मन में एक दुर्विचार आया कि क्यों न कॉपी से देखकर उत्तर लिख लिये जाएं । मैने ऐसा ही किया और मैं सफल भी हुआ । फिर सभी प्रश्न हल करके मैं आराम से बैठ गया । घंटी लगने ही वाली थी कि तभी मेरे एक मित्र ने डेस्क में रखी कॉपी देख ली और इसकी शिकायत आचार्य जी आनन्द जी से कर दी । मेरी कापी और उत्तर पुस्तिका छीन ली गई। उत्तर - पुस्तिका में नोट लगा दिया गया । मेरी तो जान ही निकल गयी। सभी के सामने मुझे लज्जित होना पड़ा । फिर मुझे प्रधानाचार्य जी के पास ले जाया गया । मैं बहुत डर गया था । परन्तु प्रधानाचार्य जी के समझाने पर मेरा डर दूर हुआ और मन में एक दृढ़ प्रतिज्ञा पैदा हुई कि कभी भी इस प्रपंच का सहारा नहीं लूँगा, चाहे फेल ही क्यों न हो जाऊँ ।यह घटना मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय घटना है । इसे मैं कभी भी भूल नहीं सकता नकल एक बुरी चीज है । इसे अपनाने पर सिवाय बदनामी के और कुछ नहीं मिलता है । इस लेख द्वारा मैं सभी छात्रों से निवेदन करता हूँ कि किसी भी परीक्षा में नकल का सहारा न लें, नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा ।

सौरभ त्रिपाठी
सप्तम 'क'

"धर्मवेशी लुटेरे"

एक सुनार ने एक जवाहरात की दुकान खोल रखी थी । देखने में वह बड़ा धर्मात्मा लगता था - माथे पर तिलक, गले में माला, हाथ में सुमिरनी । इसलिए लोग विश्वास करते कि वह धोखा नहीं दे सकता । लेकिन जब कभी ग्राहक उसकी दुकान पर आते तो उसके सहायकों में से एक कहता - 'केशव ! केशव !' तब कुछ देर में दूसरा कहता - 'गोपाल ! गोपाल !' तब तीसरा बोलता - 'हरि ! हरि !' अन्त में एक कहता - 'हर ! हर !' ईश्वर के इन नामों का उच्चारण होते देख ग्राहकों का उस पर विश्वास और भी बढ़ जाता । लेकिन ईश्वर के ये नाम उस सुनार द्वारा सांकेतिक शब्दों के तौर पर इस्तेमाल किये जाते थे । जो आदमी केशव ! केशव ! कहता उसका मतलब यह पूछने का था कि 'ये ग्राहक कैसे हैं ? तो गोपाल ! गोपाल ! कहता वह बतलाता कि 'ये लोग बिल्कुल बैल हैं ।' यह अनुमान वह थोड़ी देर की बात चीत में ही लगा लेता था । हरि ! हरि ! कहने वाला पूछता तो क्या हम इन्हें लूटें ? इसका जवाब हर ! हर ! कहने वाला देता - इन बैलों को जरूर लूट लो ।

ऋषिराज त्रिवेदी
षष्ठ 'ख'

सौतेला कौन

पूस की अंधेरी रात । नीरखता । सड़क की रोड लाइट खराब थी । लोग अपने घरों में थे । तभी एक नवजात शिशु के रोने की आवाज सुनाई दी । लावारिस बच्चा सड़क पर पड़ा तड़प रहा था धीरे-धीरे वहाँ भीड़ जमा होने लगी । भीड़ का तो स्वभाव ही होता है-तमाशा देखना । लोग उस बच्चे को देख तो रहे थे परन्तु उसे उठाने, पुचकारने, चिन्ता करने की जहमत कोई नहीं उठाना चाहता था । तभी वहाँ एक दम्पत्ति आये और उस बच्चे को अपने साथ ले गये ।

ये दम्पत्ति थे कर्नल रमेश सिंह व उनकी पत्नी, जोकि निःसन्तान थे । उन्होंने उस बच्चे को बड़े प्रेम से पालना पोसना शुरू कर दिया । नाम रखा भूपति । भूपति बड़ा भोला था । चतुराई उसमें रंच मात्र नहीं थी । अपने साथियों के साथ खेलते हुये जब कभी खिड़की का शीशा टूट जाता तो उसके साथी बड़ी चंतुरता से बच निकलते लेकिन वह फंस जाता । स्कूल जाते समय सड़क पर अगर उसे कोई अन्धा मिल जाता तो पहले वह उस अन्धे को सड़क पार कर वाता । उसके बाद कहीं स्कूल जाता । लेकिन स्कूल के अध्यापक तो यही समझते कि भूपति देर से आया है । इसलिए उसे दण्डित करते । वह अपनी सफाई देने के पहले ही मार खा जाता । आते जाते रास्ते में उसे कोई भिखारी दिखाता तो वह उसको अपनी जेब में पड़े सारे रूपये दे देता । जब वह घर पहुँचता और उसकी जेब खाली होती तो माता-पिता समझते कि उसने इतने पैसों का दुरूपयोग किया है । भूपति के अच्छे नम्बर नहीं आ पाते थे । इसलिये उसके माता-पिता उसे और भी खराब समझने लगे थे ।

भूपति जब सातवीं कक्षा में पढ़ता था तब कर्नल साहब की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम रखा रामानन्द । रामानन्द उनका अपना खून था । उनको प्राणों से भी प्यारा था । रामानन्द को देखे बिना कर्नल साहब एक क्षण भी प्रसन्न न रह पाते थे । उसको बड़े लाड़ से पाला व अच्छी तालीम दी । इण्टर पास करने के बाद प्रबन्धन की पढ़ाई के लिये उसे विदेश भेज दिया गया । भूपति की पढ़ाई हाई स्कूल के बाद छूट ही गयी । वक्त गुजरता गया । स्थितियां बदलती गयीं । रामानन्द विदेश में नौकरी पा गया । मोटी रकम मिलने लगी । आलीशान बंगला, बढ़िया कार उसके पास । पर उसके पास भावना नहीं थी । प्रेम करना नहीं जानता था । इधर कर्नल साहब बूढ़े हुये । बीमार रहने लगे । बीमारी बढ़ती गयी और उन्होने चारपाई पकड़ ली । भूपति हमेशा ही कर्नल साहब की सेवा में लगा रहता था । बुखार आने पर कई - कई बार भूपति रात-रात भर कर्नल साहब के लिये जागा करता । उनकी एक-एक बात की चिन्ता करता । एक दिन कर्नल साहब की हालत बहुत खराब हो गयी । भूपति ने रामानन्द को खबर भेजी रामानन्द का कोई जवाब नहीं आया भूपति का हृदय इतना उदार था कि उसने अपने लिए कभी कुछ नहीं मांगा । रामानन्द

विलायत पढ़ने गया तब भी उसे किसी प्रकार की ईर्ष्या नहीं हुई । बल्कि हमेशा ही रामानन्द के प्रति छोटे भाई सा प्रेम उसके दिल में रहता था ।

हालत खराब ज्यादा होते देख भूपति ने रामानन्द को टेलीफोन किया कि पिता जी की हालत बहुत खराब है तुरन्त आ जाओ । रामानन्द का जवाब था "मेरी कम्पनी के डायरेक्टर आने वाले हैं मैं किसी भी कीमत पर नहीं आ सकता" भूपति उसी तरह पिता जी की सेवा में लगा रहा । कर्नल साहब का समय पूरा हुआ वे दुनियां छोड़कर चले गये । चिता प्रज्ज्वलन तक रामानन्द का इंतजार किया गया वे सोचने लगीं आखिर सौतेला कौन है ? भूपति या रामानन्द ।

✍ प्रशान्त भारद्वाज
अष्टम 'क'

"विदेशी का स्थान"

एक बार स्वामी विवेकानन्द कहीं भाषण दे रहे थे । भाषण में वे कह रहे थे कि हमें सदैव भगवा वस्त्र पहनने चाहिए । इस प्रकार वे भारतीय वस्त्रों पर बहुत बल दे रहे थे । उनका वेश भी भगवा ही था, परन्तु उनका जूता विदेशी था । एक अंग्रेज महिला ने यह देख लिया । वह ईर्ष्या से जल उठी और तुरन्त खड़ी होकर बोली - "स्वामी जी, आप भारतीय वस्त्रों पर इतना बल दे रहे हैं, परन्तु आपका जूता तो विदेशी है" । स्वामी विवेकानन्द जी बोले - "बस मैं यही बताना चाहता हूँ कि हमारी दृष्टि में विदेशी का स्थान कहाँ है ।" यह सुनकर अंग्रेज महिला निरुत्तर हो गयी ।

इस प्रकार इतनी सहजता से कितना गम्भीर उत्तर दिया था स्वामी विवेकानन्द जी ने ।

✍ नितिन प्रताप सिंह
षष्ठ 'ख'

प्रतिभा – पलायन

वर्तमान समय में प्रतिभा पलायन हमारे देश के लिये एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है । प्रायः हर वर्ष हमारे देश की प्रतिभाएं दूसरे देशों को पलायन कर रहीं है । आंकड़े बताते हैं कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से ही अनेक प्रतिभाशाली छात्र प्रति वर्ष अपने देश में शोध कार्य की सुविधाएं न मिल पाने के कारण दूसरे देशों में चले जाते है और इस तरह हमारा देश नित्य प्रति प्रतिभाओं को खोता जा रहा है । यह समस्या वर्तमान समय में बड़ा उग्र रूप लेती जा रही है और एक दिन ऐसा आयेगा जबकि हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी आ जायेगी ।

यों तो प्रतिभा पलायन के बहुत से कारण हैं परन्तु उनमें मुख्यतः अपने देश में शोध कार्य की सुविधाओं की कमी, भाई - भतीजाबाद की नीति, कुत्सित राजनीति का हस्तक्षेप एवं योग्यतानुसार नौकरियों का न मिल पाना आदि हैं । यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है परन्तु उनका उचित मूल्यांकन न होने के कारण उन्हें क्षुब्ध होकर अपने देश से पलायन करने के लिए बाध्य होना पड़ता है । कोई भी छात्र अपना घर और अपना देश स्वेच्छा से नहीं छोड़ना चाहता परन्तु जब उनकी प्रतिभा का देश द्वारा उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता, उसे गंदी राजनीति का शिकार होना पड़ता है तथा शोध कार्य की सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है, तो उसे अपने हृदय की पीड़ा को दबाकर स्वदेश छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ता है । एक ऐसा ही ज्वलंत उदाहरण डॉ० खुराना का है, जिसमें डॉ० खुराना को अपने देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने देश मे न तो शोध कार्य करने की सुविधायें प्राप्त हुई और न ही उनकी प्रतिभा का उचित मूल्यांकन ही किया गया। अपने हृदय की पीड़ा और मानसिक वेदना के कारण क्षुब्ध होकर उन्हें स्वदेश छोड़ना पड़ा और अमेरिका जाकर वहाँ की नागरिकता को स्वीकार करना पड़ा और अमेरिका में उन्हें आणविक जीव विज्ञान में विश्व का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो इसका श्रेय अमेरिका को गया, उनकी जन्म भूमि भारत को नहीं । डॉ० खुराना को यदि स्वदेश में उचित सम्मान मिला होता तो वे अपना देश कभी न छोड़ते । ऐसी कुत्सित राजनीति का अंत होना ही चाहिये, जिसमें डॉ० खुराना जैसी प्रतिभायें पलायन कर रहीं है । यदि इस प्रकार प्रतिभा पलायन होता रहेगा, तो क्या होगा हमारे देश का भविष्य ? यदि समस्या अत्यधिक उग्र रूप धारण कर ले, इससे पहले हमें इसके कारकों को खत्म करने की कोशिश करनी चाहिये ताकि हमारे देश की प्रतिभाएं स्वदेश की उन्नति में मददगार सिद्ध हों ।

इसे अलावा और भी कई उदाहरण हैं, जो स्वदेश से पलायन के बाध्य हुए हैं । वर्तमान समय को देखने पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ० अमर्त्यसेन का प्रमुख है । इनको अभी कुछ समय पूर्व

अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार मिला है । इन्होंने भारतीय मूल के होते हुए भी अमेरिका की नागरिकता ग्रहण कर ली। इसके अलावा कल्पना तथा डा० सुब्रामण्यम चन्द्रा का उदाहरण भी है । इसके अलावा दो छात्र ऐसे भी हैं, जो प्रबन्धन की पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद उचित सुविधाओं के अभाव में अमेरिका जाकर बस गये और प्रति माह लगभग दो लाख रुपये कमा रहे हैं । आज की खेल प्रतिभाओं को भी उचित संरक्षण के अभाव का सामना करना पड़ रहा है इसलिये वे विदेशों में जाने के लिये बाध्य हैं । इसके उदाहरण जसपाल राणा, दिब्येन्दु बरूआ आदि का है । अतः हमारे देश को यदि प्रतिभाओं के पलायन को रोकना है तो उन्हें संरक्षण, सुविधा व उनके विकास में सहायता प्रदान करनी चाहिये । यदि ऐसा हो सका तो वह दिन दूर नहीं जब भारत एक शक्तिशाली और उन्नत राष्ट्रों की श्रेणी में आ खड़ा होगा ।

✍ सौरभ सिंह
नवम् 'ग'

कश्मीर दे सकते नहीं

व्यक्तियों की चेतना में उछाल आ गया,
खून बहता देख खून में उबाल आ गया ।
भाई का बहता हो खून तो भाई चुप कैसे रहे ?
बेटा हो जब सामने तो माँ का खून कैसे बहे ?

शहीदों के खून से रंगा कश्मीर विदेशी हो नहीं सकता,
धरती का स्वर्ग भारत से कभी खो नहीं सकता ।
सरज़मी कश्मीर को कुत्ते तो खा सकते नहीं,
भेड़िये चालाक हों चाहे सिंहत्व पा सकते नहीं,

सहन करने के चरम की सीमा होती है नहीं क्या ?
अपना सर कटता हो तो भारत माता रोती नहीं क्या ?
पाक को नापाक हरकत का जवाब मिल गया,
जवाब भी ऐसा मिला कि विश्व पूरा हिल गया ।

जान गया अब विश्व सारा युद्ध से डरते नहीं हम,
शांति अपना ध्येय भले हो, लड़ने में हैं कम नहीं हम।
घुसपैठ कर घुसपैठिये कश्मीर ले सकते नहीं,
खून बहता हो तो बह ले हम कश्मीर दे सकते नहीं ।

✍ शुभम् चतुर्वेदी
अष्टम् 'क'

(Y2K समस्या)

समय अनवरत चलता रहता है । इसी शाश्वत नियम के तहत हम 21वीं सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं, जिसे कम्प्यूटर प्रणाली के इतिहास में महाप्रलय की संज्ञा दी जा रही है । इस पर विश्वास करने वाले लोग सहस्राब्दि के परिवर्तन पर अभिकलित्रों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को लेकर असमंजस्य की स्थिति में है जिसे विश्व में ''वाई 2 का के'' के नाम से संबोधित किया जा रहा है। कुछ लोगों का मत है कि 31 दिसम्बर 1999 तथा 1 जनवरी 2000 के मध्य रात्रि अभिकलित्र संचालित व्यवस्थाओं के रूकने से विश्व-जीवन ठहर जायेगा ।

Y2K है क्या

वाई का अर्थ वर्ष तथा 2K का अर्थ दो किलो (2000) अर्थात संयुक्त रूप से वर्ष 2000 की समस्या से है । इसे द्विअंकीय समस्या या मिलेनियम बग भी कहा जाता है । यह समस्या सूचना प्रौद्योगिकी में साफ्टवेयर त्रुटि की देन है । 1960 और 70 के दशक में जब सूचना प्रौद्योगिकी शैशवावस्था में थी उस समय अभिकलित्रों (कम्प्यूटरों) का प्रयोग सफेद हाथी था । क्योंकि कम्प्यूटर मंहगे थे । तत्कालीन आवश्यकता व अदूरदर्शिता के कारण अनावश्यक लगने वाले आंकड़ों को हटा देना स्मृति व भंडारण क्षमता की दृष्टि से आसान लगा जो आज एक विकराल समस्या के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है । उस समय अनावश्यक समझे जाने वाले आंकड़ों को हटाने की सनक में दिवस, माह और वर्ष प्रत्येक को द्विअंकीय संख्या में दर्शाया गया जो कि महीने व दिन के लिये तो ठीक था परन्तु वर्ष के लिये इस आधार पर था कि सदैव 20वीं सदी ही चलती रहेगी ।

उदाहरणार्थ 1 दिसम्बर 1998 को हम 01/12/98 से दर्ज करते हैं । अब जब 1 जनवरी 2000 को 00 से दर्शायेंगे । कम्प्यूटर की भाषा में जिसका मतलब 2000 से न होकर 1900 से होगा अर्थात हम 100 वर्ष पीछे हो जायेंगे ।

Y2K के प्रभाव

1. इस समस्या के कारण कई लेखा प्रणालियाँ ध्वस्त हो जायेंगी । उदाहरण एक व्यक्ति की जन्म तिथि 1960 है जो अधिकतर अभिकलित्रों में 60 से दर्शित है । 1999 तक कम्प्यूटर उसकी आयु 99-60 = 39 वर्ष बतायेगा । परन्तु 2000 में यह आयु 00-60 = -60 होगी । वे ऋणात्मक आयु को या तो (0) मानेंगे या सकल आयु के रूप में 60 वर्ष गिन लेंगे अर्थात 39 वर्ष की आयु में ही सेवानिवृत्त कर देंगें ।
2. अस्पतालों में 90 वर्षी वृद्ध दस वर्ष का बालक माना जायेगा ।

3. मृत्यु प्रमाण पत्र जन्म के पहलें की तिथि के बनेंगे ।
4. स्वचालित टेलर मशीनें पूर्व में जमा किये गये धन को अमान्य कर देंगी ।

Y2K की विशालता

वाई 2K समस्या का समाधान भी है परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी विश्व इसके आकार और व्यापकता को लेकर भयभीत है । आज विश्व में करोड़ों प्रोग्राम निर्देशनों से मुक्त दसों लाख कम्प्यूटर कार्यरत हैं । लगभग २ अरब पंक्तियों के कम्प्यूटर कूट के विश्लेषित करने और सुधारने की आवश्यकता है । दुनिया में न तो इस कार्य के लिये पर्याप्त प्रोग्रामर हैं और ना ही प्रत्येक कूट को सुधारने का समय बचा है । इससे भी अधिक गंभीर व जटिल समस्या हमारे दैनिक उपयोग में आ रही उपभोक्ता वस्तुओं में ली माइक्रोचिस पर अंकित प्रोगाम तलाशने और उन्हें बदलने की है ।

गार्टनर समूह के अनुसार, इस समस्या से उबरने के लिये कारपोरेट जगत को ६०० बिलियन डॉली से ४.६ ट्रिलियन डॉलर व्यय करने होंगें । सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्यय किये जाने वाले धन से कम्पनियों को कोई फायदा नहीं होगा । भारत में साफ्टवेयर सुधारने की लागत कई बिलियन डॉलर आयेगी ।

Y2K का हल

इस समस्या का हल है लेकिन वर्तमान कार्यों को प्रभावित किये बिना गलती को सुधारना है इस समस्या से निबटने के कुछ सामान्य तरीखे इस प्रकार है ।

शताब्दी सूचक : अतिरिक्त भंडारण मात्रा को न्यूनतम करने की यह सरलतम खोजी गयी विधि है । इसके पीछे मूल सिद्धान्त यह है कि तिथियों के साथ एक अतिरिक्त सहायक बाइट प्रयोग की जाये । अगर बाइट संख्या ० हो तो तिथि 20वीं शताब्दी में मानी जायेगी (19 x x) अन्यथा इसे २१वीं शताब्दी (20 x x) के रूप में माना जायेगा ।

पूर्ण तिथि विस्तार : ये समस्या के समाधान का सर्वाधिक मान्य तरीका है परन्तु बहुत मंहगा है । प्रोग्रामों में भरी जाने वाली सभी तिथियां और तिथियों के अनुपयोगों को चार अंकीय वर्षों के रूप में कम्प्यूटर में अंकित किया जायेगा । इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते है कि कम्प्यूटर पर निर्भर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को समय व्यर्थ किये बिना अपने प्रोग्रामों की वाई २ के अनुकूलता की जांच करनी चाहिए । अतः अब हमें यह सोचना है कि हम नई सहस्राब्दि के आगमन पर उसका स्वागत करें । ये हम वाई २ के समस्या को लेकर चिंचित हों ।

अनुराग वर्मा
नवम् 'क'

प्रेरणा - पुरूष दीनदयाल जी

युधिष्ठिर से धर्मराज पूछते हैं ..... कः पंथा : ? युधिष्ठिर उत्तर देते हैं ..... महाजने येन गतः सः पंथा :। मनुष्य की प्रकृति त्रिगुणी होती है । सत्व, रज और तम । पंडित दीन दयाल जी एक व्यक्ति मात्र न थे । यदि व्यक्तित्व और कृतित्व का समन्वय देखना हो तो दीन दयाल जी का जीवन आदर्श रूप है । जो मृत्यु को जीवन का उत्कर्ष मानते हैं, 'मृत्यु' जीवन की अनिर्वचनीय गति है जो लोग ऐसा देखते हैं, ऐसे दृष्टा ऋषियों, मुनियों की पंक्ति में ही पं० दीन दयाल जी का नाम सारे विश्व में सर्वोपरि है ।

पं० दीन दयाल जी का जन्म आश्विन मास वि. सं. १९७३ में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तदानुसार २५ सितम्बर १९१६ को हुआ । उनके नाना पं० चुन्नी लाल शुक्ल जयपुर अजमेर रेलवे लाइन पर स्थित ग्राम धनकिया में स्टेशन मास्टर थे । पं० जी का जन्म नाना के घर में हुआ । उनके पिता जी का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय तथा माता राम प्यारी थी । उनके पिता उत्तर प्रदेश में जलेसर रोड़ रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे । आपके पितामह अपने समय के ज्योतिष शास्त्र के विद्वान थे । हिन्दुस्तान की प्राच्य विद्या में निष्णात एक ज्योतिषी ने जन्म नक्षत्र के मुहूर्त का अध्ययन करते हुए बताया कि ये बालक समाज तथा राष्ट्र की सेवा का व्रत लेगा । देश विदेश में सम्मान प्राप्त करेगा । यह बालक दीनों और शोषितों के उद्धार करने का बीड़ा उठायेगा ।

विधाता ने उन्हें जन्म से ही कठिनाइयों में रखा, जब वे तीन साल के थे और चल भी न पाते थे कि उनके पिता का देहावसान हो गया । पिता की मृत्यु का बज्राघात शिशु शीघ्र न भुला पाया । विधवा माँ दीन दयाल को पिता का स्नेह और माँ का प्यार दोनों दे पाती इससे पहले वे भी गुजर गयी । सात वर्ष की उम्र में दीन दयाल पर न माँ का स्नेह रहा न पिता का प्यार ।

नाना चुन्नीलाल के संरक्षण में बालक दीन दयाल अपनी माँ का विछोह व पिता का निधन भूल पाते इससे पहले नाना भी चल बसे । मामा ने आश्रय दिया और वे भी स्वर्गवासी हो गये । पिता, माँ, नाना, मामा, एक - एक कर सभी संरक्षक स्वर्ग सिधार गये । दीन दयाल का छोटा भाई १५ वर्ष की उम्र में चल बसा । दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुए कि नानी भी न रहीं । विपत्तियों से जूझने का क्रम चलता रहा । बाल्य काल में माता - पिता का निधन जर्जर कर देने के लिये काफी था । दुर्भाग्य की इस चपेट में बिरले ही उबर पाते है । नन्हें बच्चे जब थपकियाँ पा रहे हों तब कोई एकाकी बालक सिसकियों को पीकर मुट्ठी में दुर्भाग्य को दबोचने का यत्न करें तो यह उसकी अपनी, अपने प्रति कठोरता मानी जायेगी । कर्म में ध्यान करने का मंत्र दीन दयाल जी ने बाल्यकाल में ही सीख लिया ।

दीन दयाल जी विद्यार्जन की सीढ़ियाँ सफलतापूर्वक चढ़ते गये, वे अजमेर बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा में सम्पूर्ण बोर्ड में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । एकाग्रता के साथ मन और बुद्धि को नियोजित कार्य में लगाने से, भला कौन सी बाधा है, जो जीती न जा सके और कौन सी परीक्षा है जिसमें सफल न हुआ जा सके । दो वर्ष बाद इण्टर की परीक्षा प्लॉनी से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । कानपुर के एस० डी० कालेज से बी० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । कानपुर के सनातम धर्म कालेज से बी० एड० करने के बाद वे आगरा से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० करने के बाद सेण्ट जॉन कालेज में प्रविष्ट हुए तथा प्रथम वर्ष उत्तीर्ण करने के बाद द्वितीय वर्ष की परीक्षा न दे सके ।

कानपुर में सन् १९३७ में उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हुआ । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के नाते वे सन् १९४२ में लखीमपुर-खीरी जिले में नियुक्त हुए । सन् १९५१ में जन संघ के निर्माण तक वे इसी क्षेत्र में रहे । पंडित जी ने २१ सितम्बर १९५१ में लखनऊ में जन संघ की स्थापना की । कालीकट के अधिवेशन में उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र को " चरैवेति चरैवेति" का संदेश दिया । उसे उन्होंने जीवन में साकार कर लिया था पं दीन दयाल जी अक्सर उपनिषद् के इस श्लोक को हमेशा उद्धृत किया करते थे .....

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः ।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चरम् ।।३
चरैवति ! चरैवेति ! चरैवेति !

पंडित जी १९४७ में प्रान्त प्रचारक हुए । पंडित जी का जीवन संघ-प्रचारकों के लिये प्रेरणा दायी था । और इस समय तो उनके स्वरूप को और भी प्रेरणा दायी माना जा रहा है । डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक बैठक में कहा ....."पं० दीन दयाल जैसे दो कार्यकर्ता मिल जाए तो एक वर्ष में सारे देश का नक्शा बदल जायेगा" । उन्होंने कहा ..... " हमने किसी वर्ग की सेवा का नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया है" ।

सभी देशवासी हमारे बान्धव है । दीन दयाल जी अच्छे स्वभाव के थे उनको अजातशत्रु कहा जाता है । उनसे किसी की शत्रुता नहीं थी । उनकी विशेषता थी कि वे कभी पद के पीछे नहीं दौड़े अपितु कोशिश करते कि उनके जैसे कार्यकर्ता कैसे खड़े हों ? दीन दयाल जी ने कभी नहीं सोचा कि बड़े ग्रन्थ लिखकर मैं ख्याति प्राप्त कर लूँ । सबेरे ५ बजे से रात ११ बजे तक सारी व्यवस्थायें बड़ी सूक्ष्मता से देखते थे हर तरफ उनका ध्यान रहता था ।

पंड़ित जी अत्यन्त मेधावी छात्र थे । त्रैमासिक परीक्षा में जब उनके साथ पढ़ने वालों के जीरो (०) नम्बर आये तो उन्होने जीरो एसोसियेशन की स्थापना की, शून्य अंक वालों का संगठन बन

गया । पंडित जी ने रात दिन मेहनत करके उनकी कमजोरियों को दूर कर दिया । दीन दयाल जी का ऐसे लोगों के साथ जुड जाना उनके संवेदनशील होने का संकेत है । पंडित जी का अस्तित्व आसमान चूम रहा था । परन्तु उनके मन में सत्ता का कोई भी पद प्राप्त करने की लालसा नहीं थी ।

एक घटना है कि उन्हें प्रधानाचार्य बनाने के लिये प्रस्ताव आया, परन्तु उन्होनें कहा .... मेरा काम बीस रुपये तक का है मैं दो सौ रुपये लेकर क्या करूँगा ? मैं तो मुख्यतः संघ का कार्य करने के लिये आया हूँ । वे अपने वेश की चिन्ता नहीं करते थे । उनके खद्दर के कुर्ते में हमेशा सिलवटें पड़ी रहती थी । वे कहते थे कि ..... प्राणायाम करना चाहिए, इससे अन्दर की अशुद्धता आक्सीजन के माध्यम से दूर होती है ।

एक बार वे अपने मित्र के साथ ट्रेन में यात्रा कर रहे थे । वे किसी कार्यवश प्रथम श्रेणी के डिब्बे में परम पूज्य गुरूजी (म० स० गोलवलकर) से मिलने गए, फिर स्टेशन पर उतरकर उन्होंने टिकट चेकर को ढूढ़ना प्रारम्भ किया । " उनके मित्रों ने उनसे पूछा, " आप किसे ढूँढ़ रहे हैं "? टिकट चेकर को ! "मित्रों ने पूछा क्यों" ? तो उन्होंने कहा कि " मैं जितने समय प्रथम श्रेणी के डिब्बे में रहा तब तक का किराया मुझे देना है । क्योंकि ये सरकारी सम्पत्ति है ।

११ फरवरी १९६८ की रात उनके जीवन की आखिरी रात थी । दीन दयाल जी परम तत्व के साथ एकाकार हो गये । देशप्रेम, सफलता और सादगी की जीवन ज्योति बुझ गयी । जिसके प्रकाश में हम सब अपना तमस नष्ट कर रहे थे । प्रातः काल लगभग साढ़े तीन बजे मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर को दूरभाष पर सूचना दी कि प्लेटफार्म से लगभग १५० गज की दूरी पर मेन लाइन से दक्षिण की ओर एक शव पड़ा हुआ है । ६:३० बजे शव का चित्र लिया गया । मुट्ठी में उनकी ५ रुपये का नोट जेब में २६ रु० व प्रथम श्रेणी का टिकट व एक घड़ी थी जिसमें अंकित था, नाना जी देशमुख । कमर से मुख तक का भाग शाल से ढ़का हुआ था । इस शव को कोई पहचान न सका । वहाँ भीड़ जमा हो गयी । उनमें से एक रेल कर्मचारी ने शव को देखते हुए पहचान लिया । वह चीख पड़ा कि ये दीन दयाल जी का शव है । लखनऊ में फोन कर दिया गया फिर इस बात की पुष्टि हुई । हत्यारे ने बड़ी क्रूरता के साथ मारा था । सर पर २ इंच गहरी चोट का निशान और दोनों पैर टूटे हुए थे । एक ट्रक में रखकर शव को हवाई अड्डे पहुँचाया गया । उनकी तेरहवीं के दिन प्रयाग में उनके अस्थि विसर्जन के समय २ लाख से अधिक लोग जमा थे । सब लोग कहते थे कि दीन दयाल जैसे महात्मा को क्यों मार दिया गया ? वे लोग भी रोए जिन्होंने उन्हें देखा तक नहीं था ।

कपिल सिंह निरंजन
अष्टम 'ख'

'देश के लिए'

जाड़े की अंधेरी रात थी, समय कोई अधिक नहीं हुआ था फिर भी रास्ते सुनसान थे । ठंड इतनी थी कि बाहर निकलना कठिन था । अचानक सामने की सड़क से आने वाली पदचापों की ध्वनि ने वातावरण की नीरवता को भंग कर दिया । ऐसा लग रहा था मानो जैसे कई व्यक्ति एक साथ भागते चले आ रहे हों ।

उनमें सबसे आगे जगजीत था जो एक स्वतंत्रता सेनानी था और मातृभूमि को अंग्रेजों से छुड़ाने के लिये प्रयत्नशील था । उसकी उम्र ५० वर्ष के लगभग थी लेकिन पकड़ से वह धीरे - धीरे दूर होता जा रहा था । अब जगजीत के पीछे आने वाली आवाज बन्द हो गयी थी । शायद सिपाहियों को विश्वास हो चला था कि वे अपने लक्ष्य को न पा सकेंगे । जगजीत ने संतोष की सांस ली तथा अपनी गति धीमी कर दी ।

घर पहुँच कर उसने दरवाजा खटखटाया । उसकी पत्नी लक्ष्मी ने दरवाजा खोला वह अभी भी हाँफ रहा था । ''क्या हुआ ? इतना हाँफ क्यों रहे हो ?'' लक्ष्मी ने दरवाजा बन्द करते हुए पूछा। ''कुछ नहीं बस जरा तेज दौड़ना पड़ा ।'' जगजीत ने पास पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए कहा जगजीत के परिवार में लक्ष्मी के अलावा दो लड़के थे बड़ा राजेन्द्र व छोटा विवेक । राजेन्द्र तो जगजीत के साथ क्रान्तिकारी संगठन का सदस्य भी था ।

''लक्ष्मी मुझे फिर बाहर जाना है ।''

'' खाना खा लो फिर जाना ।'' लक्ष्मी ने कहा । '' यह समय खाने का नहीं है । तुम खाना लेना मैं जल्द ही आता हूँ । जगजीत ने कहा और घर से बाहर निकल पड़े ।

उस कमरे में जगजीत सहित छः लोग बैठे थे । कमरे में हल्की रोशनी थी । ये लोग नये अंग्रेज कलेक्टर विलियम को मारने की योजना बना रहे थे । लम्बे विचार विमर्श के बाद योजनानुसार यह कार्य रफीक व राजेन्द्र को देने का निश्चय हुआ । राजेन्द्र इस योजना से खासा उत्साहित था इतनी जल्दी उसे देश सेवा का मौका मिलेगा उसने सोचा भी न था ।

आज राजेन्द्र व रफीक को अपना कार्य अन्जाम देना वे कल ही उस 'गेस्ट हाऊस' के पास जाकर अपनी योजना का अन्दाज भी ले आए थे । 'गेस्ट हाऊस' के पास स्थित चाय की दुकान इस कार्य के लिये उन्हें सर्वथा उपयुक्त लगी क्योंकि वहाँ से गेस्ट हाऊस साफ नजर आता था ।

निश्चित समय पर दोनों वहाँ आ पहुँचे । दुकान पर सामान्य व्यक्तियों की तरह वे भी चाय

मंगा कर पीने लगे । लेकिन सधी निगाहों से वे सामने ही देख रहे थे ।

'गेस्ट हाऊस' का गेट खुलते ही दोनो उस तरफ बढ़ने लगे उन्होंने अपने - अपने हथगोलों की पिनें निकाल कर उसे सावधानी से पकड़ लिया और जैसे ही विलियम की कार निकली 'भारत माता की जय' कहते हुए उन्होंने हथगोले उसी तरफ उछाल दिये तेज धमाकेदार आवाज के साथ ही उनका काम पूरा हो गया । रफीक व राजेन्द्र ने भागने की कोशिश की किन्तु उन्हें पकड़ लिया गया ।

कलेक्टर विलियम की हत्या की खबर सारे शहर में फैल गयी । जगजीत अपने बेटे की सफलता पर बहुत खुश था । लेकिन उसे राजेन्द्र व रफीक के पकड़े जाने पर अफसोस हो रहा था । राजेन्द्र व रफीक को जेल से छुड़ाने की उन लोगों की योजना सफल नहीं हो पा रही थी । जगजीत घर में बैठे इसी बारे में सोच रहे थे। तभी अहमद आया वह काफी परेशान लग रहा था ।

''क्या हुआ ? काफी परेशान लग रहे हो '' ? जगजीत ने पूछा ''राजेन्द्र गद्दार निकला वह तो अंग्रेजों को सब कुछ बताने को तैयार हो गया ।

'' यह क्या कह रहे हो, अहमद ?'' जगजीत ने चिंतित स्वर में कहा । '' बिल्कुल सच कह रहा हूँ । कल ही तो वह अदालत में गवाही देने वाला है ।'' अहमद बोला ।

ये सारी बातें विवेक सुन रहा था । वह काफी देर तक विचार करता रहा सहसा ही उसके चेहरे पर एक मुस्कान उभरी शायद उसने मन ही मन कुछ निश्चय कर लिया था । आज अदालत में राजेन्द्र की गवाही होनी है । अपने नियत समय पर अदालत की कार्यवाही चालू हुई । कुछ देर बाद पुलिस संरक्षण में राजेन्द्र ने अदालत में प्रवेश किया ।

अभी वह कटघरे तक पहुँचा ही था कि तभी धाँय - धाँय तीन गोलियाँ चली और राजेन्द्र का शरीर कटे वृक्ष की भाँति गिर पड़ा । ये गोलियां चलाने वाला और कोई नहीं विवेक था । जिस भाई ने उसे रिवाल्वर चलाना सिखाया । आज उसे उस भाई पर ही गोलियां चलानी पड़ी । ''मैंने देशद्रोही को मार दिया ...।'' विवेक ने चीख कर कहा तथा उसने स्वयं को भी गोली मार ली ।

धाँय .... की आवाज के साथ विवेक भी जमीन पर गिर पड़ा । अदालत में भगदड़ मच गयी पर जगजीत अपनी जगह ही खड़ा रहा उसके दोनों बेटों की लाशे पड़ी थी । लेकिन जगजीत को लगा उसका एक ही बेटा था जो देश के लिये शहीद हो गया ।

हेमन्त जोशी
नवम 'ख'

भारत - पाक सम्बन्ध

भारत वर्ष की स्वतंत्रता के साथ ही जिस अपार दुःख के कारण सम्पूर्ण भारतवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के बावजूद दुःखी थे, वह था भारत का विभाजन तथा पाकिस्तान का उदय । १९३७ के प्रान्तीय चुनावों में जब कांग्रेस ने ११ में ७ प्रान्तों में बहुमत प्राप्त कर लिया था तो मुस्लिम लीग कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाना चाहती थी परन्तु कांग्रेस द्वारा यह प्रस्ताव नामंजूर कर देने के पश्चात् मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने मुसलमानों को भड़काने के लिए कांग्रेस विरोधी प्रचार करना आरम्भ कर दिया । इसी कड़ी में मार्च १९४० में लाहौर में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में जिन्ना ने मुसलमानों के लिए अलग राज्य ''पाकिस्तान'' बनाने की मांग की ।

यह सुनते ही सम्पूर्ण भारतीय जन-मानस अवाक् रह गया तथा जिन्ना की इस मांग से हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट पड़ना आरम्भ हो गया । अधिकांश मुसलमान जिन्ना के साथ थे । अपनी मांग मनवाने के लिए जिन्ना ने हिंसा का भी सहारा लिया और कलकत्ता में साम्प्रदायिक दंगे आरम्भ हो गये । इसके पश्चात् जब अंतरिम सरकार का गठन हुआ तो मुसलमानों ने विरोध दिवस मनाया तथा पंजाब व बंगाल में पुनः दंगे आरम्भ हो गये । यह तनाव बढ़ता ही गया और इस तनाव के कारण ही ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने भारत व पाकिस्तान दो स्वतंत्र उपनिवेश घोषित कर दिये । इस विभाजन का कारण बहुत हद तक भारतवासियों की आपसी कलह थी । यदि हम लोग तत्कालीन साम्प्रदायिक ताकतों की चाल समझ कर अपने विवेक से काम लेते तो हमारे देश का विभाजन कभी नहीं होता । जिन्ना ने भारत के विभाजन का प्रस्ताव मात्र इसलिए रखा क्योंकि कांग्रेसी मंत्रिमण्डल ने उन्हें अपनी सरकार में शामिल नहीं किया था । इस प्रकार उन्होंने मात्र अपने स्वार्थ के लिए मुसलमानों को भड़काकर इस मसले को धर्म की चादर उढ़ा और वे अपनी मांग मनवाने में सफल हो गये । परन्तु यदि हम राष्ट्रीय एकता का परिचय देते तो देश का विभाजन कभी नहीं होता ।

इस विभाजन हेतु काफी हद तक स्वतंत्र भारत का कमजोर नेतृत्व भी उत्तरदायी था । जिन लोगों के हाथों में नेतृत्व की बागडोर देना सुनिश्चित किया गया था, उन लोगों ने देश की अखण्डता को ध्यान में न रखकर जल्दी से जल्दी कुर्सी पाने को महत्व दिया । हालांकि कई कांग्रेसी नेताओं जिनमें सरदार बल्लभ भाई पटेल प्रमुख थे, ने पाकिस्तान की मांग का कड़ा विरोध किया । सरदार पटेल ने ही देश की अखण्डता बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी । देश की आजादी के समय ५६२ देशी रियासतों में से अधिकांश को भारत में विलय करने का महत्वपूर्ण कार्य उन्होने ही अंजाम दिया था । कई लोगों का मानना है कि यदि उन्हें उपप्रधानमंत्री न बनाकर प्रधानमंत्री बनाया जाता तो देश का विभाजन नहीं होता परन्तु स्वतंत्र भारत के गौरवशाली मस्तक पर विभाजन का यह कलंक लगना था इसलिए ऐसा नहीं हुआ और हम सभी को विभाजन का यह कष्ट झेलना पड़ा ।

पाकिस्तान के गठन के बाद भी वहाँ के लोगों ने हमारे देश की शान्ति को भंग करने का प्रयास किया । आज तक पाकिस्तान से हमारे तीन युद्ध हो चुके हैं । पहला युद्ध १९४७ में दूसरा युद्ध १९६५ में तथा तीसरा युद्ध १९७१ में हुआ था । इन सभी युद्धों की पहल पाकिस्तान द्वारा की गयी थी और तीनों युद्धों में उसे मुँह की खानी पड़ी थी । इसके बावजूद आज भी वे भारत के कश्मीर क्षेत्र में आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं । अभी कुछ दिनों पूर्व ही कारगिल व ड्रास सेक्टरों में पाकिस्तानियों द्वारा घुसपैठ करने का मामला सामने आया था परन्तु भारतीय सेनाओ ने एक बार फिर दुश्मनों को भारतीय क्षेत्र खाली करने के लिए मजबूर कर दिया । इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत व पाकिस्तान के सम्बन्ध सदैव से ही तनावपूर्ण रहे हैं । जब कभी शान्ति, सद्भाव का कोई प्रयास किया गया तो उसे इन युद्धों ने व्यर्थ साबित कर दिया और निकट भविष्य में भी हमें इन सम्बन्धों के सुधरने की कोई सम्भावना नजर नहीं आती है ।

सुमश मिश्रा
नवम 'ग'

भारत का हर सिपाही पत्थर की दीवार है ।

रंच मात्र धरती भी देना, हमें नहीं स्वीकार है ।
भारत का हर सिपाही, पत्थर की दीवार है ।।

जो चोटी से मेरे देश पर, अपनी नजर उठाएगा ।
वह पापी वीरों के द्वारा, मिट्टी में मिल जाएगा ।
जाग उठी है धरती सारी, हर कण पहरेदार है ।।

रंच मात्र धरती भी देना, हमें नहीं स्वीकार है ।
भारत का हर वीर सिपाही, पत्थर की दीवार ।।

बहुत लग चुके हिन्दु - मुस्लिम, भाई - भाई के नारे,
किन्तु और अब हो न सकेंगे, इस धरती के बंटवारे ।
आज हमारे हर नाविक के, पत्थर की दीवार है ।।

रंच मात्र धरती भी देना, हमें न वीकार है ।
भारत का हर वीर सिपाही, पत्थर की दीवार है ।

तूफानों में बाल न बाँका, होगा मेरे देश का,
मूल्य चुकायेगा हर सैनिक, अपने सैनिक वेश का ।
देने को बलिदान, आज हर वीर सिपाही तैयार है ।।

रंच मात्र धरती भी देना, हमें नहीं स्वीकार है ।
भारत का हर वीर सिपाही पत्थर की दीवार है ।।

क्रांति कंचन मिश्र
नवम 'ख'

शहीदों की याद

ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।
अपने देश की हम लाज बचायेंगे ।

तेरी कुर्बानियों को हम न भुलायेंगे ।
भ्रष्टाचारी के मुख से नकाब हटायेंगे ।

तेरे कर्ज का हम मोल चुकायेंगें ।
ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।

भारत माता तेरी आँख को झुकने न देंगे ।
तेरी प्रगति की रफ्तार को रूकने न देंगे ।

धरती की मिट्टी का हम मोल चुकायेंगे ।
तेरी आन पर हम बलि चढ जायेंगे ।

ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।
भारत वर्ष को हम स्वर्ग बनायेंगे

सत्य धर्म से इसकी हम नींव बनायेंगे ।
खून पसीने से हम इसका भाग्य बनायेंगे ।

भारत की शोभा को देख सब ललचायेंगे ।
इसे हम फिर से जगद्गुरू बनायेंगे ।
ऐ शहीद तेरी कुर्बानी दिल में बसायेंगे ।

सौरभ तिवारी
नवम् 'ग'

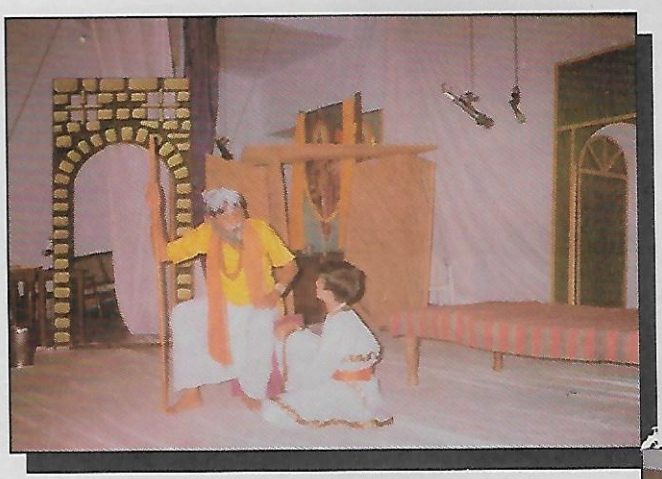

वार्षिकोत्सव ९८
सांस्कृतिक कार्यक्रम 'प्रतिशोध' के एक
दृश्य में चि. अभिषेक अग्निहोत्री एवं
चि. तन्मय मिश्र

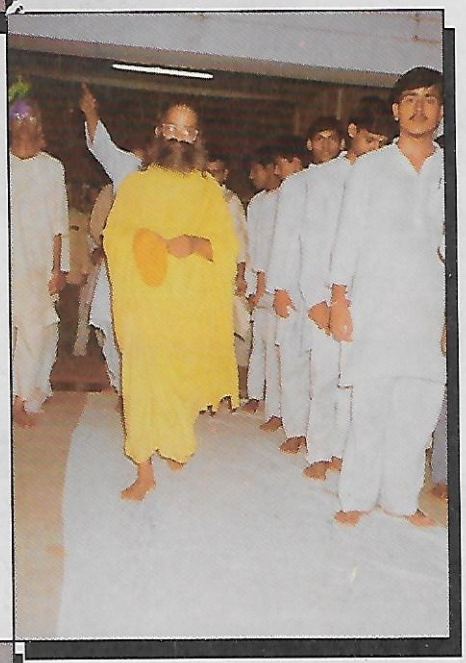

पूज्य चरण 'स्वामी देवादास जी महाराज'
'श्री कृष्ण छठी' उत्सव पर
छात्रों के मध्य

विद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा आयोजित
शिक्षा-संगोष्ठी के अवसर पर
डा. सुनील गुप्त (पूर्व छात्र)
मा. वीरेन्द्र जीत सिंह तथा
डा० नरेन्द्र सिंह गौर
का स्वागत करते हुए

जनपद विजेता बाल कबड्डी टीम के कप्तान पवन त्रिवेदी व श्रेष्ठ खिलाड़ी विनोद सिंह प्रधानाचार्य जी से 'ट्रफी' प्राप्त करते हुए

'वार्षिकोत्सव ९८'
भारत का भावी वैज्ञानिक
विज्ञान प्रदर्शनी में अपने मॉडल
के साथ (अनीश वत्स्य, दशम कक्षा)

'समर्पण'
छात्रों को सम्बोधित करते
एअर कमोडोर श्री एस. पी. सिंह जी

'वार्षिकोत्सव ९८'
प्रतिभाशाली छात्र वि. प्रतीक सिंह (नवम) को
पुरस्कृत करते सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्
डा. मुरली मनोहर जोशी

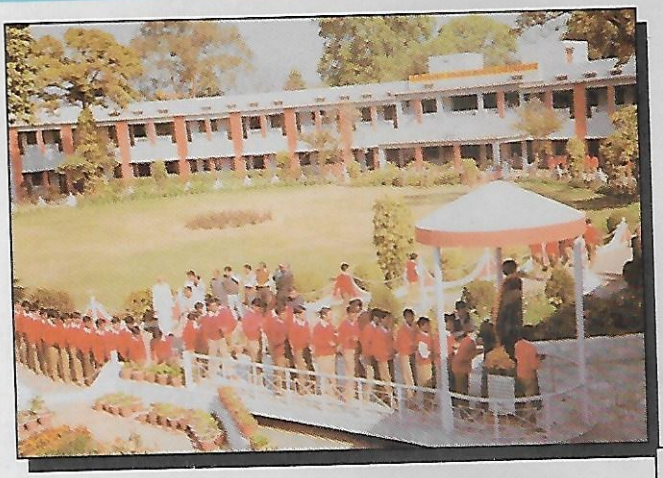

युग पुरुष दीनदयाल उपाध्याय की
पुण्य तिथि पर उनकी प्रतिमा को
श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए
विद्यालय के छात्र

'वार्षिक खेलकूद ९८-९९'
विजयी छात्र आचार्यों के साथ

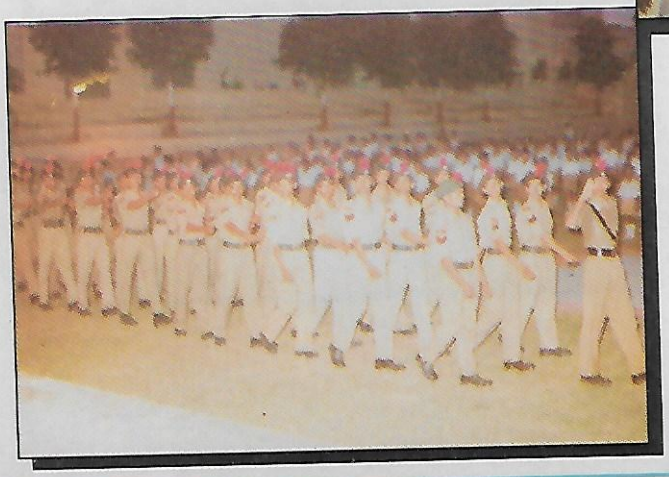

'वार्षिकोत्सव - ९८'
मुख्य अतिथि को सलामी देते विद्यालय
के जे. डी. व एस. डी., एन. सी. सी. के
छात्र

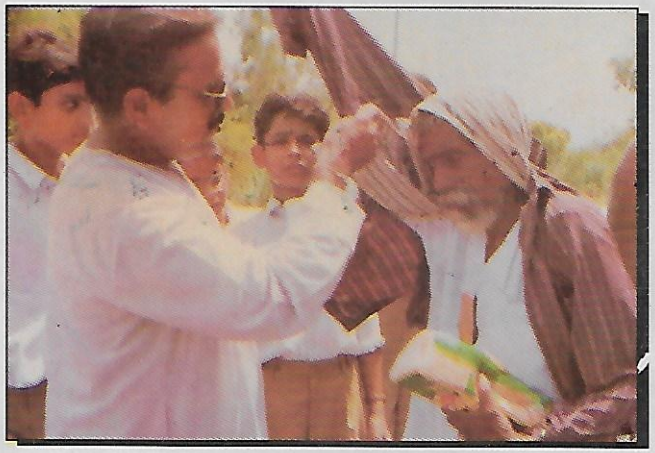

जलमग्न ग्रामो में बाढ़पीड़ितों की
सहायता के लिए तत्पर विद्यालय के
अग्र आचार्य
श्री श्रीप्रकाश ओझा जी के साथ

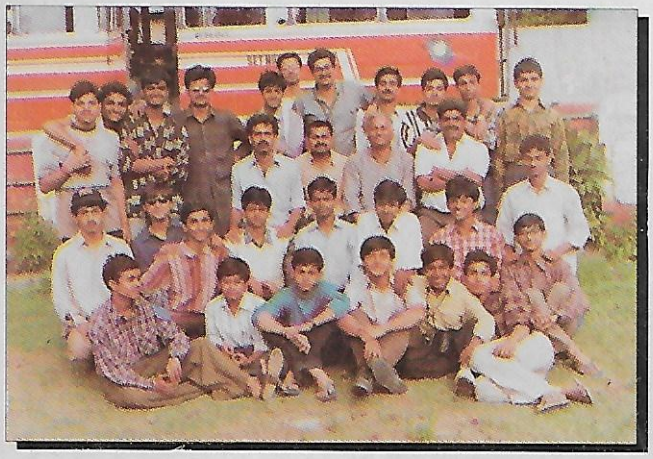

'बद्दरी - केदार यात्रा' में शामिल
आचार्यों तथा पूर्व अग्रों के साथ
विद्यालय के अग्र

आरोहण

किशोरों का उत्साह जिनके
कल्पना-प्रवण मन एवं
संस्कारक्षम जीवन
पर देश को
गर्व है।

आई. एस. आई. : एक खतरनाक खुफिया संस्था

कारगिल मोर्चे पर भारत अपना तिरंगा फहरा चुका है। पाकिस्तान को उसकी धृष्टता का जवाब मिल गया है। भारतीय सेना से हर लडाई में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी है। परन्तु मुहम्मदगोरी की नीति का उपासक पाकिस्तान तीन युद्धों में बुरी तरह परास्त होने के पश्चात् भी इन युद्धों पर डटा हुआ है। परन्तु वह नहीं जानता है कि इस भारतभूमि पर जन्म लेने वाला एक-एक बच्चा अपनी भारत माँ का अपमान नही बर्दाश्त कर सकता चाहे उसके लिये उसे आत्माहुति ही क्यों न देनी पड़े ?

कायरता का प्रतीक वह कभी सियाचिन में घुसपैठ कराता है तो कभी बम्बई में विस्फोट कराता है। अगर इन सारी घटनाओं का अध्ययन करें तो इनमें कोई भी समानता नहीं दिखाई देती है परन्तु जब हम जाँच की उन फाइलों को उठाते हैं जो चिल्ला-चिल्लाकर सबूत दे रही है कि इन सारी घटनाओं के पीछे पाकिस्तान की विध्वंसकारी खुफिया संस्था "आई. एस. आई" का हाथ है। अमेरिका जो भारत का बहुत बड़ा सहायक होने का दावा करता है वास्तव में उसकी भी नीयत भारत के प्रति ठीक नहीं हैं। एक तरफ तो वह पाकिस्तान की नीतियों का विरोध करता है तथा दूसरी तरफ पाकिस्तान को युद्ध के लिये हथियार भेजता है, इसका एक प्रमाण यह भी है कि अमेरिकी खुफिया एजेंसी "सी० आई० ए०" पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी "आई. एस. आई" का धाय माँ की तरह पालन पोषण कर रही है।

"आई. एस. आई." (इण्टर सर्विसेज इण्टेलीजेंस) के नाम से जानी जाने वाली यह संस्था हमारे देश में अपने एजेंटों को भेजती है और उनको पैसे का लालच देकर अपने विध्वसंक कार्यों को अन्जाम देती है। जब आरम्भ में इस संस्था की स्थापना हुयी थी तो इसका उद्देश्य पाकिस्तान के हितों से जुड़े मामलों से सरकार को अवगत कराना था, परन्तु कुछ वर्षो से यह संस्था अपने उद्देश्य को भुलाकर भारत के लिये घिनौने, खतरनाक कार्य कर रही है। यह संस्था विदेशों में अब यहाँ तक सक्रिय हो चुकी है कि इसके एजेंटों द्वारा वहाँ की सरकारों का बनना बिगडना सब इसी पर निर्भर करने लगा है। "आई० एस० आई०" ने भारत के प्रति अत्यधिक खौफनाक रूप धारण कर रखा है। इस संस्था ने अफगानिस्तान में तालिबान नामक संस्था का गठन किया है, जिसमें शिक्षा के बहाने विद्यार्थियो को पाकिस्तानी विद्यालयों से आतंकवाद कर प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये भेजा जाता है। यहाँ विद्यार्थियों को छद्म युद्ध की कला से विद्रोह करने, आंतकवाद फैलाने, मादक द्रव्यों से कमाई के गुर सिखाने सम्बन्धी प्रशिक्षण दिये जाते हैं। उनमें ये कूट-कूट भर दिया जाता है कि इस्लाम और पाकिस्तान ही तुम्हारा सब कुछ है, इसका जो विरोध करे वह तुम्हारा शत्रु और उसको दण्डित करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। जब ये मासूम आतंकवादी का रूप धारण कर लेते हैं तो इन्हें सीमा पर भारत में शान्ति भंग करने के लिये भेज दिया जाता है।

भारत में आई० एस० आई० हर क्षेत्र में सक्रिय है। उसके एजेंट कश्मीर में घुसपैठिये, पजांब व हरियाणा में सिख आतंकवादी, उत्तरप्रदेश, नेपाल सीमा पर मदरसों के संचालक के रूप में कुख्यात हैं। ऐसा

नहीं है कि आई० एस० आई० केवल खून खराबा करती है बल्कि यह वह कार्य भी करती है जो गैर कानूनी है। अभी कुछ समय पहले ही बतौर आई. एस. आई. एजेन्ट भारतीय सेना की गोपनीय गतिविधयों की सूचना देने वाला भगोड़ा सैनिक 'जफर' पकड़ा गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सेना के इतने चुस्त दुरूस्त रहने के बाद भी यह धृष्टता हुयी तो अन्य सामान्य जानकारियॉ हासिल करना इस खुफिया संस्था के लिये कोई कठिन कार्य नही हैं।

भारत का स्वर्ग 'कश्मीर' जिसे पाकिस्तान हथियाना चाहता है, आई० एस० आई० ने अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बना रखा है। यह संस्था अपने एजेंटों द्वारा यहाँ के लोगों में त्रासदी फैलाकर यह स्थान खाली कराना चाहती है जिससे उसके एजेंट यहाँ के निवासी के रूप में यहीं बस जायें और अपने लक्ष्य को अंजाम तक पहुँचायें। परन्तु हमें वहाँ के निवासियों की प्रशंसा करनी होगी जो यहॉ की त्रासदी झेलते हुये भी यहाँ निवास कर रहे हैं। वास्तव में आजाद कश्मीर उन्हीं की बदौलत भारत से अलग नही है। कश्मीर वर्षो पुरानी शैव अस्मिता और इस्लामी अस्मिता के सम्मिश्रण की भूमि है। "११ मई सन् १९९५ की तारीख को कोई न भुला सकेगा जिस दिन कश्मीर के आतकंवादियों और उनके साथ भाड़े के सैनिकों ने ऐसा काण्ड किया था जिससे कश्मीर में रहने वाले बच्चे-बच्चे की रूह काँप गयी थी। इस षड़यन्त्र के पीछे भी आई० एस० आई० का दुष्चक्र था।

"हम अपने देश को कातिल के फंदों से बचायेगें,
बहारे गुल को आवरा परिन्दों से बचायेगें।
बचायेगें हर कीमत पर अस्मिता माँ की,
कि आंचल की वतन की आबरू को हम
दरिन्दों से बचायेगें"।

आई०एस० आई० हो या सी० आई० ए०, इनमें से किसी को किसी से मोहब्बत नहीं, इनके लिये नफरत ही सब कुछ है। हमें जागना होगा। इस प्रकार की संस्थाओं के बहुरूपिये जो हमारे देश में घुसकर आतंक फैलाने की चेष्टा कर रहे हैं, उन आस्तीन के सांपों को बाहर खदेड़ना होगा । हमारा यह पुनीत कार्य ही हमारी सधाना होगी।

उठो जगाने आया है सीमा का अत्याचार,
नहीं रूक सकेगा भारत जनगण का पारावार।
जाग फिर मातृ-शक्ति ले भारत की तरूणाई,
धूमिल मत हो कभी शौर्य-पुंजों की चिर अरूणाई।!

आशीष शुक्ल
दशम 'क'

नया छन्द फिर लिखता हूँ ।

लो लिख डाली मैनें कविता,
अब खड़ी सामने, बड़ी समस्या।
कैसे किसको मैं दिखलाऊँ
कैसे सम्प्रेषित करवाऊँ
डर लगता था उपहास न हो,
इन छन्दों का परिहास न हो,
मन मेरा डॉवा-डोल हुआ,
भूचाल हुआ भूडोल हुआ।

इस हलचल का भी कारण था।

मैं नहीं भूलता आज अभी तक,
सर्वप्रथम जब मैंने कुछ, भावुक छन्दों को जोड़ा था,
कुछ मूढ़ों ने उपहास उडा मेरे छन्दों को तोड़ा था,
उस दिन यह भावुक हृदय द्रवित हो,
बिलख-बिलखा कर रोया था, आँखों से जल की धार बही,
पोंछे भी कौन ! अकेला था।

पर समय चक्र क्या रूकता है?
यह समय पुनः गतिमान हुआ,
वेदना हटी कुछ ज्ञान हुआ,
तब भावों का आह्वान हुआ,
फिर छन्दों का निर्माण हुआ।
गुरूओं ने आशीर्वाद दिया,
कुछ सरस्वती ने साथ दिया,
बजरंग बली का ध्यान किया,
तब कविता का निर्माण किया।

अब कविता तो पूरी कर दी है,
सबके समक्ष भी रख दी है,
अब हास करो, उपहास करो,
जो जी में आये आज करो,
दो विदा अभी मैं चलता हूँ,

गौरव दुबे
एकादश 'ख'

वाणी की शुद्धि

आज मैंने समझा है, प्रभु ! कि
तुम्हारी स्तुति करने से पहले
मुझे अपनी वाणी को शुद्ध करना चाहिये।
जिस वाणी से मैं तुम्हारे साथ बात करना चाहूँ
वह वाणी सत्यपूत, पवित्र तथा मृदु होनी चाहिये।

देखों तो प्रभु हमारे कितने
दोषों से हमारी वाणी मैली होती है।

सकंट के भय से अथवा लाभ की आशा से
और कभी सिर्फ दूसरे पर रौब डालने के लिये
हम झूठ बोलते हैं।
एक दूसरों के बीच फूट डालते हैं,
मजाक उड़ाते हे और उपहास करते है, तब
हमारी वाणी मात्र तलवार की धार बन जाती है।
क्रोध, कठोरता या कटाक्ष से वाणी के शब्द झुलस जाते हैं।

वक्त बिताने के लिये हम बहुत सी शक्ति बरबाद करते हैं,
वो भी निरर्थक बातों में।
अपनी कमजोरियों को जाने बिना
दूसरों पर टीका-टिप्पणी करते हैं।
तुलना करते हैं,
वे क्या करते क्या नहीं, उसका व्यर्थ ही हिसाब रखते हैं।

वाक् पटुता के जोर,
गलत बातों का प्रतिपादन करते हैं।
कुतर्कों पर बल देते हैं।
दूसरों की बातों को तल्लीनता से सुनते ही नहीं।
प्रश्न पूछकर, जबाव सुने बिना ही, अपनी बात को,
रस पूर्वक कहते हैं।
किन्तु मैं यदि अन्दर से जरा शान्त बनूँ और सोचूँ

वाणी जैसा अपना अमूल्य साधन किस तरह
व्यर्थ ही खर्च कर डाला।

इसका मुझे पता चले और मैं मौन की महिमा समझूँ।
फिर मैं आवेश में,
अनजाने में,
ऐसा वैसा न बोल दूँ।
जरूरत हो तभी, सत्य हो तभी
मधु हो तभी, न चुभने वाला बोलूँ।
चर्चा विचार में योगदान दूँ।
किन्तु मेरी बात ही सही तथा
दूसरों की बात गलत, ऐसा आग्रह न करूँ।

तब ही मेरी वाणी सत्य और प्रेम से जन्म लेगी,
वह तोड़ने वाली नहीं, जोड़ने वाली होगी।
मेरे वचन मधुर और हितकारी होगे,
मेरी वाणी शुद्ध बनेगी।

फिर उस वाणी से प्रभु,
मैं तुम्हारे साथ बात कर सकूँगा और
मुझे विश्वास है कि तुम उसे सुनोगे।

अनीश वात्स्य
दशम (क)

"प्रकाश स्तम्भ भगत सिंह"

आज आजादी की अर्धशती पूरी हो चुकी है। इस क्रान्तिकारी धारा के संशक्त प्रतिनिधि, जिनके आदर्श व विचार आज के दौर में प्रासंगिक हो गये हैं। परन्तु भारतीय स्वतन्त्रता सग्रांम के अमर गायक भगत सिंह आज भी प्रेरणा स्रोत हैं। भगत सिंह मात्र १८ वर्षो को उम्र में १९२५ में नौजवान भारत सभा के महासचिव बने और २३ मार्च १९३१ को करीब २ वर्ष गुजारने के बाद अपने साथियों राजगुरू और सुखदेव के साथ फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिये गये। मृत्यु के समय वे सिर्फ २३ वर्ष के थे। इस छोटे से कार्यकाल में और इतनी कम उम्र में राष्ट्रीय स्तर पर क्रान्तिकारी गतिविधियां संगठित करने के साथ-साथ उन्होनें तमाम विषयों पर इतना कुछ पढ़ा व लिखा कि सोचकर अचम्भा होता है।

क्रूर अग्रेज शासकों ने इस प्रकार मस्तिष्क को, जिसको लोकप्रियता उस समय आसमान छू रही थी, खत्म कर देने में अपनी खैरियत समझी और भगत सिंह की लोक प्रियता गांधी जी के नेतृत्व के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभर रही थी। अधिकृत कांग्रेस इतिहास खुद बताता है "यह अतिशयोक्ति न होगा कि उस समय भगत सिंह का नाम सम्पूर्ण भारत में जाना जाता था और उतना ही लोकप्रिय जितना कि गांधी जी का नाम" अग्रेंजों व काग्रेंसी नेतृत्व के बीच भगत सिंह की फांसी को लेकर मौन-सहमति का मूल आधार भगत सिंह का क्रान्तिकारी से मार्क्सवादी की ओर सक्रमण था। खुद गांधी जी की स्वीकारोक्ति के अनुसार उन्होंने फांसी रद्द करने के सवाल को इरविन के साथ समझौते की पूर्व शर्त नहीं बनाया, वे इतना ही चाहते थे कि मृत्युदंड को कांग्रेस का कराची अधिवेशन होने के पहले ही लागू कर दिया जाय और हुआ-भी यही। क्रान्तिकारी धारा, जिस पर आरम्भ में तीव्र हिन्दू भावनाओं का असर था, क्रमशः मार्क्सवादी में परिवर्तित हो गयी। भगत सिंह इस सक्रमंण के प्रतीक पुरूष थे और उन्हीं के साथ यह धारा भी समाप्त हो गयी।

"२ फरवरी १९३१" को युवराजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम अपनी अपील में भगत सिंह ने नौजवान राजनीतिक कार्यकर्ताओं को मार्क्सलेनिन का अध्ययन करने की सलाह दी। उन्होने पेशेवर क्रान्तिकारियों को लेकर पार्टी निर्माण की लेनिन वादी धारणा की हिमायत की और लिखा " पार्टी को अपने काम को शुरूआत आवाम के मध्य प्रचार से करनी चाहिए... किसानों वा मजदूरों को सगठित करने ओर उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त जरूरी है। नौजवानों के लिए भगत सिंह का यह आखिरी आह्वान आज भी उतना प्रासंगिक है जितना कि उस समय था। आजाद भारत में सरकारों प्रतिष्ठानों ने जितना ही भगत सिंह को उपेक्षित करने व स्वतन्त्रता के इतिहास में हाशिये पर धकेलने को कोशिश की है उतना ही वे जानता के दिलों में अपनी जगह बनाते गये हैं। गली, चौराहों, दुकानों आदि पर भगत सिंह की तस्वीरें सबसे ज्यादा बिकती हैं। लोगों की पहलकदमी से भगत सिंह की याद में हजारों शहीद स्तम्भ देश के कोने-कोने में नजर आते हैं। भारत की आजादी को लड़ाई में यदि जननायक का दर्जा किसी को मिलना चाहिये तो वह सिर्फ भगत सिंह ही हो सकते हैं। भगत सिंह क्रान्तिकारी युवा मानस के प्रेरणा स्रोत ही नहीं अपितु वे इसके प्रकाश स्तमभ भी हैं।

विकास शुक्ल
10 'ख'

कहाँ आ गये हम

सत्य को छोड़ कहाँ पर आ गये हम।
सुरधाम को पाने वाले, भव सिन्धु में समा गये हम।।
और आज,
दूर से रोने की आवाज, आज हम सुनते नहीं।
स्वार्थ का निर्यात, आयात पुरूषार्थ का करते नहीं
गिरते हुये को सहारा, भूलकर देते नहीं।
रोशनी करना तो दूर, गर्त हम भरते नहीं।।

ओंकार का नाद वेदों , की वाणी दब रही है।
घर-घर की श्रृंगार गीता, आज फिर खो रही है।
और जब ढूढ़ा रामायण और बीजक, सतसई को,
तो यह म्यूजियम के शीशे में ढ़की दिख रही है।।

छोड़ बैजू तान को, पॉप की झन्कार लाये।
छोड़ भाव कला को, मॉर्डन आर्ट लाये।
छोड़ चत्र की प्रतिपदा, पहली जनवरी त्योहार लाये।
देश को सपने हृदय से, इतना दूर क्यों लाये।।
वक्त के पहले संभल सके न,
प्रलय पतन को भाँप सके न,
सोया सौभाग्य जगा सके न,
तो फिर,

भविष्य के लिये वर्तमान बनेगा,
असह्य, दुःख दायी विष का प्याला,
फिर पश्चिम से ऐसी हवा चलेगी,
बुझ जायेगी प्राचीन स्वर्णिम ज्वाला।।

कुलदीप राजपूत
दशम 'क'

'यौवन'

उठो ओ नवजवानों देख लो अपनी कहानी यह
बनो ऐसे कि कर दो सत्य अपनी जिन्दगानी यह।
जवानी रक्त के तूफ़ान की अनुपम कहानी है
शिवा का शौर्य गुरू का तेज इसकी ही निशानी है।
जवानी फूँक भर दे जो तो हाहाकार मच जाये
गरज कर बोल दे जो तो ये धरती डगमगा जाये।
जवानी थरथरा देती सभी को वह अवस्था है
जवानी बदलकर भूगोल रख दे वह व्यवस्था है।

जवानी ठान ले जो कुछ तो फिर थामे नहीं थमती
पहुँचकर लक्ष्य पर अपने कि अगंद-पॉव सी जमती।
जवानी के हृदय में लहरती है प्यार की गंगा
मिटाती है मगर उसको करे जो युद्ध का धंधा।
जवानी हो भले ही चार दिन की हो मगर ऐसी
कि जो युग क्रांति लाने में सफल होती रहे वैसी।
जवानी को न आँधी और बंजर रोक पाते हैं
दिलों के दहकते शोले से सितम पर फूट जाते हैं।

जवानों उठ पड़ों कुछ कर दिखाने का समय है यह
निशा के अंध तम को भेदने का ही समय है यह।
भयानक ये घने बादल उमड़ कर आ रहे है जो
उन्हें क्षण में मिटा दे तो सफल तेरी कहानी है।
जवानों के हृदय में देशहित का ज्वार उठता है
भगाने भूत भय का देश से किंचित न हटता है।
जवानी मर भले जाये निशानी छोड़ जाती है
लिखे इतिहास के पन्ने सदा ही छोड़ जाती है।।

✍ *आशीष तिवारी*
दशम - क

'जीव विज्ञान' बनाम 'गणित'

(व्यंग्य)

"Maths is just as a point in the world of Biology".

मानव जाति का स्वभाव रहा है कि उसकी गति कभी भी एक दिशीय नही रहती चाहे वह शिक्षा का ही क्षेत्र क्यों न हो। दशम उत्तीर्ण किया नहीं कि एक झंझट आ धमका- ''गणित या जीव विज्ञान''

अब तक आपने जीव विज्ञान को हेय दृष्टि से देखा होगा लेकिन इस लेख को पढ़ने के बाद आप कुछ सोचने के लिये अवश्य मजबूर होगें।

"लन्दन देखा पेरिस देखा और देखा गणितांक,
सारे जग में कहीं नहीं है ऐसा जीव विज्ञान।"

भूख ! भूख ! भूख ! इस सृष्टि की सबसे बड़ी समस्या है तो भूख ! यह पेट की आग ही सभी पापों का मूल है और इस आग का समाधान आप α,β,ν, और β से नहीं कर सकते, इसका समाधान तो पेड़-पौधों की किस्में **'Eugenics'** के द्वारा सुधारकर जीवनविज्ञान ही कर सकती है।

गणित ने क्या दिया, भौतिकतावाद की झूठी चमक। उसने रोबोट तो बना दिया लेकिन उसमें जान न डाल सका।

कुछ तथ्यों की ओर ध्यान दें। हमारे इंजीनियरों ने देश को क्या दिया कच्चे पुल, ढ़हती इमारतें, गड्ढेदार सड़कें और टूटते बॉध। पर कहानी यहीं खत्म नहीं होती, नागासाकी और हिरोशिमा के विस्फोट पर तो मानवता आज तक सिसकियॉ भरती है, पर टूटे दिलों को जोड़ने का काम किया तो जीव विज्ञान ने। प्लेग, एड्स कैंसर, हेपिटाइटिस और न जाने क्या-क्या चुनौतियाँ नहीं आयीं पर वाह रे जीव वैज्ञानिकों ! तुमने कभी हार नहीं मानीं, लेकिन जब गणितज्ञों पर देश की सुरक्षा की एक चुनौती आयी तो बोफोर्स का एक गोला भी न बना पाये।

वस्तुतः प्रश्न यह नहीं है कि आप जीव विज्ञान पढ़ें या गणित। आप जो भी पढ़ें मन लगाकर पढ़े और आप की पढ़ाई इस राष्ट्र और मानवता के काम आ सके।

विवेक यादव
द्वादश 'ख'

भारत की सांस्कृतिक विरासत: खजुराहो

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में भारत की विशाल सांस्कृतिक धरोहर खजुराहो के मन्दिर स्थित हैं। वक्त की तिजोरी में गर्द खा रहे इन मंदिरों को झाड़-पोंछ कर पुरातत्व विभाग ने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया और आज यहाँ देश-विदेश के सैलानी इनके दर्शन हेतु खजुराहो आते हैं। कालान्तर में समय की धूल ने इन मंदिरों को पूरी तरह ढक लिया था, परन्तु बाद में १८१८ ई० में फ्रेंकलिन ने पहले-पहल खजुराहो क्षेत्र के सर्वेक्षण के दौरान इनकी झलक देखी। सन् १८५३ ई० में ये मन्दिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को सौंपे गये।

ऐसी मान्यता है कि इनके मुख्य प्रवेश द्वार पर दो खजूर के वृक्षों के होने के कारण इसका नाम खजुराहों हो गया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसे चिःचिःतौ, अलबरूनी ने जेजाहुति तथा संस्कृत पण्डितों ने जेजाक मुक्ति मण्डल के नाम से पुकारा। मतंगेश्वर, वाराह मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, पार्वती मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, भगवती जगदम्बा मंदिर, चौंसठ योगिनी व जगत् प्रसिद्ध कान्दरिया महादेव मन्दिर खजुराहो परिवार के सदस्य हैं।

इन मन्दिरों का निर्माण स्वयं को चंद्रदेव का उत्तराधिकारी मानने वाले चन्देल वंशीय शासकों ने करवाया। प्रारम्भ सर्वप्रथम चंदेल शासक हर्षदेव द्वारा मंतगेशवरमंदिर के शिलान्यास से हुआ। उसके पश्चात् उनके पुत्र यशोवर्मन ने लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया। यशोवर्मन के उत्तराधिकारी धगदेव और उसके पुत्र गण्ड ने क्रमशः जिननाथ, शंभूदेव, वैद्यनाथ तथा चित्रगुप्त व जगदम्बा आदि प्रख्यात मंदिरों का निर्माण करवाया। तत्पश्चात् गण्ड के प्रतापी पुत्र विद्याधर ने कान्दरिया महादेव का मंदिर बनवाया। चन्देलों द्वारा ८५ मन्दिरों के निर्माण के साक्ष्य उपलब्ध हैं, परन्तु अभी तक २६ मन्दिर ही प्रकाश में आये हैं। हाल ही में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने खजुराहों सहस्त्राब्दी उत्सव प्रारंभ होने के कुछ समय बाद ही एक नया मंदिर खोज निकाला। यह नवसात मंदिर शिवमन्दिर है। ये मन्दिर शिलाखण्डों को आपस में फँसाकर इस प्रकार बनाये गये हैं कि दस शताब्धियाँ बीत जाने के बाद भी इनका मूल स्वरूप सुरिक्षत है। लोगों के अनुसार इन मंदिरों की दीवारों पर प्रेम-आलिंगन बद्ध मूर्तियाँ हैं, परन्तु तथ्य यह है कि शिवशक्ति, नंदी, गजानन, सरस्वती और देव प्रतिमाओं से युक्त मंदिरों के बाहर अंकित कामरत प्रतिमाएँ कुत्सित यौनाचार की नहीं, अपितु शाक्त-तांत्रिक और शैव-अघोर सम्प्रदाय की तन्त्र पूजा की विधियों की द्योतक हैं। परन्तु अत्यन्त खेद का विषय यह है कि पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रयासों के बावजूद यह विरासत क्षत-विक्षत हो रही है। अतः यदि हम इस सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो न केवल हमें स्वयं तन, मन और धन से पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की सहायता करनी होगी अपितु भारतीय समाज को इस कार्य के लिए प्रेरित व जागृत भी करना होगा।

वैभव गुप्त
द्वादश 'ख'

इक्कीसवीं सदी का भारत

लगभग २५ वर्ष पूर्व अंग्रेजी-साहित्य के एक लेखक ने एक बहुत रोचक लेख लिखा था। उसका शीर्षक था- 'इक्कीसवीं सदी की दुनिया'। इस लेख में यह बताया गया था कि इक्कीसवीं सदी में मानव-समाज औद्योगिक विकास की अनेक मंजिलें तय करते हुए उस जगह जा पहुँचेगा जहाँ आदमी शून्य होगा और मशीनें सर्वोत्तम। वह चाँद तक पहुँचेगा और आकाश पर जगमग करते सितारों की खोज करेगा; किन्तु मशीनों के माध्यम से। विकास के अन्तिम चरण में मनुष्य स्वनिर्मित मशीनों का दास होकर रह जायेगा।

अपनी सदियों पुरानी परम्परा और सांस्कृतिक विरासत को लिए हुए भी भारत आज निरन्तर परिवर्तन की विविध मंजिल तय कर रहा था परन्तु मशीनीकरण से तो उसका नक्शा ही बदल गया है। हमारे देश में अरबों रूपयों के बजट पर आधारित पचंवर्षीय योजनाएं तैयार हो रही हैं। इनके माध्यम से भारत में आधुनिकरण की दिशा में पूरा प्रयास किया जा रहा है किन्तु आधुनिकीकरण का लाभ देश के अधिसंख्यक वर्ग को मिल सके ऐसी व्यवस्था हमने आज तक नहीं की। परिणाममतः २१ वीं सदी में पहुँचते-पहुँचते ऐसी स्थिति भी आ सकती है जबकि भारत का एक बहुत छोटा सा वर्ग अति आधुनिक साधनों और सुविधाओं का भोग कर रहा हो और एक बहुत बड़ा वर्ग अपने खेतों की मेड़ों पर बैठा १८ वीं सदी की खुरपियों से अपने पशुओं के लिए घास छील रहा हो।

कल्पना कीजिए कि २१ वीं सदी में भारत का एक वर्ग वह हो जायेगा जो केवल अपने हाथ की एक उँगली से बटन दबाकर रात का खाना अपनी मेज पर मँगवाकर और फिर उसी हाथ से बटन दबाकर जूठे बरतन साफ कराएगा। वह अपने शयन कक्ष में बैठकर केवल विदेशों में वार्ता ही नहीं बल्कि उन्हें साकार रूप से देखेगा भी। दूसरी ओर देश का वह वर्ग भी २१ वीं सदी की कल्पना से अलग नहीं किया जा सकता जो आगामी एक दशक बाद भी अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बेबसी से भटक रहा होगा। वह दाल-रोटी, स्वच्छ जल, सिर पर एक छत तथा शरीर पर ढकने के जए जरूरी वस्त्रों के विषय में सोच-सोचकर २१ वीं सदी का स्वागत कर रहा होगा।

इक्कीसवीं सदी में जाने की जैसी हड़बड़ाहट हमें है वैसी अन्य किसी देश में नहीं है। जैसे कि यह देखा जाएगा कि कौन पहले आया, और कौन बाद में, और बाद में आने वाले को उस सदी से बाहर कर दिया जायेगा। शायद हमें लग रह है कि वह कोई 'सिमसिम' है जो हमारा भाग्य खोल देगी; किन्तु हमें आज भी देश की विकास की आशाएं हैं। निश्चय ही नए और भारी उद्योगों की स्थापना के बाद कृषि के तरीकों में व्यापक परिवर्तन करके तथा लोगों के चिन्तन और उनकी मानसिकता में परिवर्तन लाकर हमारा देश ऐसी सुखद स्थितियों का निर्माण कर सकेगा कि यहाँ का प्रत्येक देशवासी समृद्ध और आराम दायक जीवन व्यतीत कर सकेगा। हम यह विश्वास दिलाते हैं कि २०१० ई० तक हम विकास की उस सीमा तक पहुँच जायेगें कि जब हमारे देश का कोई बच्चा भूखा नहीं सोएगा, कोई तन ऐसा नहीं होगा जो वस्त्रहीन रह जाए और कोई ऐसा परिवार नहीं होगा जिसके सिर पर छत न हो।

नरेन्द्र कुमार प्रजापति
द्वादश 'ख'

इक्कीसवीं सदी : जर्जर होते रिश्ते

वृद्धाश्रम के इंचार्ज स्वामी जी ने आश्रम में रह रही एक वृद्धा के पुत्र के घर टेलीफोन किया और उनकी माँ की अस्वस्थता की सूचना दी कि उनकी हालत ठीक नहीं है; हो सके तो उन्हें घर ले जाओ। लड़के का संक्षिप्त सा उत्तर था, "स्वामीजी मैं तो कम्पनी के कार्य से तुरन्त मुम्बई जा रहा हूँ। आप ही माताजी को दवा दिलवा दें, मैं पैसे भेज रहा हूँ। मैं वापस आकर बात करूँगा और टेलीफोन कट गया।

स्वामी जी ने अपना कर्तव्य पालन करते हुए वृद्धा का ठीक प्रकार से इलाज करवाया और उनकी सेवा में जी जान लगा दी। परन्तु वृद्धा का स्वास्थ्य नहीं सुधरा और उनका स्वर्गवास हो गया।

उनका बेटा अभी घर नहीं लौटा था, मुम्बई में ही था। स्वामी जी ने मुम्बई का नंबर पता करके उससे बात की, "बेटा! होनी को कौन टाल सकता है। हमने अपनी तरफ से आपकी माताजी के इलाज में कोई कसर नहीं उठा रखी परन्तु आज प्रातः उनका स्वर्गवास हो गया । आप अपनी माता के दाह-संस्कार के लिये उनका पाथिव शरीर यहाँ से ले जाइये।"

"पर स्वामीजी, इतनी जल्दी मेरा मुम्बई से वहाँ पहुँचना नामुमकिन है। यहाँ कम्पनी की वेरी इम्पार्टेंट मीटिंग हो रही है, मैं मीटिंग छोड़कर नहीं आ सकता। आप माँ का दाह संस्कार वहीं कर दें, इ न की चिन्ता न करें, मैं पैसे भेज रहा हूँ।

" पर बेटे, माँ को मुखाग्नि तो पुत्र ही देता है, यही हमारी परंपरा है, हमारी संस्कृति है। माँ की आत्मा की शान्ति व सद्गति हेतु आवश्यक है कि पुत्र ही माँ को मुखाग्नि दे।

"लेकिन स्वामीजी मैं कम्पनी को काम के छोड़कर नहीं आ सकता। मेरा निवेदन है कि आप माँ को मुखाग्नि दे दें। आप जैसे महात्मा के हाथों मुखाग्नि मिलने पर माँ जरूर स्वर्ग पहुँचेगी। आप पैसे की चिन्ता मत करें। मैं तुरन्त मनीआर्डर कर रहा हूँ।

स्वामीजी का मन चिन्ताओं से घिर गया। वे व्याकुल हो गये। कारण यह नहीं था कि दाह-संस्कार उन्हें करना पड़ेगा बल्कि उनका हृदय इस अनचाहे सत्य से छिन्न-विच्छिन्न हो गया था। बार-बार यही विचार उनको कचोट रहे थे कि क्या इक्कीसवीं सदी के भारतीय समाज का यही स्वरूप होगा? क्या एक पुत्र के लिये अपनी माँ से भी बढ़कर कुछ है; वह माँ - जिसने उसे जन्म दिया, उसका पालन-पोषण किया। उसको उंगली पकड़कर चलना सिखाया। उसके बीमार होने पर अस्पतालों के चक्कर लगाये, रात-रात भर जागी। उसकी सफलता के लिये ईश्वर से प्रार्थना की, मन्नतें माँगीं। अपनी असफलता पर अगर बेटे का एक अश्रुबिन्दु गिरा तो माँ की आँखों से अश्रुधारायें बह पड़ी। किसलिये? यह सोचकर कि उसका लाल उसके बुढ़ापे की लकड़ी साबित होगा। परन्तु उसने कभी कल्पना भी न की होगी कि जिस पुत्र में

वह श्रवण कुमार का रूप देखना चाहती है, उसका श्रवण कुमार बनना तो दूर की बात, वह इतना कृतघ्न होगा कि अपने तुच्छ कार्यों के लिये अपनी माँ को मुखाग्नि देने भी नहीं आयेगा। हृदय को तार-तार कर देने वाले इन घृणित विचारों से स्वामी जी बहुत परेशान थे। इस घटना ने उनको अंदर तक झकझोर दिया था। संसार के पवित्रतम रिश्ते को छिन्न-भिन्न होते देख उनको आँखों के सामने अंधेरा सा छा गया। जहाँ वह जर्जर होते सम्बन्धों के प्रति मननशील थे वहीं पाश्चात्य संस्कृति से दूषित हो रहे सम्पूर्ण भारतीय परिवेश के प्रति भी चिन्तित थे। बार-बार ये पंक्तियाँ उन्हें उद्वेलित कर रहीं थी-

"धुँधली हुई दिशायें, छाने लगा कुहासा; कुचली हुई शिखा से आने लगा धुँआ सा।
कोई मुझे बता दे क्या आज हो रहा है, मुँह को छिपा तिमिर में क्यों तेज रो रहा है।"

रामेन्द्र पाण्डेय
द्वादश 'क'

मेरा विद्यालय

व्यक्ति का निर्माण व उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों का आधार उसका विद्यालय होता है। विद्यालय की पहचान उसके अध्यापकों तथा विद्यार्थियों से होती है। अर्धचन्द्राकार आकृति में बना यह भवन वास्तव में भवन मात्र न होकर एक मन्दिर है। इस विद्यालय ने न जाने कितनी ही प्रतिभायें इस भारतवर्ष को दी हैं। प्रेम, सौहार्द, सत्य व सौम्यता का प्रतीक यह विद्यालय न जाने कितने जीवन-निर्माण कर चुका है। विद्यलाय के बाहर का दूषित वातावरण, विद्यालय में प्रवेश के साथ ही समाप्त हो जाता है। गोलफील्ड की हरियाली, उसमें फैले पुष्प वर्षाकाल में अप्रतिम व अ(ितीय प्रतीत होते हैं। यहाँ आकर मन को जिस शान्ति का अनुभव होता है, उसका व्याख्यान शब्दों में करना अत्यन्त कठिन है। प्रत्येक विद्यार्थी में 'देशभक्ति' का भाव भरने का जो कार्य इस विद्यालय ने किया है, वह वास्तव में इसे सच्चा मार्गदर्शक प्रमाणित करता है। इसी नें हमें सिखाया कि 'पेट की भूख' ही सबकुछ नहीं, देशहित जीना सीखो। 'चरित्र निर्माण का कार्य करके इसने हमें जो दिया वह मात्र यही दे सकता था। छात्रावास के विद्यार्थियों को इसने माँ व पिताजी दोनों का स्नेह परोक्ष रूप से प्रदान किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यहाँ की शिक्षा प्राप्त करने वाला विद्यार्थी पूर्णरूपेण एक चरित्रवान व्यक्ति व एक सच्चा मनुष्य अवश्य बन सकेगा। इसका उद्देश्य दीनदयाल जी जैसे व्यक्तियों का निर्माण करना है। यह किसी हद तक पूर्ण हुआ है और इसका यह सफल प्रयास अभी जारी है.....।

विक्रान्त पाठक
द्वादश 'ख'

भगवान से शास्त्रार्थ और विजय

शाहजहाँपुर में मेरे एक सम्बन्धी रहते हैं। गर्मी के दिनों में मैने उनके यहाँ दो दिन रूकने की योजना बनायी। योजना के तहत मैं ५ जून को उनके घर पहुँच गया। इससे पहले कि मैं कुछ बताऊँ, आवश्यक है कि उनके परिवार के सदस्यों से आपको अवगत करा दूँ।

इस परिवार में सबसे बुजुर्ग सेठ कालीचरन जी हैं जिनकी अवस्था यही कोई ७० साल के आस-पास होगी। इन्होंने कड़ी मेहनत करके अपनी सोने की दुकान को पूरे बहादुरगंज में सबसे बड़ी तथा प्रतिष्ठित दुकान के रूप में स्थापित किया है। इनके मात्र एक बेटा है जिसे लोग राजू के नाम से पुकारते है, जो अपनी जिन्दगी के ४५ बसन्तों,को देख चुके हैं। इनका विवाह बरेली के विख्यात सेठ की लड़की से हुआ है जिनका नाम सविता है तथा जिनकी शिक्षा इण्टरमीडिएट तक की है। उनके एक दस वर्षीय बच्चा भी है जो अपने क्षेत्र में 'राजा' के नाम से प्रसद्धि है। इस बच्चे की दादी माँअर्थात् सेठ कालीचरन जी की पत्नी इस समय जिन्दा हैं। इन्हें सभी लोग काकी कहकर पुकराते हैं। अतः परिवार कल्याण योजना को देखते हुये इनका परिवार एक आदर्श परिवार कहा जा सकता है।

खैर ! आगे बात करते हैं। लेकिन अरे! मैंने आपको यह तो बताया ही नहीं कि मेरा इनसे क्या नाता है। सेठ कालीचरन और मेरे बाबा एक ही स्कूल में पढ़े थे अतः दोस्ती के नाते ही मैं इनके घर रूकने गया।

मुझे उनके पास मेरे बाबा ने इसलिये भेजा जिससे मैं इनकी धार्मिकता से कुछ सीख सकूँ क्यों कि सुनने में आया है कि इनके घर में बहुत पूजा-पाठ होता है जिसके कारण ये सब लोग सुखी है। खैर मैं ५ जून की रात को इनके घर पहुँच। खाना खाकर थका होने के कारण चुपचाप सो गया और किसी से भी बात न कर सका। सुबह ५ बज रहे थे, मैं अपनी नींद पूरी करने के लिये चारपाई पर लेटा हुआ था।

तभी सहसा घर के एक कोने से शंखनाद होता है मुझे ऐसा लगा जैसे कि श्रीकृष्ण ने कुरूक्षेत्र में शंखनाद कर दोनों सेनाओं को लड़ने के लिये आमन्त्रित कर दिया हो; तभी घण्टी की आवाज आयी यह सुनने में इतनी भेदन क्षमता की थी कि मेरा मन एक्सप्रेस की तरह उस अग्निशामक गाड़ी की ओर आकर्षित हो गया जो आग को बुझाने के लिये फुब्बारे छोड़ती है।

इस पर विचार कर ही रहा था कि राजा की कर्कश आवाज ने मेरा ध्यान भंग कर दिया। अब क्या होना था, अन्ततः मुझे अपनी शैय्या का परित्याग करना ही पड़ा; इससे पहले कि में नित्यकर्म को संपादित करने के लिये प्रस्थान करूँ मेरे नयन दादाजी को देखने के लिये उसी प्रकार व्याकुल हो रहे थे जैसे चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र की एक बूँद के लिये व्याकुल हो उठता है। अतः मैंने अपनी दृष्टि को पूर्व,

पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर, नीचे सभी ओर घुमाया, किन्तु मेरे नेत्रों ने मेरे मन को निराश कर दिया। किन्तु शंखनाद की आवाज बार-बार मेरे कानों को भेद रही थी। मैने भी सोचा कि अजीब इत्तेफाक है कि आवाज आ रही है और मैं देख नहीं पा रहा हूँ कि ये भगवान के भक्त कहाँ से प्रवचन कर रहे हैं ?

अन्ततः असम्भव को सम्भव कर देने वाली कहावत को चरितार्थ कर मैंने सेठ काली चरनजी को ढूँढ निकाला। जैसे ही मैने उनको देखा मेरी आँखें फटी सी रह गयी। मैं क्या देखता हूँ कि सेठ कालीचरन-जी अपनी तिजोरी खोल कर खड़े हैं। तिजोरी ऊपर से नीचे तक सोने, चाँदी, रूपयों से भरी पड़ी है। इस तिजोरी के केन्द्र में भगवान गणेश और लक्ष्मीजी की दो छोटी-छोटी सोने की मूर्तियाँ रखी है। सेठ जी आरती करते जा रहे हैं जिसके बोल है-जय गणेश ....देवा.....महादेवा। मैने देख तो लगा वाकई इनकी सुख समृद्धि का यही राज है।

लेकिन यह क्या। ये बार-बार पीछे मुड़कर और चारों तरफ क्यों देख रहे हैं; इन्हे देखकर मुझे ऐसा लगा रहा है जैसे कि कौवा किसी मुर्दार पर बैठ कर एक एक क्षण शंका से भरा हुआ गुजरता है और उसे हर समय डर ही लगा रहता है कि कहीं मुझे कोई मार न गिराये। ठीक उसी प्रकार सेठ जी मुझे दिख रहे हैं। इन्हें डर है कि कहीं इनकी तिजोरी कोई खाली न करे दे।

मुझे लगा कि सेठ जी मन से पूजा नहीं कर रहे हैं, केवल उनका शरीर दिखावा करने के लिये भगवान के सामने आरती कर रहा है किन्तु मन तो किसी ऋणी आदमी से रूपये कैसे निकलवाये, इसकी जुगत बनाने में लगा हुआ है। यही सब देख-सोच रहा था कि घर के नौकर ने सेठ जी से कहा कि बम्बई से कोई विदेश में काम करने वाली कम्पनी का एजेन्ट यहाँ की विशेष सोने की चीजों को परखने व खरीदने हेतु आया है।

इतना सुनना हुआ कि सेठ जी की तोंद उसी प्रकार दुगने व्यास की हो गयी जिस प्रकार कोई पूड़ी कढ़ाई में फूलकर दुगने व्यास की हो जाती है। लेकिन इसका प्रदर्शन ठीक न था, अतः उन्होंने नौकर से कहा उन्हें बाहर वाली बैठक में बैठाओ मैं अभी आता हूँ।

मुझे यह सब बड़ा ही आश्चर्यजनक व रहस्यमय लग रहा था। सेठ जी ने फिर से आरती प्रारम्भ कर दी मेरे मन में आया कि यह तो खण्डित पूजा है और ऊपर से दिखावा।

खैर! अपनी उत्सुकता को समाप्त करने के लिये मैं सेठ जी के उस कमरे की ओर चोर की भाँति चुपके से पहुँचा और माजरे को समझने का प्रयास करने लगा। मैं एक खम्भे के पीछे छुप कर सेठ जी के सारे कार्यकलाप देख रहा था। सेठ जी ने आरती समाप्त की मस्तक पर स्वयं रोली का टीका लगाया ओर मुसलमानों की तरह कमर झुकाकर हाथ जमीन पर रख कर कुछ बुदबुदाने लगे।

"हे भगवान!.....विदेश..... बम्बई.....आया.....जाल.....फँस.....

.....सामान.....पसन्द.....सफल.....सवा रूपये ..... प्रसाद।"

लेकिन यह क्या? ये तो एक मिनट में खड़े हो गये और कहने लगे कि शायद भगवान बहरे है और मैंने कल भी धीरे-धीरे प्रार्थना की थी, लेकिन उन्होने मेरी इच्छा पूरी नहीं की। शायद सुन नहीं पाये होगें, अतः आज जोर-जोर से प्रार्थना करता हूँ, शायद ऊँचा सुनते हो।

इतना कहकर सेठ जी हाथ जोड़ कर आँखें बन्द करके खड़े हो गये। ऐसी मुद्रा में इन्हें कोई अगर देख लेता तो यही कहता कि भगवान का सबसे अधिक प्रिय भक्त यही है। खैर उन्होने प्रार्थना जोर-जोर से शुरू की।

हे भगवान! आज विदेशी कम्पनी का एजेण्ट जो बम्बई में रहता है वह आया हुआ है, वह मेरी दुकान से नकली आभूषण लेने आया है। वह मेरे जाल में फँस आये। भगवान! यह तभी होगा जब आप का हाथ मेरे सिर के ऊपर रखा होगा। हे भगवान! मेरा सामान उसे पसन्द आ जाये। मैं सफल हो जाऊँ।

इतना कहकर सेठ जी ने अपनी आँखें एकदम खोल दी और अपनी तिजोरी की ओर टकटकी मार कर देखने लगे कि कही कोई इतनी देर में मेरी तिजोरी तो खाली नहीं किये दे रहा है। फिर आँखें ऐसे मूँद लेते हैं जैसे कि उनको आँखें खोलते किसी ने देखा ही न हो जब कि स्वयं भगवान सामने खड़े हैं।

खैर! सेठ जी फिर कहते हैं

"हे परमपिता परमेश्वर! अगर आज मैं सफल हो गया तो आज सवा रूपये का प्रसाद अवश्य चढऊँगा।" भगवान! मैं आपसे प्रॉमिस करता हूँ कि उस दिन की तरह बेईमानी नहीं करूँगा, आज जरूर प्रसाद चढ़ाऊँगा।"

फिर भगवान के ऐसे पैर छुये जैसे कि भगवान आज इतने प्रसन्न हो गये हैं कि ये आज जरूर सफल हो जायेगें। फिर सेठ जी ने तिजोरी बन्द की और वहाँ से चले गये। जब मैनें यह सब देखा तो ५ मिनट तक तो मुझे होश ही न आया। फिर मेरे विचारों के कपाट खुल गये और आज मेरा मन भगवान से बहस करने को उतावला हो उठा। मैं जल्दी से जल्दी भगवान को अपने तर्को के बल पर परास्त करने के लिये उत्साहित हो उठा।

मन को केन्द्रित कर लिया, आँखें बन्द कर ली और मान लिया भगवान भी सामने खड़े मेरे तर्को को काटने के लिये तैयार हैं। मैंने भी तर्को को एकत्रित करके कमर कस ली। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले मैंने भगवान से कहा कि आप मुझे यह बताओ कि सेठ कालीचरन जो कि छल कपट करके ऐश की जिन्दगी बिता रहा है जब कि वहीं दूसरी ओर एक मजदूर दिन भर कोल्हू के बैल की भाँति काम करता है और शाम को भरपेट न तो खाना खा पाता है और न ही अपने बच्चों को ही भरपेट खाना खिला

पाता है और जब उसके बच्चे और खाना माँगते हैं तो वह अपने बच्चों को यह कहकर सुला देता है कि मेरे लाल! मेरे पूत! मेरे जिगर के टुकड़े। मेरे घर के उजियारे! आज खाना खत्म हो गया है, तुम सो जाओ, कल पेटभर खाना खिलायेगे। तो उसका लड़का अपने पिता के आँसू पोछता हुआ कहता है कि पापा! तुम रोओ मत। अब मैं तुमसे कभी खाना नहीं मागूँगा, मैं अब कभी खाना नही खाऊँगा।

वहीं दूसरी ओर सेठ कालीचरन अपनी तोंद को सोने से तौल रहा है। यह कहाँ का न्याय है? भगवान कहते हैं कि हर एक का अलग-अलग भाग्य होता है। सेठ का भाग्य अच्छा था ओर मजदूर का भाग्य खराब था।

मैंने कहा यदि भाग्य से ही सब कुछ होता है तो व्यक्ति कर्म क्यों करता है? भगवान फिर कहते है कि इसका कारण यह है कि आज का कर्म कल का भाग्य होता है। जिसका प्रबन्ध अच्छा होता है अधिक सफल होता है। दूसरे तर्क के रूप में उन्होंने कहा कि व्यक्ति जैसा करता है वैसा ही पाता है। अपने तर्क को सुदृढ़ आधार देते हुये कहते हैं-

राम झरोखे बैठि कर, सबका मुजरा लेय।
जाकी जैसी चाकरी, ताको तैसो देय।।

फिर भगवान भाग्य और कर्म की विस्तृत विवेचना करते हैं कहते है कि भाग्य और कर्म को दो व्यक्ति मान लो। भाग्य अन्धा है कर्म, लगड़ा है। गाँव में आग लगी है, सभी कुछ दिखावा मात्र है जो कि क्षणभगुर हैं। यदि अपने शरीर को इससे पार करना है तो आवश्यक है, भाग्य रूपी अन्धे पर कर्मरूपी लंगड़ा बैठ कर एक सामन्जस्य से जिसमें कर्म बताये उधर भाग्य चले, इस प्रकार व्यक्ति सफल हो सकता है। भगवान ने अपने पक्ष को मजबूती प्रदान करते हुये कहा कि इसमें भी कर्मरूपी लंगड़ा भाग्य रूपी अन्धे के ऊपर ही बैठा है।

इतने तर्क होने पर भी मेरे उस प्रश्न का मुझे उत्तर नहीं मिला जिसमें मैंने पूछा था कि सेठ क्यों आज इतना समृद्धिशाली है जब कि वह बेईमानी करता है और मजदूर मेहनत के बावजूद खाना भी नहीं खा पाता है। जब भगवान ने कहा इसका फल आज नहीं तो कल जरूर दोनों को ही मिलेगा भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं।''

इतना सुनते ही मैंने प्रश्न किया कि भगवान के घर आखिर देर क्यों है? इसी से सब नुकसान हो जाता है। जिस प्रकार स्कूल में पहुँचने में देर होने पर अध्यापक कुछ बता चुके होते हैं, स्टेशन देर से पहुँचने पर गाड़ी छूट चुकी होती है दोनों ही स्थितियों में नुकसान हो जाता है। जिसका मूल कारण देर होना ही है। वहीं देर भगवान के घर में भी होती है तो यह कैसे मान लिया जाय कि इस ''देर'' से कोई नुकसान न होगा।

आशुतोष शुक्ल
एकादश 'क'

आध्यात्म किंवा विज्ञान

वर्षों पूर्व हमारे पूर्वजों ने अपने प्रयासों के द्वारा आध्यात्म के सागर को मथकर धर्मरूपी अमृत निकाला था । पूर्वजों ने इस धर्म का उपयोग अपने जीवन में इस प्रकार किया कि यह उनके जीवन का नियम बन गया । आज भी लोगों के लिए धर्म एक नियम है, आदर्श है और यही कारण है कि वे लोग वैज्ञानिक युग में आकर भी आध्यात्म से जुड़े हैं, इसका अर्थ यह कदापि नहीं लगाया जा सकता कि वे आज की दुनिया से अनभिज्ञ हैं । वे सभी लोग विज्ञान का उपयोग अपने जीवन में कहीं न कहीं अवश्य करते हैं और विज्ञान की महत्ता को भी समझते हैं ।

प्रायः उक्त प्रकार के लोग वैज्ञानिक वर्ग के द्वारा चर्चा तथा हँसी के पात्र बनाये जाते हैं । युवा पीढ़ी जिसने विज्ञान को अपना मार्गदर्शक बना लिया है, आध्यात्म व उसके तथ्यों को असत्य तथा निराधार मानती है । यह हो भी सकता है क्योंकि भगवान को किसने देखा है ? किसने स्वर्ग की यात्रा की है ? किसके पास नरक का अनुभव है ? उत्तर एक ही है कि इस संसार में कोई नहीं । विज्ञान के अनुयाइयों का यह कर्तव्य है कि वे आध्यात्म और धर्म के नाम पर प्रचलित रूढ़ियों को असत्य सिद्ध करें । परन्तु इसकी भी एक सीमा होनी चाहिए । वैज्ञानिक वर्ग इन सीमाओं को पार कर जाता है और आध्यात्म पर प्रहार करने लगता है । इसमें कोई नई बात नहीं है क्योंकि मनुष्य की तो प्रकृति ही ऐसी है ।

यह सत्य है कि आज के युग में हमें विज्ञान का सहारा लेकर चलना चाहिये और समय से कभी पिछड़ना नहीं चाहिए । विज्ञान ने विकास की दर कितनी तीव्र कर दी है, समय भी उतना शीघ्र निकल जाने का प्रयास कर रहा है । परन्तु इसके लिए यह तो आवश्यक नहीं कि हम अपने आध्यात्मिक मूल्यों का त्याग कर दें। धर्म को मानने वाले सदा सेही पूजा करते आये हैं और आज भी वे इसका पालन करते हैं । विज्ञान अवश्य यह कह सकता है और कहेगा कि इन व्यर्थ की बातों में क्या रखा है ? जब कोई भगवान नाम की वस्तु है ही नहीं, तो उसके लिए समय नष्ट करने तथा कष्ट उठाने से क्या लाभ है ? इसका उत्तर देने के लिए आध्यात्म से दूर हटना होगा और मानना होगा कि वास्तव में भगवान कुछ नहीं होता है । परन्तु पूजा अर्चना का त्याग क्यों किया जाये जब इससे कोई हानि नहीं । तर्क फिर उठेगा और कहा जायेगा कि समय नष्ट होता है, परन्तु यदि अपने मस्तिष्क को खोलकर सोचा जाये तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपने जीवन के कितने घण्टे सोने में या अन्य व्यर्थ के कार्यों में लगाता है । यदि उससे आधा एक घण्टा निकाल कर पूजा अर्चना के लिए दिये जायें तो अधिक लाभ होगा । अधिक सोना लाभदायक होता है यह कोई भी वैज्ञानिक नहीं कह सकता । अब प्रश्न उठता है कि पूजा अर्चना से क्या प्राप्त हो सकता है ?

पूजा अर्चना से भले ही हमें भगवान की प्राप्ति न हो परन्तु उसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन ला सकता है । और उसे एक निश्चित तथा उचित दिशा दे सकता है। यह प्रक्रम वह अपने जीवन में एक संघर्ष के रूप में भी उतार सकता है । वह जीवन जो उसके भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए उसे दृढ़ करता है, एक आत्म विश्वास देता है । व्यक्ति को संघर्ष के लिये सदैव इसलिऐ भी तैयार रहना चाहिए क्योंकि कठिनाइयों और संघर्ष से मुक्ति दिलाने की जिम्मेदारी विज्ञान नहीं ले सकता । बड़ों के पैर छूना एक धार्मिक कार्य है इसीलिए युवापीढ़ी इस कार्य को व्यर्थ मानती है, भला किसी के पैर छूने से उसके पैरों की धूल के अतिरिक्त क्या मिल सकता है, परन्तु पैर छूना हम एक अभ्यास के रूप में ले लें तो यह कार्य सहज ही हो जायेगा । अभ्यास झुकने का और छोटेपन का अहसास करने का । यह अभ्यास है जो एक पूंजी के रूप में कार्य करता है और युवा पीढ़ी को इसकी अत्यधिक आवश्यकता है।

संसार से हटकर यदि आध्यात्म को समझे तो इसका रूप और भी अधिक विस्तृत हो जाता है । भारतीय सैनिक सदियों से रणभूमि में गीता पढ़ते चले आ रहे हैं । यह गीता उनके लिए केवल एक पुस्तक नहीं है अपितु आत्मविश्वास भी है, विजय का मार्ग है और उससे भी अधिक निष्काम भाव से कार्य करने का भाव है । गीता का उपदेश श्रीकृष्ण ने दिया परन्तु श्री कृष्ण को किसने उपदेश देते हुये देखा या सुना ? यह बात विज्ञान के लिए एक अवसर बन जाता है । आध्यात्म पर प्रहार करने का । यह गीता को श्रीकृष्ण का उपदेश न मानकर एक साधारण पुस्तक के रूप में पढ़ा जाये तो हमें संसार तथा जीवन के सत्य प्राप्त हो जाते हैं । गीता के अनुसार आत्मा अजर-अमर है जो शरीर बदलती है अतः हमें सदैव निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए और जीवन मृत्यु के जाल में नहीं फंसना चाहिए । विज्ञान ने आत्मा की सत्यता को नकार दिया, वैज्ञानिक पीढ़ी ने कहा कि जीवन तो कुछ ही वर्षों का है तो क्यों न अधिक से अधिक सुख-सुविधा का भोग किया जायें । कौन जानता है कि आत्मा क्या है ? किसने उसे देखा है ? कौन पुर्नजन्म के अनुभव को जानता है । वास्तव में इसके विपक्ष में तर्क देना अत्यन्त कठिन है परन्तु असम्भव नहीं है । भले ही पुर्नजन्म की सत्यता को कोई न जानता हो परन्तु जिया केवल अपने लिए नहीं जाता है, यदि ऐसा होने लगे तो पशु और मनुष्य में क्या अन्तर रह जायेगा। जीवन भर दूसरों के लिए जीने वाले भी ऐसा आदर्श प्रस्तुत कर जाते हैं जो आने वाली पीढ़ी के लिये मार्ग दर्शक बन जाते है । जीने के लिये तो सभी जीते हैं परन्तु ऐसे बहुत कम ही होते हैं तो मरने के लिये जीते हैं । परन्तु जीते वास्तव में वही है। पल - पल मरने वाले हर पल एक जीवन जी जाते हैं परन्तु पल - पल जीने की इच्छा रखने वालों को अन्ततः मरना ही पड़ता है ।

यदि आज के युग में इन बातों को आध्यात्म से अलग करके विज्ञान के साथ जोड़ कर बनाया जाये तो सम्भवतः आज की पीढ़ी को यह शीघ्र समझ में आयेगी क्योंकि यदि आज कोई बात भारत का कोई चिन्तक कहता है तो वह सर्वथा निराधार है परन्तु यदि वही बात कोई प्रसिद्ध वैज्ञानिक कहता है तो उसका

तुरन्त अनुपालन होता है । लोग आध्यात्म के नाम से ही मन बदल लेते हैं तो इसके द्वारा निकलने वाले तथ्यों का कोई अन्त नहीं होगा । आध्यात्म की हर एक बात को यदि विज्ञान के ढाँचे में डालकर प्रस्तुत किया जाये तो ये सहज ही नहीं, विस्तृत भी हो जाता है । इतना विस्तृत कि जिसका अन्त दिखाई ही न पड़े ।

विज्ञान भी एक आध्यात्म है जो आध्यात्म में आई हुई रूढ़ियों को सत्य या असत्य सिद्ध करके आध्यात्म को फिर वही दिशा प्रदान करने का प्रयास करता है जो दिशा हमारे पूर्वजों ने दी थी । लोग आध्यात्म को धर्म का रूप देते हैं और फिर धर्म को रूढ़ि बना देते है । छींक आना, दूध का गिर जाना, बिल्ली का रास्ता काट जाना आदि कुछ बातों को अशुभ घटना का प्रतीक मान लिया है, परन्तु क्या किसी धार्मिक ने किसी भगवान को या किसी देवता को यह कहते सुना है, फिर क्यों इन निराधार तथ्यों को अपने जीवन का आधार बनाने का प्रयत्न किया जाता है ? यह कोई तर्क नहीं एक प्रयोग है जो अनेक बार अपने ऊपर लिया जा चुका है। क्योंकि तर्क के पीछे वितर्क होता है और उसके भी पीछे कुतर्क होता है । इसीलिये इस सत्य व अंतहीन बहस का अन्त प्रयोगों द्वारा ही किया जा सकता है । इसके लिये आवश्यक है कि आध्यात्म विज्ञान से व विज्ञान आध्यात्म से समन्वय करें ।

✍ *पुण्डरीक सिंह*
दशम 'क'

चले चुनरिया ओढ़ बसंती

हमने पायी थाह आज माँ! तेरे मन की पीर की,
चले चुनरिया ओढ़ बसंती हम बलिदानी वीर की।
यह बासंती चादर ओढ़ी नानक ने, रैदास ने,
ऊँच-नीच का भेद मिटाया सन्तों के विश्वास ने,
"सियाराममय" सारे जग को जाना तुलसीदास ने,
'माँ को कहाँ ढूढ़ता बन्दे मैं तो तेरे पास में,
"गूज उठी थी इसी देश में बानी संत कबीर की।
चले चुनरिया ओढ़ बसंती हम बलिदानी वीर की।
पहना था यह वेश बंसती जब रणवीर प्रताप ने,
छुड़ा दिये छक्के दुश्मन के तब चेतक की टाप ने।
किये निछावर प्राण न उनके मुख पर दुःख अवसाद थे।
कड़ी बनेंगें हम भी बलिदानों की उस जंजीर की।

✍ *धर्मेन्द्र सिंह*
एकादश 'क'

अनुश्रवण

हमारी समन्वयवादी संस्कृति
में जहाँ संस्कृत भाषा की
प्राणमयी ऊर्जा है वहीं
अँग्रेजी जैसी व्यापक
भाषा को समुचित
महत्व भी।

FIFTY DAYS OF "OPERATION VIJAY" AT A GLANCE

As soon as people came to know that thousands of Pakistani troops had intruded into Kargil sector in Kashmir, the question on everbody's lips was how much time Indian Army would take to push them back beyond the Line of Control (LOC)? Many experts expressed concern that it would take more than six months to clear the area from the Pak intruders. But Indian Force stunred the enemy by pushing the Pak intruders back beyond the LOC in all the sectors in Kashmir in just 50 days. Operation Vijay has been a spectacular success.

This is how it happened. While moring towards the point Bajrag on May 8, 1999 an Indian Army Patrol saw some unusual movement' in the area. The extent of the Pakistani intrusions become evidently clear the next day when a second patrol party was sent to the area.

May 26 : Operation Vijay to flush out Pak intruders from Kargil sector was launched.

May 27 : IAF's Mig-27 shot down by enemy and a MIG-27 crashes after developing engine snag. Pilot of the Mig-27 Sqn. Ldr. Ajay Ahuja was killed and the Mig-21 Pilot Flt. Lt. Nachiketa was captured by enemy.

May 28 : A MI-17 combat helicopter of IAF was shot down by enemy's Stinger missile in Drass sector. All killed on board.

May 29 : Defence forces evict the Pakistani Army regulars and other intruders from two vital points in the Batalik sub-sector and one key feature in the Drass sub-sector.

May 30 : IAF pressses into sevice Mirage 200 jets.

May 31 : The Mig-27s and Mig-23s and Mig-21s carry out intensive air strikes on enemy position.

June 1 : Heavy fighting often hand - to hand, intensifies in the Batalik sub-sector even as the Indian forces report steady progress' in cutting

off the supply lines of the intruders.

June 2 : IAF drops napalm bombs on mountain-top hideouts for intruders in the Kargil sector as Army continues to push back the intruders towards the LOC in Drass and Batalik sectors.

June 3 : Flt. Lt, Nachiketa released after 8 days of captivity, Indian posts in Poonch, Naushera and Akhnoor shelled by Pakistani forces.

June 4 : International support for Indian stand on Kargil begins to build up. USA asks Pakistan to recall the intruders.

June 5 : India rejects Pak offer for talks on June 7.

June 6 : Air stikes continue on enemy positions in Kargil even as Indian Army mounts a major offensive in Batalik and Drass sectors encircling the Pakistan- backed intruders of various points and blocking several supply lines of intruders.

June 7 : Prime Minister, Mr Atal Behari Vajpayee, exhorts Pakistan to undo its intrusion and respect the LOC. India contends that most intruders are Pak soldeirs.

June 8 : The united States firmly rejects the Pak contention that the LOC is not clear and asks Pakistan backed intruders to retreat.

June 9 : Mirage 2000 aircrafts strafe enemy supply depots and Bunkers in Mushkoh valley.

June 10 : Returning of brutally mutilated bodies of six Indian soldiers of 4 Jat battalion by Pak outrages India.

June 11 : Batalik Top is recaptured.

June 12 : During the day-long visit of Pak Foreign Minister, Mr. Sartaj Aziz to New Delhi, a tough India tells Pakistan to go out of Kargil first.

June 13 : Prime Minister visits Kargil. The Army recaptures the 15,000 fts high Jololing Top.

June 14 : Indian Army recaptures both Point 4590 and Jololing area saddle

in Drass.

June 15 : Army consolidates hold in Drass and moves in the Batalik sector. US President, Mr. Bill Clinton, in a telephonic conversation asks Pakistani Prime Minister, Mr. Nawaz Sharif, to pull his troops out of Kargil.

June 16 : IAF intensifies air strikes at teh Muthodalo area, north east of Kargil as part of a three stage integrated effort for evicting the intruders from the area.

June 17 : In a lighting raid Mirage 2000 jets pound enemy dugout in Munthodalo at 14,600 fts, At least 100 intruders killed.

June 18 : Indian Army shells Kargil intruders' camp in the Pak occupied Kashmir, killing 5 Pakistani soldiers.

June 19 : Army destroys four enemy bunkers killing 8 Pak soldiers north of Tololing ridge.

June 20 : Indian Forces evict intruders from Barbad Post on the Tololing ridge (Point 5140).

June 21 : Army begins final assult on strategically important Tiger Hills.

June 22 : Indian Forces consolidate their position in the Drass and Batalik sub- sector.

June 23 : Indian troops recaptured six more height in Batalik sub-sector including Point 5203 after killing 12 Pak intruders as pitched battle to gain control of Jubar Hills, Kakarthang and Barso Peaks continue.

June 24 : The IAF bombs on infiltrators on stategic Tiger Hills in the Drasss sub-sector totally eliminating their camp and killing at least 50 intruders.

June 25 : Prime Minister Atal Behari Vajpayee warns Pakistan against waging war adding that India would neither run away from war nor return the land it would capture if war is imposed on it.

June 26 : The IAF planes strike at a supply base in the strategic Batalik sector.

June 27 : A fierce fighting is going on to capture Tiger Hills and Jubar heights.

June 28 : Pakistan opened new front in Siachin Glacier and attacked from its south, but all in vain.

June 29 : Indian forces recaptured Black Rock and Pt. 4700 (Point Phialong) in Mushkoh Valley. Heavy arms and amunitions have been recovered from intruders, which includes 12.27 MM APVT machinguns.

June 30 : Indian army succeeded in capturing two points in Tiger Hills and Pt. 5100.

July 1 : Indian troops recaptured Pt. 5100 overlooking Tiger Hills.

July 4 : Tiger Hills (4660 mts) a dominating feature used by the enemy to target Srinager- Leh highway in Drass sub- sectors, was recaptured. Pakistani PM. mr. Nawaz Sharif, rushes to meet US President, Mr. Bill Clinton.

July 6 : Indian troops recaptures three enemy positions in Batalik sub-sector.

July 7 : Jubar Hills and Pt. 4268 recaptured.

July 8 : Pt. 5287 andPt. 4957 in Batalik and North Bumb in Drass are recaptured by the Army.

July 9 : 99% of Batalik sub-sector is cleared. Pt. 5307 in Ganasonk recaptured.

July 10 : Pakistan begins pull out of its soldiers and other intruders.

July 11: Pakistan agrees to July 16 as deadline for complete withdrawal of it sarmy regulars and other intruders.

July 12 : Pakistan bows to India's demand that its forces must withdraw to well north of the LOC in the Kargil sector by the deadline of July 16 morning.

July 13 : Indian troops recapture the strategic Bajrang post in the Kaksar sub-sector.

July 14 (50th day) : Pakistan virtually withdraws all its forces from the Indian side of LOC. It is a record feat for Indian forces. Every inch of territory is recovered.

Collected by :
Gaurav Tiwari XI `B'

The Student life : Some Views

A Turkish prverle says, " Good advasie may begiven but not good manners."

I think it means that good manners can't be given because one has to develop one's manners but advice may be given easily because it depends on you to follow the advice or not.

Now, today I am going to discuss about the feelings of student life.

We often see that if a boy is rising in the studies and getting of some high position in class, others get jealous of his success. But some of them do not follow this attitude. Here we would have to see what difference they have? they also consider that rising boy as their rival. But they have the positive competition. They notice why he is going above. What are the qualities that he has ? And conclusion is this that by these qualities he may reach that position, then why can we not do so ." This is called a healthy competition. And it is. also a benefit that by a healthy competition the level of studies rises up.

Sutdent life is full of emotions and feellings. A person may shape his character in any way, either good or bad in teen age. Here I will say to you that if you want to lave somone love your books and if you want to share. your problems, share with your teacher.

At last I want to say that, "Be positive and get success," it should be our matto in life. Whenever we are in trouble in our life, we should not lose patience. Have a positive attitude for the life. Try again and again. you will get success.

✍ *Himanshu Verma*
X 'A'

THE MASTER OF CULTURE — INDIAN CULTURE

INDIA- a world in itself . Self control, charity and compassion are the essence of Indian life. The motto of its culture is-

"ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।

Diversity and unity are the two compositional, essential Bodies of its culture. Many race are meigled and digested in it. Foreign influences poured and often influenced that culture and were absorbed. Our anceint monument & are the proof of it. Our rich literature is proof enough of our cultural heritage. Double Vs-' Valmiki' and " Viyas' are those whose fame would never be fadeci. "Ramayana' and " Mahabharat' are the ideal epics for anyone. 'Vidas' are the most anacent book in the world. Our Hindu religion— the most grand religion sprouted is this soil, Sri Ram, Gautam, Mahavir, Nanak are the worthy sons of this land. Every time we start, we use our hy mns and end with, Santih, Santih, Santih, Swammi vivekananda, the great spiritualist added a feather to India's cap in world Religion Conference in chicago.

Samsara Vis Vrksasya:

Is the ideal formula of many noted people .

The culturel of India is the mother of other cultures. Our great classics are the store houser of thougt if great minds, Ahilya Kaushalya, Yashoda, Sita etc. are the main female characters, who are worshipped have as future devis.Now we have to observe the present and think about the futeare. .Our culture has a glorious past , struggling present and vileant future. Now people are adapting the westurn culture rapidly. But in this change, the cultural tradition will continure and it will be useful for us. We have to make and that is in vivekananda's words: Arise, awake and do not stop till the goal is reached.

Shantanu Kumar Agrahari
XII 'B'

A Homage To the Departed Soul

7th Novermber 1998 has become a memorial day for us as we lost a great veteratn a great man, a great thinker, educationist on this, It was Late . Shive Sharn Sharma. Like a sun, He scattered the light of knowledge and guidance around him, Today he is no more in this world but he is alive by his name, fame and wisdom. We can never forget his ideals, teachings that he reflected in the society.

Respected Sharmaji was one of the great scholars,philosphers and great men of 20th Century. He was born to live for other, like a Saint he was detached from the worldly luxuries. He minimised his requirements and lived an asceteic life. He pursued the knowledge , and spritual gains, 'The Geeta' was main source of his inspiration . He had deep study of 'Geeta', For him 'The Geeta'. was like a Triveni of 'Gyan yoga'. 'Karma yoga' and 'Bhakti yoga.' Among these three yogas he gave greatest.importance to 'Karma yoga '. Like a 'Karma yogi' he completed the pious journey, of his life He was a greatman in true sense.

I came in the contact of this great personsage in 1975 when I was in Saraswati. Shishu Mandir Tilak Nagar. Since then I got several opportuninies to meet him and invite him to preside some or other fuctions of the school. He would readily accept the request of any one who came to him. He, inspite of being president of many institution, never scorned any one. He talked to every visitor humbly and affection ately. He was always ready to do what was in the interest and welfare of society, nation and the whole human being. He was the prsident of 'keshave Samit'. He had been the principal of V.S.S.D Collage for a long time. He also remained the founder principal of Jaipuria School Kanpur. Till the last breth of his life he remained the president of Pt. Deen Daya; upadhya Vidyalay, Kanpur Before this he served the nation as a 'Songh Chalak' of Kanpur Nagar.

Respected Shrmaji loved Pt. Deen Dayal Vidyalaya above all. He devoted most of his time for this scool. He often came tothe campusof School and discussed with the pricipal the and teachers about the progress of the school. He considered this school to be nursery of great scholars, scientist,social reformers and patriots,. He lived in simple living but high thinkip. he did what he thought and said. He was man of principle .

He practised his doctrine in his life. He was a versatile genius . It was very difficult for a stranger to guess as to which subject he belonged to. He had a great knowlede of almost all subjects. He could discuss the difficult topics of maths, English, science and social studies . He guided theteachers,professors. of different subjects. He had command over many subjects, what he liked most to talk over was our culture and values of life.

Man is mortal but he taught. The lesson of immortality. He inspired every one who came to seek guidance from him.

Life of Sharmaji is like book one can read for his own sake. Every page of his life is a lesson that will keep on teaching the posterity. Though physically he is not with us but his ideals, his thought, his virtures are still with us. He is spritually alive and his soul would always inspire us. It will be our best homage to him if we follow his footprints and put into practice in our lives his teachings.

G.P. Verma

Teacher

English today is one of the most popular languages of the world. it has attained immense global importanc in the 20th century. In the thired millenuim the inportance of english is going to incriese manifold as more and more countries are adopting it as an international language for communication. It is smooth, flouing and easy to understand. One of the requisite qualities of the language lies in its adoptability to various situations and conditions which makes it a vilant and living language. The english literature stands unparalleled as regards the versatile genuis of shkespeare , the inflinching faith of Milton in God and his ways, his upholding of the freedom of the press in his 'Areopagitica' the spontaneity of words worth, the bubbling optimism of Browning and. Tenn yson's championing of ching as the elteral law of nature. English today is indispensable in the field of education.

INDIA - A LAND OF SPIRITUALITY

India our sacred motherland a land of religion and philosophy a great mother of spiritual saints a land where the highest ideal of life is open to man. This is the only country on the earth which is considered to be a Punya Bhumi. Here all souls on this earth must come to account for karma. Here every soul is wending its way towards God must come to attain its last home in this land. Above all, this is the land of introspection and of spirituality.

This is the land where, like its mighty rivers, spiritual aspirations have arisen and joined their strength, till they travelled over the length and breadth of the world and declared themselves with a voice of thunder. This is the land which, after all its sufferings, has not yet entierly lost its glory and its stength. Here it was that in later times the gentle Nanak preached his marvellous love for the world. Here it was that one of the last and one of the most glorious heroes of our race, Guru Govind Singh was born.

Each nation has its own peculiar method of working. Some work through politics, some through social reforms, some through other lines. With us, religion is the only ground along which we can move.

But today, we as a nation have lost our individuality and that is the cause of all mischiefs in India. We have to give back to the nation, its lost individuality and raise the masses.

India is to be raised, the poor are to be fed, education is to be spread. Swami Vivekanand has said - "Three things are necessary to make every man great, every nation great -

1. Conviction of the power of goodness.
2. Absence of jealousy and suspicion.
3. Helping all who are trying to do good".

So, at last I say that dear Hindus, what we have done is good, but let's do better. Let's be the Vishwa Guru' once more. At last I appeal to may all my brothers and sisters to follow the motto of the great sant Vivekanand, that is -

'उतिष्ठ, जागृत प्राप्यवरान्निबोधत'

Kumar Shubharanshu X 'A'

POLITICS OF LANGUAGE

Today Indian politics is the other name of corruption. It makes a man selfish, corrupt and treasonable. It is a pleasant way, full of danger. But we all are under the sway of Indian politics which rules over our feelings. There are many matters which make the great Indians backward in the world. I chose one of them i.e the matter of language. Exactly no one can say that which language is our own.

In our constitution our national leaders accepted Hindi as a national language but decided that English and Urdu would continue as working languages. So, our national language became a poor language. A symbol of our nation got a sorrowful position. We got a stab in our back by our reliable leaders whom the nation accepted as leaders. A small mistake of our leaders became a big problem for our nation.

A language is a landmark of the nation. Language represents the nation. Russian is language of Russi'a French is the language of France. All other countries have a language to spread their thoughts, to express their feelings. But we can't have our feelings in our national language because our national language is a symbol of low status in our nation.

Who is responsible for making this condition ? Leaders ! But think who makes a man leader - only we, the people of India. So we are responsible for their acts. We are intelligent, we are scholars but in the case of our national language we have done nothing. Progress is not just based on money. Progress is an expression of our work and it is reflected in terms of our position in the world; and a good position can not be attained without a self identify in the world. So we should improve our identity.

Today we are slaves of leaders whom we choose, when will we break the bonds of our slavery ? We are quarrelling among ourselves in the matter of our national language, which has been decided 50 years ago. Oh Indians ! how much time will you take for thinking. A youth union of South India does not accept Hindi as their national language they accept 'Tamil'. We should think that all other languages besides, Hindi' represent a definite

part of the country, "Tamil" is language of Tamil Nadu, 'Punjabi' is the language of 'Punjab' "Kannad" of Karnataka'. But Hindi represents `Hindustan'; the land of "Hindu" which is not a community; which is the culture of our nation. The citizen of Hindustan' is called Hindu' and his language is called `Hindi'. This is the thinking which is needed to be accepted by us. Otherwise in the vote bank policy of politicians, our country will be broken into many parts and we will be just searching for our identity in the world arena.

The revolutionary change is the desire of India to make Hindi' a landmark language. Most of the people of India know 'Hindi', so we have only one way to tie whole of India in one thread. Now about English ! we can speak in English but how can we weep and laugh in English when it is not our mother tongue. So we should accept 'English' as a foreign language and not as a national language. Hindi has a monopoly in our expressions. Our culture and literature is in debted to Hindi', We can attain our position of glory only by giving an honourable place to it. It is time we give the ultimate right of the national language to Hindi'.

✍ Shubhesh Pandey XIth B

"KARGIL" seminds us of the noble deeds of our soldiers. One of our former prime ministers started a slogan "Jai jawan, Jai Kisan", It was Lal Bahadur Shastri. Our present prime minister Mr. Atal Bihari Vajpayee tried his level best to keep friendly terms with Pakistan and added some more words in the slogan which was started by Mr. Lal Bahadur Shastri . The slogan is "Jai jawan, Jai Kisan, and Jai Vigyan." In this small but big war " Vigyan" helped us a lot. But Idon't know why our neighbouring country does not like to be friendly with India. But when Pakistan thniks us its enemy ; we, Indians, must not keep our selves back. we are to fight with them in such a way that the people of Pakistan should be compelled to leave even an inch belonging to India. If Pakistan does not stop this war and infiltration then our soldiers will also give measure for measure. In the end our soldiers fought bravely and many of them became martyres and defeated Pakistan.Hence as an Indian student I must not leave any stone unturned to raise the forehead of our " Bharatmata".I also salute the mortyrs respectfully.

✍ *Kanhaiya Awasthi*

XI B

A TREATISE ÓN ATOMIC EXPLOSIONS OF INDIA

"Wherever I found a living creature, there I found the will to Power.."

It was the result of foresightedness and circumspection of Dr. Homi Jahangir Bhabha and Sir, Dorab Ji Tata Trust, the founder of Indian atomic energy programme.18th of May-74 when Lord Buddha smiled, Pokharana became the successer of Almogordo. It was the courage of Indira Gandhi the first woman Primeminister of India. On 11th and 13th of May'98 , it became the place of victory of patriotism and philanthropy against the external political pressures. The explosion which took place 1974 was an illustration fronting the first page of the book shakti98 and the successive explosions will be its important features. It was a great fruition of being an atomic power for our forces as well as all the natives of the Country.After the long period of 24 years the explosions on 11th and 13th May involved a Thermonuclear explosion, two sub kiloton tests and two fission based explosions It was important that the material used in the explosions was ensiched plutonium -239 which is supposed to be better than Uranium-235 which was used in Pakistani explosions. The head of the Nuclear EnergyProgramme of Pakistan of Dr. Abdul Quadir Khan had aceepted that then had bought the technology from foreign countries while Indian explosions were based on self developed technology.If we consider the thermonuclear explosion of India which was the most important among all explosions it consisted of only 45 kilotons. Dr. Chidam barama says the power of the explosion was lessened to prevent the destruction in the villages situated near the testing place. According to foreign scientists and science reports it consisted only 10 to16 kilotons.It is a great achivement of India because only America,Russia and China have Hydrogen Bomb in the world . In this bomb the effect of explosion is minimum but the effect of radiation is maximum.The launching of these bombs is as important as the invention of these. The latest Indian long ranger missile is Agni which couers only 2500 km range and we must not forget that china with which India hasn't friendly relations has developed Inter continental Balestic Missile of range 11000 kms.Nowadays, when India and Pakistan both are atomic Powers, these explosions will be helpful in the establisment of peace. The Lahore-declare ment is the first step towards it.

Inkant Awasthi
XII 'A'

CHILD - LABOUR : A CURSE

"The children are God's - blessing", it is said. But in this modern age child labour is prevalent all over the world. Not a single country is untouched by this curse.In our country - India, it is the most alarming matter, because our nation is much infested by this problem. Growing population of India is much responsible for this problem. Because of growing population, there is much starvation in India and in other countries like. Pakistan, China etc. Because of starvation, the children have to work in hotels, shops and in other places to satisfy their hunger. The masters of these places treat them cruelly. The masters thinks it is their previledge to harm them and the poor children have to work and do what their masters want.Some times, some criminals kidnap the children and sell them to other persons. These kidnapped children have to forcibhy for those persons and have to beg. In India, Sri Lanka and many other countries, the children are brought from other countries. These children are of the age of 13-17 years. Kidnapped children sometimes have to do prostetution, because of it the deadly diseases like AIDS are spreading speedily all over the world. In this situation, these children have to commit suicide. Illiteracy of the society is an other curse. The illiterate people of backward castes think that more children in family are the medium of more earning. So they push them violencely for earning. In this way, they deprive them from education and they have to work to earn for their families and they never get their essential remuneration. The lives of child-labourers is scattered and full of hazands. In a literate society, no-body wants to raise these children. In India every body is called `Ram' and every girl is called `the status of goddess', but now-a- days , it seams to be a dream. A huge percentage of child - labourers of the world is in India. This is shameful extremely. These child - labourers curse themselves for their bad lives and ill-luck. They also want to read and play like other children. But the society does hot agree with them and always insulted them.It want to remove this curse from India and also from this world, we should accept the unclaimed children and teach them. We should give them a chance to improve themselves. We must go in the villages and in many other small places and make literate the children and the people. We must always stand in opposition of child-labour. Thus, we can remove this curse from the world.

Vaibhav Gupta
XII 'B'

THE ART OF PUBLIC SPEAKING

The ability of speaking effectively is an art, an acquirement rather than a gift. Public speaking is a vehicle through which the ideas of individuals are coveyed to others. The pen is said to be nughtier the sword, but public speaking, if properly cultivated, can yield a much more potent effect on the public. Success in public speaking depends on several factors, are courage, strong will, freshmind, self confidence, good memory and command over vocabulary.

Courage :One must have courage to speak in public. A self diffident man can never make an effective public speech. Many people cut a sorry figure when they have to comeforth and face the public.

Self Confidence : It is only a form of the quality we have spoken of. They alone can conquer who believe they can. Trust in self is the first condition of success for a public speaker.

Fresh Mind : Success in public speaking also depends on fresh mind because wtihout it a man cannot succeed to impress the audience.

Strong Will : "Victory is will", said Napoleaon. If one has the will to succeed as a public speaker, his success in half assured. The ability to speak effectively in public is not a faculty bestowed by Mature.

Good Memory : Without a good memory for facts and figures a public speaker can hardly succeed. A speech can not be convincing unless at is sound in arguements. Memory is secondly thing.

Command Over Vocabulary : Everybody experiences the difficulty of lack of suitable words. We must have a vocabulary, so that we may choose the best expression when required. The words or sentences should be selected so as to convey exactly what we mean.Besides mastery of our language, there are many other things that can help an orator.Public speaking is, thus a power for both good and evil. It depends upon the successful public speaker, now he uses the power which his abilities allow for him.

Dharmendara Singh
XI `B'

अनुगमन

जिनकी साधना विद्यालय
की प्राण-संजीवनी है।

सियाचिन का सामरिक महत्व

इस धरित्री के पुत्रों के लिए भारतमाता एक जीवमान सत्ता है और उसका कण कण उनके लिए पवित्र है अतः उसकी रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है किन्तु सामरिक दृष्टि से भी इस क्षेत्र का महत्व कम नहीं है। लगभग वर्ष भर बर्फ से ढ़का रहने वाला जम्बू काश्मीर के औसत ४८ वर्ग मील में फैला लद्दाखी क्षेत्र में स्थित सियाचिन ग्लैशियर विश्व का सबसे ऊँचा ग्लैशियर है। भौगोलिक रूप से इसकी ऊँचाई लगभग २१०५० फिट है। ७५ K.M लम्बे इस क्षेत्र की चौड़ाई कई स्थानों में २ किमी. से ८ किमी. तक है। जलवायु तथा मौसम की कल्पना इस बात से लगा सकते है। कि वर्ष भर यहाँ का तापमान हिमांक से नीचे रहता है किन्तु शीत ऋतु मे तापमान लगभग -४० से -५० डिग्री तक चला जाता है। इस प्रकार की जलवायु तथा असाध्य मौसम को देखते हुये मन में फिर भी यह प्रश्न उठता है कि प्रत्यक्ष आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी उस दुर्गम क्षेत्र की रक्षा के लिए प्रतिदिन लगभग ५ करोड़ रूपया क्यों व्यय किया जा रहा है ? क्यों पाकिस्तान की बुरी नजर इस क्षेत्र पर लगी हुयी है ? चीन केवल इस क्षेत्र के लिए पाकिस्तान को परोक्ष समर्थन क्यों दे रहा है?

सियाचिन ग्लैशियर के साथ ही यहाँ पर दूसरा मुख्य हिमनद सालोर है जो सियांकागड़ी के भारतीय शीर्ष पर है। उन दोनों हिमनदों को संयुक्त रूप से तीसरा ध्रुव भी कहा जाता है। सियाचिन ग्लैशियर के हिमनद का एक सिरा त्रुब्राघाटी के कोने पर तथा दूसरा सिरा इन्दिरा कोल नामक स्थान पर है। जो कि लगभग २३ हजार फिट ऊपर है। इस इन्दिरा कोल नामक स्थान का सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्व है क्योंकि वह राजमार्ग जो कि काराकोरम, लेह तथा कारगिल के मुख्य सम्पर्क मार्ग (पाभिक काराकोरम मार्ग) है और काश्मीर तथा लद्दाख क्षेत्र को जोड़ने में मुख्य भूमिका अदा करता है, को इन्दिरा कोल नामक स्थान से छिन्न भिन्न किया जा सकता है इस राजमार्ग के आहत होते ही काश्मीर तथा लद्दाख का सम्पर्क शून्य हो जायेगा इस कारण पाकिस्तान इस स्थान को किसी भी कीमत पर हथियाना चाहता है। वैसे चीन के लिए भी यह स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि यहाँ पर कब्जा होते ही अम्साई चिन तथा चीन के उ०प० भाग के बीच की दूरी कम हो जायेगी तथा पाकिस्तान और साथ ही चीन भी काश्मीर (भारत) ने सीधे परवल देने की स्थिति में आ जायेगें। (ध्यान रहे कि १९६२ के भारत चीन युद्ध में हमें इसी अम्साई चिन नामक स्थान पर हार का सामना करना पड़ा था तब से यह क्षेत्र अत्यन्त संवेदनशील बन चुका है।)

विदित है कि सन् १९७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध विराम स्थिति को ही नियन्त्रण रेखा (२० न. जे- ९८४२) माना गया था। इस नियन्त्रण रेखा के उस पार के क्षेत्र (पाक अधिकृत काश्मीर) का उपयोग चीन नें पाकिस्तान के साथ गठजोड़ कर बड़ी ही कुशलता से किया और १९८३ एक कारकोरम मार्ग का निर्माण कर डाला । लगभग ८०० किमी० लम्बे इस मार्ग ने चीन के सियांग क्षेत्र को पाक अधिकृत काश्मीर के मुजफ्फराबाद से जोड़ दिया। यहाँ उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान तथा चीन के बीच स्थलमार्ग का

अवरोध भारत है यदि भारत की यह ज़मीन किसी भी प्रकार से पाकिस्तान के पास जाती है तो चीन और एक सड़क यातायात मार्ग का निर्माण करेगा जो पाकिस्तान होते हुये चीन का सम्पर्क सीधे अफगानिस्तान तथा अरब देशों को जोड़ेगा जिससे चीन की हवाई दूरी कम होगी तथा करोडों डालर की विदेशी मुद्रा की बचत सुनिश्चित होगी । इस प्रकार यह तय है कि चीन अपने निजी स्वार्थ के लिए हमेशा पाकिस्तान की मदद करेगा जब वह हमारी सीमाओं की तरफ बढ़ेगा ।

इसी प्रकार सियांग कोड़ी पर्वत जिस पर सालोर हिमनद स्थित है भारत का शीर्ष है यह स्थान भी पाकिस्तान, चीन और अफगानिस्तान को रास नहीं आता है क्योंकि इसकी ऊँचाई से हमारी चौकियां पाक अधिकृत काश्मीर, काराकोरम मार्ग, पूर्वी सोवियत संघ, अफगानिस्तान तथा चीन के सिक्यांग प्रान्त पर नजर रखे हुये है। उनकी किसी भी गतिविध की सूचना हमें सर्वप्रथम इसी स्थान से प्राप्त होती है। इसी कारण यह स्थान भी संवेदनशील तथा सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह लद्दाखी क्षेत्र भारत की स्वतन्त्रता अखण्डता तथा अस्तित्व के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र को छोड़ने का मतलब होगा एक बार पुनः इस देश को विदेशियों के हाथों सौप देना इसलिए इस क्षेत्र की रक्षा का दायित्व भारतीय सेना के साथ - साथ सभी भारतवसियों का है और हमें किसी भी कीमत पर इसकी रक्षा करनी ही है।

प्रदीप बाजपेई
आचार्य

कारगिल

राष्ट्र भक्ती की शक्ति से जागा वतन।
कारगिल के शहीदों को शत–शत नमन।।
ये गलत नीतियों की अमर बेल है।
ताज पोशी की चाहत का ये खेल है।
माँ के बाजू कटे, पूजते हम चरन
कारगिल .....
पाक नापाक सारे दुरादे लिए।
दोस्ती कर रहा झूठें वादे लिए।
दुश्मनी हम भुला दे जो आये शरन
कारगिल .....
हम भरत वंश की आन पर बढ़ चले।
जिन्दगी मौत से मिल रही थी गले।
बर्फ की श्वेत चादर है मानो कफन।
कारगिल .....
देश हित में जिये, देश हिते में मरे।
मरके भी हैं अमर काम ऐसे करे।
प्राण है आहुति, राष्ट्र का है हवन।
कारगिल .....
मंच पर्वत का है, गोरी बनके चढ़े।
शब्द भेदी यहाँ, तोप तानें खड़े।
एक ही वार में सैकड़ों का मरन।
कारगिल .....
माँ भवानी की शक्ति ये लाल हैं।
शत्रु के सामने वे महा काल हैं
वीर राणा शिवा सा फौलादी है तन।
कारगिल .....
पाक गुमनाम सैनिक हुए सिरफिरे।
चोटियों पर चढ़े, घाटियों में घिरे।
रक्त रजित हुआ, वादियों का चमन
कारगिल .....
वीर अर्जुन सी है लक्ष्य की साधना।
ज्ञान गीता का है, मोक्ष की कामना।
गोद पावन हुई, नभ से बरसें सुमन।
कारगिल .....
तुम जहाँ भी रहो, रूस्तमे हिन्द हो।
वन्दे मातरम् कहो सांस जब बन्द हो।
मातृ भूमि की रज से सना हो ये तन
कारगिल .....
भाड़े की भीड है, युद्ध आता नहीं।
धर्म का युद्ध बेकार जाता नहीं।
वीर गाथा से गूँजे ये धरती गगन
कारगिल .....
कारगिल चल पड़ी, कवि की काया कलम।
हल्दी घाटी की माटी का लेके धरम।
कोटि मस्तक झुके, लाये श्रद्धा सुमन।
कारगिल .....
राष्ट्र भक्ती की शक्ति में जागा बतन
कारगिल के शहीदों को शत–शत नमन।।।

✍ सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

कारगिल से उपजे प्रश्न

पाकिस्तान के विश्वासघात ने इस वर्ष जिस कारगिल प्रकरण को जन्म दिया उसने जहाँ एक ओर विभिन्न विषम परिस्थितियों में भी कुशलतापूर्वक कार्य करने वाली भारतीय सेना के जवानों की अद्वितीय शौर्य व वीरता को पुनः स्थापित किया, वहीं दूसरी ओर किसी भी मुद्दे को विवादों मे घसीटने की क्षमता वाले इस देश की कार्य प्रणाली ने कई प्रश्नों को भी सामने ला खड़ा किया।

वीरता व उत्सर्ग की स्थापित परम्पराओं से लेकर श्रद्धाँजलि समारोहों व विजय के जश्न सभी कुछ तर्क वितर्कों के जाल में फँसनें से नहीं बच सके। तर्क, वितर्क तो किसी भी जीवन्त लोक तन्त्र की शक्ति हुआ करते है, उनमें दोराय नहीं हो सकती। लेकिन विवादों के मकड़जाल में वर्तमान को असहाय बना देना भविष्य के लिये तो शुभ नहीं हो सकता। १९४९,१९६५,१९७१ तथा १९९९ का यह कारगिल प्रकरण भारत की उस नियति को ही दर्शाता है कि उसके अपने ही लोग, अपने ही देश के लिये, स्वयं निरर्थक विवादों को जन्म देते है।

जयचन्द्र की गद्दारी में तो एक पिता के दम्भपूर्ण अधिकार की छाया थी लेकिन उन विचाराकों की मानसिक संवेदना क्यों शून्य हो गयी जिन्होंने अपने ही देश की भूमि कश्मीर का मामला स्वयं विश्वजनमत (संयुक्त राष्ट्र संघ) में ले जाकर इसके हल के सभी रास्ते बंद करवा दिये, साथ ही दे दिया अपनी ही मातृभूमि को वाह नासूर जिसके घाव, रिसते खून को देखना अब मजबूरी बन चुकी है।

इस प्रकरण को यहीं छोडते हुये यदि पुनः कारगिल से उपजे प्रश्नों की श्रृंखला की ओर देखें तो हम पायेंगे कि शुरूआत उसी समय से हो जाती है जब एक चरवाहा घुसपैठियों के भारतीय क्षेत्र में घुस आने की खबर देता है। तमाम खुफिया संगठनों के होते हुये ऐसी महत्वपूर्ण सूचना एक चरवाहे से मिलना अव्यवस्था की कहानी स्पष्ट कर देता है।

अपनी कुशलता व बुद्धिमत्ता से विश्वकी सर्वश्रेष्ठ जासूसी संस्था को भी धता बताकर परमाणु परीक्षणों को करना व कारगिल में होने वाली अतिक्रमण की कार्यवाही से अनभिज्ञ रहना दो नितान्त विरोधी बातें एक साथ इस देश में ही आखिर क्यों होती है। शोधार्थियों के लिए यह एक मजेदार और दिलचस्प 'शोध-विषय' तो बन ही सकता है।

किसी चरवाहे ने ही १९६२ में चीन द्वारा हुई घुसपैठ की सूचना दी थी। अगर घुसपैठियों की सूचना चरवाहे द्वारा ही प्रमाणिकता से मिलती रही है तो खुफिया विभाग को अथवा सरकार को इस सन्दर्भ में अब तक किसी आयोग की नियुक्ति कर देनी चाहिए, शायद अगली बार ऐसा हो तो सरकार (संगठन) उन चरवाहों को सदस्य बताने में संकोच ना कर सकें।

घुसपैठियों के प्रकरण में सरकार के पड़ोसी देश के प्रति अति उत्साह व विश्वास को आरोप के

घेरे में लाना विरोधी पार्टियों के लिये आलोचना का विषय तो है समस्याओं के सौहार्द्र पूर्ण समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा उठाये गये कदमों के अलावा अन्य विकल्प शेष रह ही नहीं गये थे । और अगर कुल मिलाकर कुछ देखा जाय, तो बस 'कूटनीति' का ही कमाल था कि विश्व जनमत इस बार भारत के विरोध मे नहीं बन सका, साथ ही नियन्त्रण रेखा को पार ना करने की दृढ़ नीति ही वह ब्रह्मास्त्र बन गयी जिसने पाकिस्तान की सारी चालों को मात दे दी। यहाँ तक की पाकिस्तान का विश्वसनीय राष्ट्र चीन भी उसकी सहायता को आगे नहीं आ सका। यह बात अलग है कि सामरिक दृष्टि से इस नीति ने भारत का अपेक्षाकृत अधिक नुकसान ही किया व लड़ाई भी लम्बी चली । जब देश के सैनिक सीमा पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर मातृभूमि की रक्षा के लिये संर्घष कर रहे थे और सारे राष्ट्र में देश प्रेम का ज्वार सा उमड़ पड़ रहा था, तब भी इस देश के नेता दलगत राजनीति से ऊपर नहीं उठ सके । यह कैसा लोकतन्त्र है? वह कैसी है सत्ता की लोलुपता? नेताओं के यह कार्य क्यों नहीं आते राष्ट्रदोह की श्रेणी में ?

देश के प्रतिपक्षी नेताओं के बयानों को पाकिस्तानी, मीडिया में अपनी सरकार की पाकिस्तान में हार को छुपाने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है। सबसे ज्यादा समय व प्रमुखता भारत की एक प्रमुख विपक्षी पार्टी की विदेशी मूल की अध्यक्षा को दी जा रही है। उस पार्टी की अध्यक्षा का विदेशी मूल का होना शायद इस बात का कारण हो लेकिन इस अध्यक्षा को 'वाणी' तो लिखित रूप में भारतीय मूल के व्यक्ति ही उपलब्ध कराते है। अब सीमा पर लड़ रहे भारतीय सैनिकों के सामने आयी समस्याओं की यदि समीक्षा की जाये तो सबसे पहले ध्यान जाता है युद्ध में सहायक सैन्य सामग्री की कमी का, भारतीय रक्षा बजट का अधिकांश हिस्सा वेतन में ही चला जाता है। यही कारण है कि हमारी सेना में कई अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों व सहायक सामग्री की कमी महसूस की जा रही है। आज भारत निरन्तर उन्नति करता चला जा रहा है और हम सक्षम भी है लेकिन फिर भी विश्व स्तरीय उत्पादों को बनाने, कलपुर्जे व प्रयुक्त गोला-बारूद का स्वयं व्यापक निर्माण करने मे क्यों कतराते है ?

अब यदि शहादत देने वाले वीर सैनिकों की सूची देखी जाये तो एक ओर इन युवा शहीदों के कारनामों व आत्मोत्सर्ग से जहाँ आँखे नम व सीना चौड़ा हो जाता है वहीं दूसरी ओर एक बात भी कचोटने लगती है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी सेना के उच्च अधिकारियों की आयु उन्हें स्वयं ऐसी शहादतों के लिये रोकती हो। ऐसा कहा जाता है कि १९६२ के चीनी आक्रमण की जाँच के लिये बैठाये गये एक आयोग ने (जिसे सरकार ने सार्वजनिक नही किया) इस सम्बन्ध में टिप्पणी भी की थी ।

हमारी सेनाओं ने कारगिल से दुश्मन को भगा दिया तथा सरकार ने कूटनीतिक क्षेत्र में विजय प्राप्त की। जाहिर है कि विजयोत्सव तो होना ही चाहिये, शूरवीरों का सम्मान करना हमारी संस्कृति रही है, राजनैतिक चुनावी फायदों के लिये इस कारगिल प्रकरण के दुष्प्रयोग की सजा इस देश की जनता दे ही देगी । लेकिन मनाये जाने वाले विजयोत्सवों के प्रति राजनैतिक नज़रयों, की समीक्षा आवश्यक है। एक प्रश्न अब आम हो गया है कि विजयोत्सव क्यों ? इस बात से तो कोई इनकार कर ही नही सकता कि हमने अपनी ही भूमि वापस प्राप्त की हैं, लेकिन अगर वीरता व विजय को इससे ही जोड़ेगे तब तो भारतीय

इतिहास से सभी शूरवीरों के नाम हटाने पड़ जायेगें। पृथ्वीराज चौहान, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त से लेकर छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप वीर छत्रसाल से लेकर सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, आजाद इनमें से काई भी वीरता व विजय के लायक नहीं रह जायेगा । यह सभी किसी विदेशी भूमि को जीतने तो नहीं गये थे । इन्होंने तो अपनी ही जमीन को वापस लिया है, भूमि तो हमारी ही थी । इन मानसिक रूप से दिवालियों, वोटों के भूखे नेताओं की परिभाषा में तो यह वीर पुरूष बेकार का संर्घष करते हुये ही सिद्ध होते हैं। वीरता के यशोगान की हमारी परम्परा रही है । मृत्यु को शाश्वत सत्य मानने वाला व पुनर्जन्म में विश्वास करने वाला यह देश बलिदान को सदैव पूजता रहा है। चाहे वह बलिदान एक दधीचि का हो या एक सैनिक का, वह सदैव ही सम्मान पाता रहा है। भारत का कोई भी नगर, गाँव क्यों न रहा हो शहीद सैनिकों की अन्तिम यात्रा एक विशाल जनसागर का रूप ले लेती है। लोगों में दधीचि ऐसी आतुरता देखी गयी जैसे कोई देवपुरूष का दर्शन कर पुण्य लाभ लेने के लिए एकत्रित हो रहा हो।

लेकिन ऐसे कार्यक्रमों में उद्देश्य के अनुसार जिस मर्यादा की आवश्यकता होती है, इसका ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। वरना सहायता के नाम पर होने वाले श्रद्धाँजलि समारोह केवल "ग्लैमरस अभिव्यक्ति" का साधन मात्र बन जायेंगे तथा वास्तविक उद्देश्य धूमिल पड़ जायेगा। इस संदर्भ में होने वाले संगीतमय (पाप, फैशन) व क्रीडामय श्रद्धांजलि कार्यक्रमों को मुझे भी दूरदर्शन में 'सजीव' देखने का अवसर मिला। विभिन्न विज्ञापनों के बीच में आये इन कार्यक्रमों को देखकर ऐसा ही लगा कि कारगिल के शहीद जवानों के परिवारों की सहायता के नाम पर ऐसा भौंडा प्रदर्शन नहीं होना चाहिये। ऐसे प्रदर्शनों को देखकर शहीदों के परिवारों को क्या खुशी होती होगी ?

ऐसे कार्यक्रमों के बचाव में यह तो कहा जा सकता है कि इनका मुख्य उद्देश्य धन संग्रह करना है। लेकिन धन संग्रह तो इन "ग्लैमरस" कार्यक्रमों के अलावा भी किया जा सकता है और क्या ऐसा नहीं हो रहा है ? पूरे देश का बच्चा -बच्चा विभिन्न माध्यमों से ऐसा ही कर रहा है। इन कार्यक्रमों के आयोजक, प्रस्तुतकर्ता तथा दर्शक तो एक पंथ दो काज (मनोरंजन के साथ दान) के सिद्धान्त पर चल रहे होते है। निः स्वार्थ सैनिकों की ऐसी स्वार्थ पूर्ण सहायता उचित नहीं कही जा सकती ।

कार्यक्रमों के आयोजक व भाग लेने वाले स्वंय इतना बैंक बैलेंस रखे हुए होते है कि यदि वे उसकी सहायता करें तो ऐसे आयोजनों से बचा जा सकता है। और ऐसा करना देश व सैनिकों के लिऐ कुछ करने के उनके भावों को एक अर्थ पूर्ण अभिव्यक्ति भी देता है।

देश के लिए मरने वाला शहीद न ही कभी व्यवस्था की गलती जानना चाहता है न ही कुव्यवस्था का रोना रोता है। उसकी चिताओं में हर वर्ष मेले लगे अथवा नहीं, इससे भी उसका कोई सरोकार नहीं रहता। यह तो इस देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि उन विचारों को एक आन्दोलन का रूप दे जिससे फिर किसी सैनिक को अकारण ही शहादत न देनी पडे । वैसे अगर हम कुछ भी न करें तो भी एक वीर की शहादत कभी रूक नहीं सकेगी । लेकिन स्वयं हम व हमारी सभ्यता कलंकित अवश्य हो जायेगी।

कैलाश जोशी
आचार्य

अन्तर्निहित गुणों का विकास

प्रत्येक व्यक्ति में गुण विद्यमान रहते हैं। कभी–कभी वह अपने विशिष्ट गुण की पहचान नही कर पाता हैं। सीता की खोज में वानरदल समुद्रतट पर बैंठा विचार कर रहा था। सभी उहापोह की स्थिति में थे। जामवंत ने तब हनुमान जी को उनके पराक्रम का स्मरण कराया और उनसे अद्‌भुत पराक्रम को प्रकट करने को कहा। अवसर आने पर ही कोई अपना शुभचिंतक अवसर आने पर ही कोई अपना शुभचिंतक उन गुणों की ओर संकेत करता है।

यदि हमारे अन्दर कोई विशिष्ट गुण है और उसे हम पहचान भी लें तो उस गुण का अत्याधिक विकास करके हम महानता को प्राप्त करत सकते है। स्वामी विवेकानन्द बहुत अच्छा गाते थे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस उनके गीता पाठ को सुनकर भाव विभारे हो उठते थे। उनके इस गुण को स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने परखा व प्रोत्साहित करके उसका विकास किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघ चालक परम पू० माधवराव सदाशिवराव गोलवरकर के अन्दर की अद्‌भुत संगठन क्षमता डा० हेडगेवार ने देखी व उनको इसी कार्य में लगा लिया।

व्यक्ति गुणों को अर्जित भी कर सकता है। एब्राहम लिंकन बोलने की कला का विकास करना चाहते थे। वे घण्टों शीशे के सामने बैठकर भाषण देने का अभ्यास करते थे। बाद में वह एक अच्छे वक्ता बनें। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई गुण अवश्य विद्यमान रहता है। आवश्यकता है उसे पहचानने व उसके विकास करने की। संस्कृत श्लोक में कहा गया है :–

अमंत्र मक्षरं नास्ति, नास्ति मूलभ नौषधम्।
अयोग्य: पुरूषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभ:।।

अपने भीतर के गुणों व अवगुणों को नियंत्रित करके मानसिक सुव्यवस्था करना भी धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य के अन्दर यदि इच्छा शक्ति बलवती है तो वह अपने अभीष्ट को अवश्य प्राप्त करता है।

मुझे स्मरण है कि मेरी कक्षा में एक छात्र आनन्द गुप्त था जो XI में किसी कारणवश एक परीक्षा न दे सका। मैने उससे पूँछा कि यह परीक्षा क्यों नही दी, उसने कहा कि इस बार की परीक्षा में प्रथम स्थान नहीं आएगा ऐसा संदेह है, अत: परीक्षा नही दी। मैने पूँछा क्या यू०पी० बोर्ड में भी तुम्हारा प्रथम स्थान आएगा। उसका उत्तर था निस्संदेह। उसकी इस अदम्य साहस व लक्ष्यपूर्ण दृष्टि से मैं चकित था। उसने अपने जीवन की योजना रचना इस प्रकार बनाई कि वास्तव में चि० आनन्द गुप्त को इण्टरमीडिएट की परीक्षा में उत्तर प्रदेश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।

व्यक्ति के अन्दर गुणों की एक श्रंखला विद्यमान रहती है। एक गुण के आने पर अनेक गुण स्वत: आ जाते हैं। भक्त प्रहलाद के अन्दर एक गुण था वह था उनका शील। उस एक गुण के कारण वे इन्द्र के पद पर पहुँच गए थे।

प्रत्येक मानव में श्रमिक व गैर श्रमिक का भेद न करते हुए सबका एक स्वर से आवाहन करने की क्षमता

अपने जीवन की परम्परा में है। इस क्षमता को जगत के कल्याण हेतु अपने भीतर लाना, उसको परिपूर्ण करने भर की गुण सम्पदा अपने भीतर आविकृत करना उसके लिए अपने समाज को सुव्यवस्थित सूत्रबद्ध, एकात्मक बनाना, उसके भीतर सम्पूर्ण सत्व और स्वाभिमान का जागरण करके उसको चतुर्विध पुरूषार्थो के परम श्रेष्ठ जीवन का अनुगामी बनाना आज आवश्यक है।

हमें उन गुणें पर विचार करना है जिनका आविष्कार करने के लिए हमें प्रयत्नशील होना है।

हम बहुत अधिक विद्वान है किन्तु किसी को दु:खी देखकर हमें कष्ट का अुनभव न हो यह उचित नही है।

मनुष्य में संवदेनशीलता का होना अति आवश्यक है। महाकवि निराला के जीवन को देखिए – समाज के दु:खी व्यक्ति को देखकर वह अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए प्रस्तुत हो जाते है।

यदि किसी व्यक्ति में कोई विशेष गुण है तो उसका उपयोग सामाजिक दृष्टि से भी होना अतीव आवश्यक है।

व्यक्ति में दैवी व तामसी दोनो प्रकार के गुण रहते हैं। दैवी गुणों का विकास करना चाहिए तथा तामसी गुणों का दमन करना चाहिए।

इन गुणों की व्याख्या के लिए एक पौराणिक प्रसंग स्मरण आ रहा है। एक बार देवता व राक्षस दोनो मिलकर सृष्टिकर्ता ब्रहमा जी के पास गये और बोले भगवन! आप किसे अच्छा समझते है। देवो को या दानवों को।

ब्रहमा जी ने कहा इसका उत्तर हम तुम्हे एक प्रयोग के द्वारा देना चाहते है।

प्रयोग इस प्रकार का था कि दानवों व देवताओं को दावत के लिए भेजा गया। एक सुसज्जित कमरे में थालियों में लड्डू रखे गए थे। उनको भर पेट खाने का प्रबन्ध था किन्तु शर्त यह थी कि कोहनी से हाथ न मोड़े जाएं।

अब दोनो के हाथें में कोहनी से खपच्चियॉ बांधकर राक्षसों को दावत के लिए भेजा गया। वे हाथ बिना मोड़े ऊपर तक ले जाते वह वहॉ से मुॅह को निशाना बनाकर लड्डू छोड़ते। थोड़ी देर बाद वहॉ का दृश्य अजीबो गरीब था। अधिकांश लड्डू बिखरे पड़े थे। राक्षसों के मुॅह के चारो ओर मक्खियां भिनभिना रही थी। वे ठीक से लड्डुओं को खा न सके थे।

अब देवताओं की बारी थी। कमरे को साफ करके पुन: उनमें लड्डू भरे गये। देवता भेजे गए। राक्षसों को देखने के लिए बाहर दर्शक दीर्घाओं में रखा गया। देवता कमरों में गए व थालियों मे रखे हुए लड्डुओं को एक दूसरे को बिना कोहनी मोड़े हुआ खिला दिया। परिणाम यह हुआ कि सभी ने भर पेट लड्डू भी खा लिए और कुछ लड्डू बच भी गए। सफाई भी बनी रही।

ब्रहमा जी ने निष्कर्ष निकाला कि जो स्वयं अपने लिए चिंतित रहे अपना ही पेट भरे, दूसरो की चिन्ता न करें वह तामसी प्रवृत्ति है। और जो दूसरों के लिए वही देवता है।

इसी लिए कहा गयाहै "मुनष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।"

हमारे धर्म के दस लक्षण कहे गए है। जिनपर चलकर मनुष्य गुणों का उपार्जन कर सकता है।

धृतिः क्षमा दमोअस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह ।

धीः विद्या सत्यम् अक्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम्" ।।

उपर्युक्त गणो को आत्मसात करने से व्यक्ति देवत्व की ओर पहुँच सकताहै।

केवल एक गुण सत्य ने युधिष्ठिर और हरिश्चन्द्र को महान बना दिया।

हम किसी एक सद्गुण को अपना लें और उसी का विकास करें तो हमारा भी कल्याण हो सकता है किन्तु अपनो गुणों का उपयोग सर्वसुलभ सभी लोगो के लिए होना चाहिए।

गुण सम्पन्न युक्त व्यक्ति से लोग मिलना चाहते हैं। विनम्रता एक ऐसा आभूषण है जिसके रहने से व्यक्ति सुशील लगता है और उनही के लिए महाकति तुलसी ने लिख है –

'विछुरत एक प्राण हरि लेही'।

हमारे अन्दर के गुणों का उपयोग समाज के लिए हो तभी इनकी सार्थकता है और हमेशा ध्यान रखे –

सर्वे सुरिवनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत् ।।

एक चित्रकार ने लिखा है कि मेरे एक नए चित्र बनाने पर मेरी मां मुझे चूम लेती थी। अतः उन्हीं के उत्साहवर्धन के कारण मैं एक महान चित्रकार बन सका।

जन्मजात गुणों को दबाया नहीं जा सकता। अंग्रेजी के एक महान कवि के बचपन की घटना है। उसके पिता उसे कविता लिखने के लिए मना करते थे। परन्तु वह कविता लिखता रहा।

एक बार उसके पिता ने कविता करते रहने के लिए उसे मारा। उसने पिता से क्षमा मांगी किन्तु वह भी कविता में – उसने कहा –

Father Father Mercy Take

I shall never write a poem again.

पिता समझ गया कि इस प्रतिमा को छिपाया नही जा सकता और उसने अपने पुत्र को कविता करने के लिए ही प्रेरित किया वह अंगेजी का एक महान कवि बना।

राजेश कुमार शुक्ल

आचार्य

पृथ्वी का वायुमण्डल

पृथ्वी के चारों तरफ हजारों किलोमीटर तक परिवेष्टित गैसीय आवरण को वायु मण्डल कहा जाता है। क्रिचफील्ड के अनुसार "वायुमण्डल गैसों एवं उसमें निलंबित तरल ठोस पदार्थों का एक मोटा अनाच्छादन है जिससे पृथ्वी पूर्ण रूप से आवेष्टित है इस निर्मित आवरण का धरातल में कुछ गहराई तक प्रवेश है।"

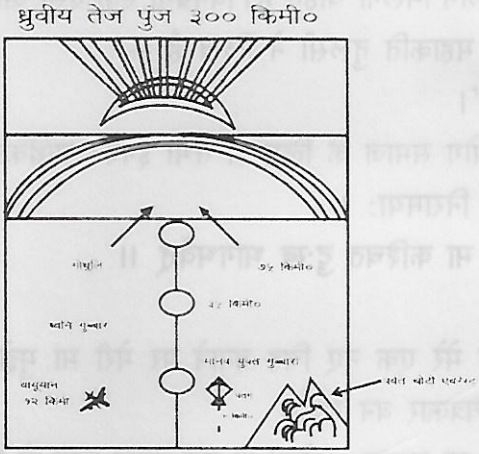

वायु मण्डलीय अध्ययन के साथ

वायु मण्डल का अध्ययन वायुयान, राकेट, उच्च पर्वत शिखर, पतंग एवं परिज्ञायी गुब्बारों आदि के द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त गोधूलि प्रकाश, तीक्ष्णकरक, उल्का, ध्रुवीय ज्योति विद्युत प्रकाश भौतिक एवं रडार, मानवनिर्मित यंत्रों की क्रियाओं के अधार पर भी वायुमण्डल का अध्ययन किया जाता है।

संघटन

वायुमण्डल की रचना अनेक गैसों से हुई है। इसके अतिरिक्त इसमें जल वाष्प, धूल कण एवं जीव जन्तु है।

(१) गैसें - वायुमण्डल में नाइट्रोजन, आक्सीजन, कार्बन डाईआक्साइड, हाईड्रोजन, आर्गन, हीलियम, नियोन और ओजोन अदि गैसें मुख्य हैं। इनमें कुछ भारी तथा कुछ हल्की हैं। भारी गैसे वायुमण्डल की निचली सतह पर जब कि हल्की ऊपरी सतहों पर पायी जाती हैं। इन गैसों की मात्रा तथा भार इस प्रकार हैं।

गैटन बर्ग के अनुसार -

गैस	प्रतीक	मात्रा प्रतिशत में	भार प्रतिशत में
नाइट्रोजन	N_2	७८.०८८	६२५.५२७
आक्सीजन	O_2	२०.९४९	२३.१४३
आर्गन	Ar	०.९३	१.२८२

कार्बनडाईआक्साइड	CO_2	०.०३	०.०४५६
नियान	Ne	०.००१८	....
हीलियम	He	०.०००५	....
ओजोन	O_3	०.००००६	....
हाईड्रोजन	H_2	०.००००५	....

(२) जल वाष्प- वैज्ञानिकों के अनुसार धरातल से प्रति सेकेण्ड १.६ करोड टन जलवाष्प वायुमण्डल को प्राप्त होता है। वायुमण्डल की निचली सतहों में जल वाष्प ८००० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी मात्रा वायुमण्डल के ताप पर निर्भर करती है। वायु में अधिक ताप रहने पर वह अधिक जलवाष्प ग्रहण करती है जब कि कम ताप रहने पर कम जलवाष्प ग्रहण करती है भूमध्य रेखा के ओस पास वायुमण्डल में अधिक ताप के कारण जलवाष्प की मात्रा अधिक रहती है जब कि ध्रुवों के पास कम ताप के कारण जल वाष्प की मात्रा कम रहती है विभिन्न अक्षांशों पर तत्वों का प्रतिशत इस प्रकार है। -

विभिन्न अक्षांशों पर तत्वों का प्रतिशत

अक्षांश	नाइट्रोजन	आक्सीजन	आर्गन	जलवाष्प	कार्बनडाई आक्साइड
० अक्षांश (भूमध्य रेखा)	७५.९९	२०.४४	०.९२	२.९३	०.०२
५०° उत्तरी	७७.३२	२०.८०	०.९४	०.९२	०.०२
७०° उत्तरी	७७.८२	२०.९४	०.९४	०.२२	०.०३

वायु में जल वाष्प की मात्रा किसी तापमान पर इतनी अधिक हो जाये कि उससे अधिक वाष्प ग्रहण न कर सके तो संतृप्त वायु कहा जाता है। वायुमण्डल में ऊँचाई के अनुसार जलवाष्प की मात्रा कम होती जाती है। यह कमी ५ किमी की ऊँचाई तक होती हैं एवं पुनः ११ किमी से ६० किमी तक बढ़ती है। धरातल पर बर्फ, वर्षा ओस वाला कुहरा आदि की उत्पति का कारण जल वाष्प ही होता है।

संतृप्त वायु जल वाष्प की मात्रा-

वायु का ताप (डिग्री का फारेन हाईट में)	जल वाष्प (ग्रेन प्रति धन कुट)	वायु का ताप (डिग्री का फारेन हइट में)	जल वाष्प (ग्रेन प्रति धनफुट)
-३०	०.१०	४०	२.८६
-२०	०.१७	५०	४.१७
-१०	०.२९	६०	५.८०
०	०.४८	७०	[illegible]

१०	०.७८	८०	११.०६
२०	१.२४	९०	१४.९५
३०	१.९४	१००	१९.९७
		११०	२६.३४

(३) धूलिकण-वायु मण्डल में धूलिकणों की स्थिति भी महत्वपूर्ण है। यह धूलिकण सागर से नमक से सूक्ष्म कण, ज्वालामुखी उद्‌भेदन एवं उल्का पात से प्राप्त होते है। यह धूलिकण प्रकाश को फैलाने में सहायता प्रदान करते हैं। वाष्प इन्ही धूलिकणों पर जमता है। धूलिकणों की विद्यमानता के कारण ही आकाश का रंग नीला दृष्टिगोचर होता है। धरातल के निकट वायुमण्डल में धूलिकण अधिक मात्रा में पाये जाते है। ऊँचाई के अनुसार इसकी मात्रा में कमी होती है। यह धूलिकण कुहरा, धुधं, इन्द्र धनुष, एवं सांध्य प्रकाश के निर्माण में भी सहायक होते हैं।

(४) जीव जन्तु - वायुमण्डल में कुछ जीव-जन्तुओं के विद्यमान होने के भी प्रमाण मिले हैं। किन्तु अति सूक्ष्म होने के कारण यह दिखाई नहीं देते हैं। जीव जन्तु अधिक तर वायुमण्डल की निचली परत में धरातल के समीप पाये जाते हैं।

(५) ओजोन- यह एक प्रकार की अक्रिय गैस है। यह गैस ही सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश अंश अपने में अवशोषित कर लेती है। मौसम की अनुकूलता व प्रतिकूलता का प्रभाव भी इनकी मात्रा पर पड़ता है।

(६) संरचना- बहुत समय तक मानव वायुमण्डल की निचली तह के बारे में ही जानकारी रखता था क्योंकि यह निचला भाग ही बहुत समय तक मानव के लिये उपयोगी रहा है। वायुमण्डल की ऊपरी तहों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास बीसवी शताब्दी में प्रारम्भ हुआ क्योंकि रेडियो एवं वायुयान युग के प्रारम्भ होने के साथ ही वायुमण्डल की ऊपरी तहों का ज्ञान भी आवश्यक हो गया। गत १५० वर्षो के दौरान मौसम सूचक गुब्बारों, राकेटों, वायुयान की उड़ानों, ध्वनि एवं रेडियो तरंगे, कृत्रिम उपग्रहों, अंतरिक्ष यानों तथा आकाशीय पिण्डों के निरीक्षण एवं अध्ययन से वायुमण्डल के बारे में अनेक जानकरियां प्राप्त हुई। इसी दौरान मेजर क्राडनी, डा० विकार्ड, कैप्टन स्थीनस एवं वेसकी अदि वैज्ञानिकों ने वायु-मण्डल की साहसपूर्ण यात्रायें भी कीं। अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष (१९५७-६२) के अन्तर्गत वायुमण्डल के अनेक रहस्यमय तथ्यों को प्रकट किया और दो विचार धारायें सामने आयीं -

(१) वायुमण्डल की संरचना सम्बन्धी सामान्य विचारधारा

(२) वायुमण्डल की संरचना सम्बन्धी नवीन विचारधारा -

१- सामान्य विचाराधारा के अनुसार वायुमण्डल को पाँच प्रमुख परतों में विभक्त किया गया है। जिसका आधार वायुमण्डल में तापमान का ऊर्ध्वाधर वितरण है।

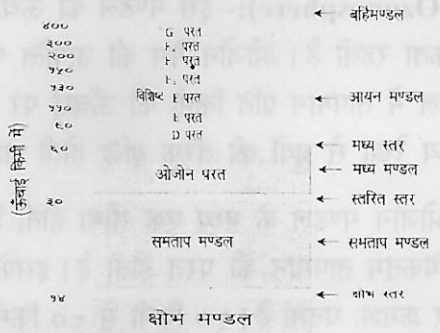

१-क्षोभ मण्डल - [Troposphere] वायुमण्डल की निचली तह जिसमें सभी हवायें एकत्र रहती है। और वायुमण्डल के सम्पूर्ण भार का ७५ प्रतिशत संकेन्द्रित रहता है, क्षोभ मण्डल कहलाता है। इसे परिवर्तन मण्डल भी कहा जाता है। क्योंकि धरातल से ऊपर जाने पर प्रति १६५ मीटर पर १° से० ग्रे० की दर से तापमान कम हो जाता है। इस मण्डल की औसत ऊँचाई १२ किमी है। भूमध्य रेखा पर इसकी ऊँचाई लगभग १६ किमी० मध्य अक्षांशों पर ११ किमी० एवं ध्रुवों पर ६.५ किमी रहती है। इस मण्डल को वायुदाब अधिक जबकि ऊपरी सीमा पर मात्र एक चौथाई रह जाता है। आंधी, तूफान, बादल की गर्जन तथा विद्युत प्रकश की क्रिया इसी मण्डल में घटित होती है। चूँकि इस मण्डल में संवहनीय हवायें चलती है। इसलिये इसे विक्षुब्ध संवहन स्तर भी कहा जाता है।

२-समताप मण्डल - [Strato sphere] क्षोभ मण्डल के बाद एक ऐसी सीमा आती है जिसे क्षोभ सीमा कहते है। इसकी ऊँचाई १.५ किमी होती है। इस सीमा से समताप मण्डल प्रारम्भ हाता है। जो कि २० किमी. से ४० किमी. की ऊँचाई तक रहता है। इस मण्डल का तापमान लगभग एक समान रहता है। 'तिसराँ द बोर' नामक वैज्ञानिक ने सन् १८१८ में इस मण्डल की खोज की थी । इस मण्डल में कर्क एवं मकर रेखाओं पर तापमान- ८०° C तथा मध्यवर्ती अक्षाशों तथा मध्यवर्ती अक्षांशों पर- ५५° C रहता है। इस भाग में संवहनीय हवायें न चलकर क्षैतिज प्रकृति की हवायें प्रवाहित होती है।

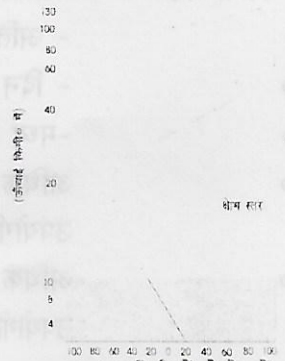

तापमान डिग्री में से.ग्रे. में.

(३) ओजोन मण्डल (Ozonosphere):- इस मण्डल की ऊँचाई ४० किमी० से ५० किमी तक है यहाँ ओजोन गैस की अधिकता रहती है। ओजोन गैस की उत्पत्ति पराबैगनी किरणों द्वारा आक्सीजन गैस का नियोजन है। इस मण्डल में तापमान प्रति किमी की ऊँचाई पर १६° से०ग्रे० अधिक हो जाता है। ओजोन गैस की मात्रा में भूमध्य रेखा से ध्रुवों की तरफ वृद्धि होती जा रही है।

समताप मण्डल एवं ओजोन मण्डल के मध्य एक सीमा होती हैं जिसे स्तरित सीमा कहा जाता है। [Stratopause] यह अधिकतम तापमान की परत होती है। इसके ऊपर ८० किमी की ऊँचाई तक तापमान पुनः ऊँचाई के अनुसार क्रमशः घटता है। ५० किमी से ८० किमी के मध्य की परत को वायुमण्डल का मध्य मण्डल [Mesosphere] कहते हैं। इसका ऊपरी भाग मध्य स्तर [Mesopaure] कहलाता है। इस मण्डल में न्यूनतम ताप -११० C रहता है। मध्य स्तर में 'निशा दीप्ति मेघ' मिलते हैं। ६० किमी पर स्थित परत रेडियो तंरगों को दिन में अवशोषित कर लेती है। इसीलिये रात्रि के समय रेडियो साफ सुनाई देता है।

(४) आयन मण्डल (Ionosphere):- यह मण्डल ८० किमी से ३२० किमी. तक पाया जाता है। इस मण्डल में पराबैगनी किरणों की अधिकता के कारण सूर्य विकिरण द्वारा गैसें आयनित हो जाती है। इसीलिये इसे आयन मण्डल कहा जाता है। इस आयन मण्डल की परत के कारण ही रेडिया तंरगे पृथ्वी पर वापस आती हैं। क्योंकि इसमें विद्युत चालकता अत्यन्त सबल है। इस मण्डल के विषय में ध्वनि तरंगों, उल्काओं का वायु घर्षण में चमक, उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव की सुमेरू ज्योति, रात्रि में आकाश का वर्णपट, अंतरिक्ष किरणों आदि की सहायता से जानकारी प्राप्त करते हैं।

आयन मण्डल विभिन्न आयनीकृत परतों में विभक्त है जिसे कृपे महोदय ने विशेष नामों से सम्बोधित किया हैं जो निम्न प्रकार है।-

परत	ऊँचाई	विशेष प्रभाव
D परत	६० से ९० किमी तक	-दीर्घ रेडियो तरंगो का परावर्तन
E परत	९० से १३० किमी तक	-रेडियो की मध्य व लघु तरंगों का परिवर्तन
विशिष्ट E परत	११० किमी०	- अति लघु तरंगों पर प्रभाव
E_1 परत	१५० किमी०	- दिन में अस्तित्व, रात्रि में विलीन
F_1 परत	१५० किमी०	-मध्य व लघु रेडियो तरंगों का परावर्तन
F_2 परत	३०० किमी०	अधिक दूरी के लिये रेडियो संदेश प्रेषण हेतु उपयोगी
G परत	४०० किमी०	अधिक दूरी के लिये रेडियो संदेश प्रेषण हेतु उपयोगी, इसकी उत्पत्ति नाइट्रोजन के परमाणुओं पर पराबैगनी फोटोन की प्रतिक्रिया के कारण

बाहिर्मण्डल- (Exosphere) इस मण्डल की ऊँचाई ५०० किमी० से १००० किमी० तक मानी जाती है इस मण्डल का विशेष अध्ययन लेमैन स्पीजर ने किया है। इस मण्डलकी वायु में हाईड्रोजन और हीलियम गैसों की प्रधानता रहती है। वायुमण्डल की बाह्य सीमा पर तापमान लगभग ५५६८°C तक हो जाता है। किंतु यह तापमान हमारी पृथ्वी के तापमान से भिन्न होता है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यदि अंतरिक्ष यात्री इस तापमान में अपना हाथ यान से बाहर निकाले तो संभवतः उसे गरमी का एहसास नही होगा।

(२) वायुमण्डल की संरचना सम्बन्धी नवीन विचार धारा

अंतर्राष्ट्रीय भू भौतिक वर्ष (१९५७-६२) के कार्यक्रमों के अन्तर्गत किये गये वायुमण्डलीय शोध कार्यो से वायुमण्डल की संरचना सम्बन्धी मान्यताओं में कुछ संशोधन हुआ है। 'अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष विचार गोष्ठी की १९६२ की रिपोर्ट आई०सी०ए०ओ० का प्रमाणिक वायुमण्डल ही इस नवीन परिकल्पना का आधार है। इस विचारधारा के वैज्ञानिक मार्सेल निकोलेट के अनुसार वायुमण्डल को मूलतः दो स्थूल भागों विभक्त किया गया है। १- सम-मण्डल [Homosphere]

२-विषम-मण्डल [Heterosphere]

१- सम-मण्डल :-

यह वायु मण्डल का सबसे निचला भाग है। इसकी बाह्य सीमा ८८ किमी० निर्धारित की गई है। इसे तीन उपमण्डलों में विभक्त किया गया है।-

(i) क्षोभ मण्डल (ii) समताप मण्डल (iii) मध्य मण्डल

२. विषम-मण्डल इस मण्डल के विभिन्न परतों में रासायनिक एवं भौतिक गुणों में विषमता पाई जाती है। इसीलिये इसे विषम मण्डल कहा गया है। इस मण्डल में ऊँचाई के साथ-साथ तापमान भी बढ़ता जाता है। इस मण्डल का अधिकतम तापमान लगभग १०,००० फा०हा० है। विषम मण्डल को विभिन्न रासायनिक तत्वों की प्रधानता के आधार पर निम्न लिखित स्तरो में विभाजित किया गया है।

(i) नाइट्रोजन स्तर -धरातल से ऊँचाई २०० किमी०
(ii) आक्सीजन स्तर -धरातल से ऊँचाई ११२० किमी०
(iii) हीलियम स्तर - धरातल से ऊँचाई ३५२० किमी०
(iv) हाइड्रोजन स्तर- वायु मण्डल की बाह्य सीमा तक

राकेट एवं उपग्रहों के माध्यम से वायुमण्डल के बाह्य भाग में 'वान एलेन विकिरण परत' की खोज हुई है। ये इलेक्ट्रान एवं प्रोटॉन जैसे अत्यधिक ऊर्जा के परमाणुओं के क्षेत्र है जिनकी उत्पत्ति सूर्य से गैसों के प्रवाह एवं अंतरिक्ष किरणों से मालूम पडती है। अंतरिक्ष किरणों से निचली परत बनती है जिसकी

ऊँचाई पृथ्वी से ३००० किमी० है। ऊपरी परत सूर्य की गैसों से बनी है जिसकी ऊँचाई १६००० किमी० से १,००,००० किमी तक है। इसका गुरूत्व केन्द्र २५००० किमी है। वान एलेन पेटी में सबसे अधिक विकिरण तीव्रता भू चुम्बकीय विषुवत वृत्त पर होता है। और ध्रुव की ओर से कम हो जाता है। ध्रुवीय ज्याति भू-चुम्बकीय विषुवत वृत्त की तरफ कम हो जाती है। वान एलेन पेटी तथा इससे सम्बन्धित क्षेत्र को 'चुम्बकीय मण्डल' भी कहा जाता है।

वायुमण्डल का महत्व

यदि पृथ्वी का वायुमण्डलीय आवरण नहीं होता तो सूर्य का संपूर्ण तापमान पृथ्वी पर आ जाता और जीवन समाप्त हो जाता । वायुमण्डल में प्रतिरोधात्मक शक्ति होने के कारण अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाले उल्का अदि आकाशीय पिण्ड धरातल पर पँहुचने से पहले से पहले ही नष्ट हो जाते है। वायुमण्डल के अभाव में दिन के समय धरातल का तापमान अत्यधिक ऊँचा (लगभग १००°C) एवं रात्रि में पार्थिव विकिरण के कारण अत्यधिक नीचा (लगभग -180°C) तक हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि वायु मण्डलीय आवरण के कारण ही पृथ्वी तल का तापमान जीवधारियों के अनुकूल बना रहता है। जल वाष्प मुक्त होने के कारण पृथ्वी का वायुमण्डल विभिन्न प्रकार की मौसमी घटनाओं जैसे -मेघ, पवन, तूफान, विद्युत, गर्जन एवं विद्युत प्रकाश अदि को उत्पन्न करता है।

वर्तमान समय में भी स्थल जलवायु एवं वानस्पतिक तथा जीव जगत की पारस्परिक क्रियाओं प्रतिक्रियाओं के कारण वायुमण्डल एवं धरातल के मध्य आदान प्रदान चलता रहता है। यदि एक ओर धरातल पर होने वाली विभिन्न क्रियाओं मे वायुमण्डलीय आक्सीजन का व्यय होता है तो दूसरी ओर इसके प्रतिदान स्वरूप उसे कार्बन- डाईआक्साइड प्राप्त होती है। जहाँ एक ओर मिट्टी में प्राप्त वैक्टीरिया वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का अवशोषण करते है। वही दूसरी ओर विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं से यह पुनः वायुमण्डल में वापस भेज दिया जाता है। इस प्रकार विभिन्न वनस्पतियों , जीव धारियों, वैक्टीरिया एवं रासायनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से वायुमण्डल तथा स्थल एवं जल मण्डल में संतुलन की स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार यदि पृथ्वी का यह वायुमण्डल नही होता तो अन्य ग्रहों की भाँति पृथ्वी पर भी जीवन का नामो निशान नहीं होता।

श्रीप्रकाश ओझा
आचार्य

अभिप्रेत

अनोखे कीर्तिमान
जो विद्यालय के
यशोगान हैं।

हमारा परिचय

युग-दधीची पं.दीनदयाल उपाध्याय का आज ८४ वाँ जन्म दिवस है। दिवस है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें ' का जीवन-मन्त्र लेकर चलने वाले इस आर्ष पराम्परा के ध्वजवाहक ने भारत माता के चरणों में अपना जीवन न्योछावर का दिया। यद्यपि सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रूढ़ शब्दावली हो सकती है: किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पाण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम पाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शों को मूर्त रूप से देने का शपथ -पत्र है। इसका एक-एक अक्षर अंकित करने का महत्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरूषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूण्य भाऊराव, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा परमपूज्य श्री गुरू जी, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमूर्ति ममतामवी बूजी और इसकी कंचन-काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी माननीय बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरणीय रहेंगे।

संवत २०२६ की गुरू पूर्णिमा (१८ जुलाई १९७०) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना विद्यालय आज अपना अटठ्ाईसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड़यन्त्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विषवृक्ष फिर कभी न पनपें इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैः-शैनेः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोद्दीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यवसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिगशैल-शृंग।

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र २४ छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज वैज्ञानिक वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है। जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मवर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिग अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजीने अपने नितान्त

व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्कतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता यथा विज्ञान वीथी, भाऊराव भवन छात्रावास, प्रार्चाय-आवास, माधव-समृति क्रीडा-परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक ७ कंक्षाओं के १५ अनुभागों में छात्रों की संख्या ७३२ । इनमें से २०५ छात्रावासीय है जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड तथा पीछे भाऊराव -भवन में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही बिहार, बंगाल आदि प्रदेशों के छात्र भी है। वास्तव में हमारी अभिलाषा और प्रयास तो इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवसीय विद्यालय बनाने का है, जिससे अपना व्यक्ति-निर्माण का कार्य हम और अधिक प्रभावी ढ़ंग से कर सकें।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यो की संख्या प्रधानाचार्य सहित २६ है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक है।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रू मूल्य की ११००० पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में ७ दैनिक, ३ साप्ताहिक तथा ६ मासिक पत्र पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि नियमित रूप से श्याम-पटों पर लिखे जाते है।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल १९७५ में तथा द्वादश का प्रथम दल १९८१ में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ । परीक्षा -परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा हैं प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के आधार पर ही शासन विगत तीन वर्षो से विद्यालय को इण्टरमीडियट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। दशम कक्षा का २५ वर्षों तथा द्वादश का १८ वर्षों का परिणाम सारांशतः निम्नलिखित है।

	दशम (२५ वर्षों का)		द्वादश (१८ वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	२०७५	-	१६६६	-
उत्तीर्ण	२०६०	९९.२७	१६५२	९९.१५
प्रथम श्रेणी	१७४९	८४.२८	१३१३	७८.९४
द्वितीय श्रेणी	०३०१	१४.५६	०३३४	२१.५
तृतीय श्रेणी	००१०	०.४	०००५	००.३
ससम्मान	८३३	४०	३२०	१६.८
प्रदेश में स्थान	७७		५१	

प्रतियोगी परीक्षायें

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था, जो अभी तक सतत् प्रवाहमान है। इसके अतिरिक्त सैन्य सेवा परीक्षाओं, प्रशासनिक परीक्षाओं तथा भारतीय पुलिस सेवा में भी कई विद्यार्थी चयनित हो चुके है।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो-खो, कबड्डी, वॉलीबाल, टेबल टेनिस, क्रिकेट, बैडमिन्टन जैस खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है।

विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया गया है। इस दृष्टि से एन.सी.सी. की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही है। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य है।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वालम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से प्रायः प्रति वर्ष विद्यलय के छात्र देशदर्शन हेतु जाते रहे है। विगत पच्चीस वर्षो में अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके है। प्रसन्नता की बात यह है कि गत तीन वर्षो से यह दायित्व पूर्व छात्रों की संस्था युग -भारतीय ने ओढ़ लिया है-

गंगोत्री-गोमुख (१९९६), पुरी -कोणार्क (१९९७) एवं बदरी-केदार (१९९८) यात्राओं का आयोजन कर।

निर्भीक-सुचारू अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थायें कार्य कराती है- अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरूण-भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते है। छात्रावास में विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

युग-भारती

बाल, किशोर और तरूण-भारती की श्रृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था । जिस उदात्त लक्ष्य की प्रप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र के विद्यालय से जुड़ाव की समाप्ति न माना जाये। इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान,कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरूण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के संघ पंजीकृत हो चुकी है तथा कार्य कर रहीं है।

ओमशंकर त्रिपाठी

(प्रधानाचार्य)

क्षण भी नहीं विराम हमारा प्रण है।

(शैक्षिक परीक्षा परिणाम - सत्र १९९८-९९)

परीक्षा	कुल छात्र	प्रविष्ट	उत्तीर्ण (परिणाम)	ससम्मान	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	प्रदेश में स्थान
हाईस्कूल	९२	९२	९२ (१०० %)	५४	३८	००	००	२०वाँ
इन्टरमीडियट	१०९	१०९	१०९ (१००%)	५९	१०९	००	००	५वाँ, ८वाँ, ८वाँ, १३वाँ १३वाँ, १९वाँ, २०वाँ, २२वाँ २२वाँ, २२ वाँ (कुल दस स्थान)

(३) विविधि प्रतियोगी परीक्षायें:

(क) आई० आई० टी०

१ चि० अजय वर्मा
२ चि० अश्विनी दीक्षित
३ चि० यज्ञदत्त मिश्र
४ चि० अवधेश दीक्षित
५ चि० ब्रजेश सचान
६ चि० महेन्द्र मोहन दुबे
७ चि० कृष्ण कुमार शुक्ला
८ चि० पुनीत सिन्हा
९ चि० ओम कान्त शुक्ल
१० चि० निशान्त प्रताप सिंह
११ चि० कौशलेन्द्र प्रताप सिंह

(ख) रूड़की इन्जीनियरिंग कालेज

१ चि० विवेक चौरसिया
२ चि० पंकज कटियार
३ चि० अरूण सिंह
४ चि० जलज कुमार
५ चि० अजय कुमार वर्मा

(ग) पिलानी इन्जीनियरिंग कालेज

१ चि० शशांक मिश्र
२ चि० संदीप पाल

(घ) एम०एन०आर०इन्जीनियरिंग कालेज

कुल ४५ छात्र

(ङ) चिकित्सा क्षेत्र

१ चि० पंकज चतुर्वेदी
२ चि० विपुल चतुर्वेदी
३ चि० अवनीत गुप्त
४ चि० अतुल श्रीवास्तव
५ चि० नवीन श्रीवास्तव

विद्यालय के वे सुमन जो देश के कोने-कोने तक अपनी सुरभि बिखेरने के लिए संकल्प सिद्ध है।

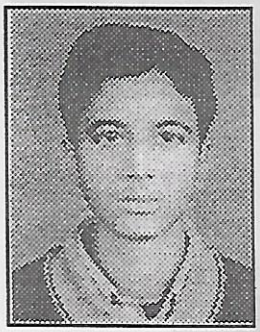

शशांक मिश्र

इण्टर मीडिएट
पाँचवा स्थान

संदीप पाल

इण्टर मीडिएट
आठ्वाँ स्थान

प्रभात अवस्थी

इण्टर मीडिएट
आठ्वाँ स्थान

ओमजी ओमर

इण्टर मीडिएट
तेरहवाँ स्थान

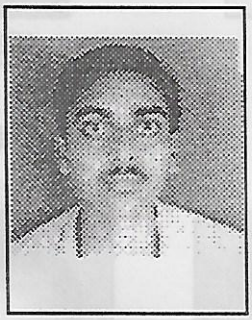

कृष्ण कुमार

इण्टर मीडिएट
तेरहवाँ स्थान

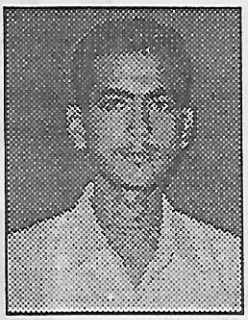

विशाल द्विवेदी

इण्टर मीडिएट
उन्नीसवाँ स्थान

अनुराग दीक्षित
इण्टर मीडिएट
बीसवाँ स्थान

नीरज अग्रवाल
इण्टर मीडिएट
बाइसवाँ स्थान

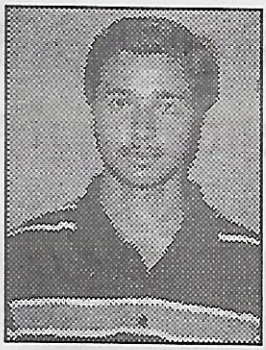

सुनील शर्मा
इण्टर मीडिएट
बाइसवाँ स्थान

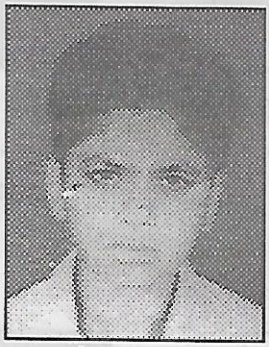

राजेश गुप्ता
इण्टर मीडिएट
बीइसवाँ स्थान

अंकित सखूजा
हाईस्कूल
बीसवाँ स्थान

अन्तर्राष्ट्रीय युवा संसद संगोष्ठी में भारत का प्रतिनिधित्व करने पेरिस जा रहे है। →

अंकुर सिंह गौर
एकादश 'क'

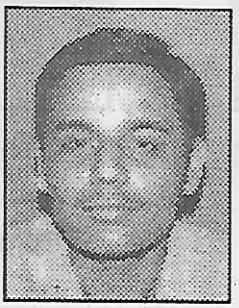

विकास दीक्षित
द्वादश 'ख'

← डा० सम्पूर्णानन्द विवाद प्रतियोगिता में प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ वक्ता

क्या देश के विकास की राह मे अवरोधक यह जनसंख्या वृद्धि कभी रूक पायेगी ?

प्रदेशीय श्री सम्पूर्णानन्द वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में पुरस्कृत चि० विकास दीक्षित का मेरठ जनपद में विषय के विपक्ष में तर्क।

अध्यक्ष महोदय!

बड़ी देर से एक शिष्ट श्रोता की भाति सतर्क होकर तर्क और कुतर्क मे उलझी देश की तरूणाई को देख और सुन रहा हूँ। हमारे विषय निर्धारक महोदय ने बड़ी चतुराई से सर्वथा भौतिक किंवा अमर्यादित विषय को निर्मित के दौर से गुजर रहे अनुभव और ज्ञान से अपरिपक्व भावनाओं और विचारों से सुकोमल हम विद्यार्थियों के मध्य उछालकर हमसे क्या अपेक्षा की है मै कह नहीं सकता किन्तु समस्या संकुल समाज का अंश होने के नाते इस विषय ने हमारी चेतानाओं को झकझोर दिया और भावनाओं को मथ दिया । अगर मै ज्योतिषी होता तो विवाद निर्विवाद था, यदि मै राजनेता होता तो मात्र आश्वासन ही विषय को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त होते यदि मै जनसंख्या शास्त्री होता तो आँकडों को भाषा के सम्बल की आवश्यकता ही न पडती और यदि मै साहित्यकार होता तो मेरा भावुक मन जनसंख्या को राष्ट्र के विकास् की राह में अवरोधक मानने को तैयार ही न होता परन्तु विद्यार्थी होने के नाते इस सदन से विनम्र अनुमति लेते हुए कहना चाहता हूँ कि प्रतियोगिता में सम्मिलित होने वाला भारत का भविष्य बडी निर्लज्जता के साथ जनसंख्या वृद्धि रोके जाने की वकालत कर रहा है। जवानी जो कुछ बोलती है उसका प्रभाव होता हैं जो करती है उसके परिणाम पूरे देश को प्रभावित करते है। हम उनसे अपना विनम्र विरोध व्यक्त करते हुए कहना चाहते है कि जन जर्नादन का ही अशं है और जनार्दन कभी बोझ भी बन सकता है यह विचार निन्दनीय है। आखिर हमे यह अधिकार किसने दिया कि हम दूसरों को संख्या और स्वंय को ही जन माने । यह अधिकार कुछ साधन सम्पन्न अमीरों ने स्वतः अपने हाथों में ले लिया और अब उनसे जीने का अधिकार भी छीन लेना चाहते है। जन के प्रति अविश्वास सम्पूर्ण व्यवस्था के प्रति अविश्वास है और अविश्वास कभी सकारात्मक परिणाम नहीं देता।

फिनलैण्ड, आइसलैण्ड, डेनमार्क , स्विटजरलैण्ड इत्यादि देशों में जनसंख्या वृद्धि की दर ऋणात्मक है। यदि हम अपने विपक्षी साथियों की दलीलों को माने तो वहाँ के लोगों को प्रसन्न होना चाहिये फिर वहाँ की सरकारें जनसंख्या वृद्धि के उपाय क्यों कर रही है।

जनसंख्या वृद्धि रूकेगी और प्रकृति की विनाश लीला उसे रोकेगी इस प्रकार के तर्क हमारे प्रतिपक्षी साथियों द्वारा दिये गये तो महोदय यदि विनाश के तांडव ने सब कुछ लीललिया और सारा सांसारिक प्रपंच ही विलुप्त हो गया तब यह जनसंख्या वृद्धि रूकी तो रूकने से लाभ ही क्या ।

कुछ प्रतिपक्षी मित्रों ने जनसख्या वृद्धि रोकने के बड़े ही हास्यास्पद तर्क दिए अनेक कृत्तिम उपायों की चर्चा भी की परन्तु परिणामों की अनदेखी की। प्रकृति के स्वाभाविक प्रवाह को अप्राकृतिक तरीके से रोकने के कैसे विध्वंसकारी परिणाम होते है। इसकी कल्पना भी यदि मन मे होती तो आज के ईजाद किए गए नए-नए तरीकों जिनका नाम लेने मे भी मर्यादा सकुचाती है, उन्हें जनसंख्या वृद्धि रोकने के कारगर उपायों में न गिनाया गया होता। इन तरीकों से जनसंख्या वृद्धि तो रूकती नहीं दिखाई देती है। इनके अश्लील प्रचार के कारण राष्ट्र की संस्कृति और अस्मिता सतृत आहत हो रही है।

महोदय केवल भाषायी प्रपंच द्वारा कोरी कल्पनाओं के आधार पर एक भविष्यवक्ता की तरह यह कह देना कि जनसंख्या वृद्धि रूकेगी, किसी भी प्रकार से तर्कसंगत नही लगता।

अतीत की ओर देखकर वर्तमान का अनुशीलन करते हुये ही भविष्य के बारे में कुछ कहा जा सकता हैं सन् १८२० में सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या १ बिलियन थी, जो अगले ११० वर्षो में २ बिलियान अगले ३० वर्षो में ३ बिलियन , फिर १५ वर्षो में ४ बिलियन, और अब ६बिलियन के करीब पहुँच गयी है। सन्१८२० में जो जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व की थी १९९९ में भारत की हो गयी, और २०४० तक इसके २बिलियन पार करने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। अर्थात ११० वर्षो मे जितनी जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व में बढी वह मात्र ४० वर्षो में भारत में बढ जायेगी।

जनसंख्या विज्ञान- (**Demography**) के आधार पर जनसंख्या वृद्धि रूकने के संकेतों की चर्चा हुयी परंतु १९५० में जब जनसंख्या की वृद्धिदर १.४ प्रतिशत थी तो **Demography** की भविष्यवाणी थी कि १ प्रतिशत हो जायेगी जो कि बढ़कर १.८ प्रतिशत हो गयी और अब भी कहा जा रहा है कि इसे प्रयास पूर्वक १ प्रतिशत कर लिया जायेगा।

महोदय इस विविधता पूर्ण देश में इस प्रकार की भविष्यावाणियाँ कभी सत्य का स्पर्श ही नही कर सकी और फिर संयुक्त राष्ट्र संघ की वार्षिक रिपोर्ट को भी तो अनदेखा नही किया जा सकता जो यह बताती है कि १९५० की तुलना में २००० में जनसंख्या वृद्धि १९८ प्रतिशत हो जायेगी ।

हमारे मित्रों ने सदन को यह समझाने का प्रयत्न किया कि शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरूकता, नारी स्वतन्त्रता के प्रभाव के चलते केरल, गोवा, महाराष्ट्र, पं० बगाल जैसे प्रदेशों में जनसंख्या वृद्धि थम गयी है। महोदय इतने विस्तृत और बहुआयामी देश में जिसकी आधे से अधिक जनसंख्या केवल चार राज्यों विहार, उत्तर प्रदेश, म०प्र० व राजस्थान में केन्द्रित है, इसकी ओर इनका ध्यान क्यों नही जाता जहाँ शिक्षा केवल पेट भरने का साधन है, सामाजिक जागरूकता, राजनैतिक प्रदूषण का अखाडा है, और आधुनिकीकरण फूहड़पन का नग्ननाच है। प्रसिद्ध जनसंख्या शास्त्री प्रो० आशीष बोस जिन्होने इन राज्यों को "बीमारू" (**BIMARU**) की संज्ञा दी उनकी रिपोर्ट के अनुसार निकट भविष्य मे इन राज्यों में स्थिति

और अधिक भयावह होने वाली है। इसलिए इन प्रदेशें में जनसंख्या नियन्त्रण लगभग असंभव है। फिर हम यह कैसे माने कि सम्पूर्ण राष्ट्रीय परिदृश्य में इनकी बात सत्य सिद्ध होगी।

अध्यक्ष महोदय, चिन्तन जब विकलांग होता है तो परिस्थितियां बडी विषम हो जाती है। चिन्तन की विकलांगता ने भारत का पीछा आज़ादी के बाद भी नहीं छोडा । जिस बात को भारत की मनीषा बच-बच कर कहती आई है हम युवकों को आज खुल कर कहना होगा । हमें देखना होगा कि भिन्न-भिन्न धर्म जाति, भाषा, पन्थ के अदभुत संगम इस भारतवर्ष में जनसंख्या वृद्धि के मूल में कौन -कौन से कारक है। यदि कारक अज्ञान है तो वेा कहाँ है यदि कारक स्वार्थ है तो वो कहाँ है? यदि कारक इस भूमि को मातृभूमि न मानकर भोगभूमि मानना है तेा वो कहाँ है? और यदि कारक विध्वंसकारी है तो वो कहाँ है। महोदय, अत्यन्त विनम्र किन्तु दृढ शब्दों में कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान का इतिहास गवाह है जिस-जिस ने इसे माता माना उसने उसे किसी बोझ से दबाने का प्रयत्न नहीं किया चाहें वह बोझ जनसंख्या वृद्धि तो क्यों न हो। परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि इसी भूमि पर रहने वाले लोगों में बहुत बड़ी संख्या उनकी है जो यह मानते है कि कारवाँ आए बसे और चले गए। ये लोग जनसंख्या इसलिए बढाना चाहते है जिससे भीड़ के सहारे किसी को ड़रा सकें मत के सहारे सत्ता पलट सकें और विध्वंसकारी तेवरों के सहारे इतिहास और भूगोल दोनों को प्रभावित कर सकें।

सत्तालोलुप राजनेताओं द्वारा संरक्षित यह भीड़ दिनोंदिन बढ रही है जिसे आप रोक नही पाऐंगें। महोदय मात्र जन्मदर और मृत्युदर पर नियन्त्रण कर लेने से यह समस्या हल नही होगी । बड़े सुनियोजित तरीके से लाखों विदेशी घुसपैठिए प्रतिवर्ष हमारी रोटी बेटी में साझा करने के लिए सीमा पार से आते है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार करीब २ करोड़ बाग्लादेशी घुसपैठिये पूर्वोत्तर के दर्जनों जिलों मे नागरिकता प्राप्त कर चुकें है और असम के अनेकों जिलों में ये बहुसंख्यक है। दिन प्रतिदिन इनकी बढती संख्या को क्या आप रोक पाऐंगें।

अध्यक्ष महोदय कैसे समझाएँ हम अपने इन ऐसे मन से कुंठित साथियों को कि वे ससीम होने के बाद भी असीम के विधान को चुनौती देने का दुःसाहस न करें । कैसे प्रबोधित करे इन स्वार्थ परक भौतिकतावादी लोगों को कि वृद्धि और विकास ये सृष्टि की सहज व्यवस्थाऐं है। इनकी अपनी यति और गति है, इनके साथ चलने मे ही मानव का कल्याण है अर्थात जन एक अवाध जीवन क्रम से जुड़ा सतत प्रवाह हैं जिसे रोकना न संभव है और न उचित।

वक्ता
चि०विकास दीक्षित
एकादश 'ख'

बदरी-केदार यात्रा : संस्मरण

देव भूमि पर युग-भारती के संग : अविस्मरणीय क्षण

(हिमालय के उत्तुंग शिखरों पर अलकन्दा की गोद में विद्यालय की वर्तमान एवं पूर्व पीढ़ी के अद्‌भुत संगम के रोमांच को शब्द बद्ध कर रहे हैं चि० आशुतोष व केशव)

यात्रा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है । यात्रा से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं होता । पुस्तकें कुछ-कुछ यात्रा का रस प्रदान कर सकती हैं, परन्तु वह यात्रा का पूर्ण- प्रतिबिम्ब नहीं हो सकती हैं । मानचित्र देख कोई हिमालय के तपस्वी देवदारों के गहन वनों और श्वेत हिम-मुकुटित शिखरों के सौन्दर्य, उनकी गन्ध का अनुभव नहीं कर सकता । उसको स्वयं में समाहित करने के लिए उनका सामीप्य आवश्यक है। यात्रा के उद्‌देश्य का दूसरा पक्ष मातृभूमि की सेवा भी हो सकता है। किसी क्षेत्र को समझने का सबसे बेहतर उपाय उसे देखना, घूमना व उसका निरीक्षण करना है।

यही उद्‌देश्य लेकर चली हमारे विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था युग-भारती । जिसने यह तय किया कि वह विभिन्न माध्यमों से देश-सेवा करेगी । जिनमें से एक माध्यम है - देश-दर्शन । इससे पहले यह संस्था अपने दो देश-दर्शन पूर्ण कर चुकी है -

पहला - गंगोत्री - गोमुख यात्रा , दूसरा - पुरी यात्रा और तीसरा देश-दर्शन रहा - बद्री-केदार यात्रा । जिसमें हम भी सम्मिलित हुए । इस देश-दर्शन की सूचना हमें मार्च (परिषदीय परीक्षाओं के समय) में मिल गयी थी और तिथि २२ मई निर्धारित की गई ।

करीब ५ महीने बाद हाई स्कूल परिषदीय परीक्षायें देकर घर गये थे । परन्तु पुनः १५ दिन घर से बाहर रहने के विचार मात्र से ही मन एक विचित्र प्रकार के अवसाद से भर गया । पर ज्यों-ज्यों तिथि पास आती गयी अवसाद उत्साह में बदल गया । हम दिनांक १६ मई दिन मंगलवार देशदर्शन जाने की समस्त तैयारी के साथ विद्यालय पहुँचे । परन्तु वहाँ पहुँचकर दिनेश जी के पैर की हड्डी क्रैक हो जाने का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ । उनका देश दर्शन में जाना अनिश्चित था परन्तु उत्साहवश उन्होंने प्लास्टर कटवा दिया । २२ मई कब आ गई पता ही नहीं चला । सुबह से ही तैयारियां शुरू हो गयी। सबने अतिशय शीत की कल्पना कर गर्म वस्त्रों की व्यवस्था की थी । हनुमान जी का आशीर्वाद ले व प्रसाद ग्रहण कर हम १६.४५ बजे विद्यालय बस से कानपुर सेन्ट्रल को चल दिये । वहाँ दिनेश जी व गोपाल जी पहले से ही थे । वहां पता चला कि दिनेश जी भी हमारे साथ चलेंगे । सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। गांड़ी (संगम एक्सप्रेस) अपने सही समय २१.२० पर न आकर २२.१५ बजे प्लेटफार्म नं० १ पर आई हम सबने अपना सामान रखा । गाड़ी ने २२.५० पर वहाँ से प्रस्थान किया । धीरे-धीरे गाड़ी तेजी पकड़ने लगी । हम सबने सामान

व्यवस्थित कर भोजन किया । फिर गानों व चुटकुलों से अपना मनोरंजन करने लगे । थोड़ी देर बाद सब बेसुध होकर अपनी -अपनी बर्थों पर सो गये ।

अगले दिन शनिवार दिनांक २३ मई प्रातः ५:०० बजे हमारी नींद तब खुली जब गाड़ी अलीगढ़ स्टेशन पर रूकी थी । सबने निवृत्त होकर जलपान किया और फिर गाड़ी राजघाट, नरौरा, डिबाई होती हुई चन्दौसी पहुँची । वहाँ से रचित को भी बैठना था जो अस्वस्थ होने पर भी हमारे साथ चला । फिर मुरादाबाद, नगीना होते हुए गाड़ी १२ बजे हरिद्वार पहुँची । वहाँ से हम तुरन्त ही टेम्पों की व्यवस्था कर ऋषिकेश के लिए रवाना हुए । गंगा का पुल पार कर हिमालय की प्रारम्भिक श्रेणियों के मध्य से गुजरते हुए हम ऋषिकेश पहुँचे । यहाँ से राम झूला पार कर परमार्थ-निकेतन पहुँचे । जहाँ हमें रूकना था । कमरा हमें १५.०० बजे मिलना था । वहाँ सामान कुछ छात्रों की देख - रेख में छोड़ हमने क्रम से गंगा स्नान किया । यद्यपि गर्मी का प्रकोप था, लेकिन गंगा जी के तीव्र प्रवाह व ठंडे जल में स्नान कर कुछ राहत मिली । फिर तैयार होकर हमने चोटीवाला रेंस्तरा में भोजन किया । लौट कर आने तक हमें कमरा मिल चुका था । अपने सामान को व्यवस्थित कर हम सबने विश्राम किया । सायं करीब १७.०० बजे हम में से कुछ लोग गंगा तट पर आकर बैठ गये । सायं १६.०० बजे दशम् कक्षा के छात्र प्रवीण जी के साथ लक्ष्मण झूला को चल दिये । अन्जानी जगह थी और रास्ता भी पता नहीं था। पूंछते हुए लगभग २००० बजे लक्ष्मण झूला पहुंचे। वहाँ हम प्रवीण जी के मृदु स्वभाव से परिचित हुए । इसके बाद हम सब परमार्थ निकेतन वापस आये, जहाँ भोजन की इच्छा न होने पर हमने मिल्क बादाम पिया। फिर कमरे में आये जहाँ एक अहम विषय (बद्री जाया जाये या केदार) पर चर्चा हुई। निष्कर्ष हम लोंगो के पक्ष में निकला कि हम दोनों जगह जाएंगे। फिर सफर की थकान के कारण हम सब जल्दी ही सो गये ।

रविवार दिनांक २४ मई सुबह ४.३० बजे हम शौच, मंजन कर गंगा तट को स्नान हेतु चल दिये सुबह काफी ठण्ड थी और उस पर से गंगा के ठण्डे पानी में स्नान करने में कंपकपी छूट रही थी । इसके बाद हम प्रातः ५.०० बजे परमार्थ निकेतन की प्रार्थना में सम्मिलित हुए । फिर नाश्ता कर व अपने अपने घरों को फोन कर हम अपना सारा सामान लेकर सड़क पर पहुँचे, जहाँ वीरेन्द्र जी को बस लेकर पहुंचना था । और उधर जय जी ने गीताभवन से रास्ते के भोजन की व्यवस्था की । ६.४५ बजे वीरेन्द्र जी बस (यू०पी० ५०१५८) के साथ आये । बस के ऊपर सारा सामान बांधकर करीब १००० बजे ऋषिकेष से चल दिए । आगे का रास्ता दुर्गम था, एक तरफ ऊँचे -२ पहाड़ थे और दूसरी ओर गहरी खाईयां, जिनमें से होकर बहती गंगा एक सर्प की भांति रेंगती दिखाई पड़ती थी । बगल में पहाड़ों पर लगे वृक्ष अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे । लेकिन कुदरत ने इन पेड़ों को इस प्रकार स्थापित किया कि पेड़ों के शिखर इस प्रकार प्रतीत होते थे जैसे ये स्वयं एक पर्वत का निर्माण कर रहे हों । ज्यों- ज्यों हम आगे जा रहे थे, रास्ता और भी दुर्गम होता जा

था । धीरे - धीरे हम व्यासी होते हुए देव प्रयाग पहुंचे, जहाँ गंगा और अलकनन्दा का संगम ऐसा दृश्य उपस्थित कर रहा था, मानों दो एकाकी अपनी सम्पूर्णता प्राप्त कर रहें हों । उनकी अपार जल शक्ति व तीव्र प्रवाह को देख ही शरीर में एक सनसनी पैदा हो रही थी । यहाँ भोजन कर हम श्री नगर की ओर रवाना हुए । हमारा पथ का साथी बदल चुका था । गंगा की जगह गहरी खाईयों में अलकनन्दा थी । एक हास्यास्पद वातावरण में हम रूद्रप्रयाग पहुंचे। यहां से आगे जाने के दो रास्ते हैं - एक बद्रीनाथ धाम को और दूसरा केदारनाथ धाम को । योजनानुसार हमें पहले केदार नाथ जाना था रास्ते में मन्दाकिनी व अलकनन्दा का अद्‌भुत संगम देखा । जहाँ एक ओर मंदाकिनी उस क्षेत्र की स्वच्छतम् नदी थी, वहीं दूसरी ओर अलकनन्दा ऐसी प्रतीत होती थी, मानो उसने भी नीलकण्ठ के समान उस क्षेत्र के सारे अवसादों को स्वयं में समाहित करने का संकल्प ले रखा हो । अब मन्दाकिनी केदारनाथ तक हमारी सहगामिनी रही । इसके बाद हम अगस्त मुनि का आश्रम, तिलवाड़ा होते हुए लगभग १७.०० बजे गुप्तकाशी पहुंचे । यहाँ से हमें हिमालय के हिमाच्छादित शिखर दिखाई दे रहे थे ।

हिमालय की बर्फ से लदी चोटियां दृष्टिपथ होते ही मन उत्साह से भर गया और प्रसाद, पन्त, दिनकर के काव्यबिम्ब हमारी चेतना में अनायास ही उभरने लगे । यहाँ चाय पीने के बाद हम आगे बढ़े रास्ते में हमने खाई में गिरी दो बसें देखी, मन में थोड़ा सा भय व्याप्त हुआ । लेकिन नए स्थानों को देखने के उत्साह ने व केदार दर्शन की उत्सुकता से वह भय काफूर हो गया । १६.०० बजे हम सोन प्रयाग में थे । यहाँ सोन नदी तथा मन्दाकिनी नदी का संगम है । यहीं पर हमने लॉज में तीन कमरे लिये यहाँ पर पर्याप्त ठण्ड थी, अतः हमने गर्म कपड़े पहन लिये । इसके बाद हम लोग कमरे के अनुसार क्रम सें भोजन करने गये । भोजन में मिर्च की अधिकता यहां की विशेषता थी । भोजनोपरान्त हम सब घूमते हुये अपने कमरे पहुंचे फिर बैठक मे शामिल होने प्राचार्य जी के कक्ष में गये । वहां अगले दिन की सूचनाएं प्राप्त हुई । यद्यपि यात्रा ने हमें बहुत थका दिया था, लेकिन फिर भी हम काफी देर तक जागते रहे, और कब आँख लग गई पता ही नहीं चला ।

अगले दिन 'सोमवार', २५ 'मई' को प्रातः ०४.०० बजे उठे और दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर चाय पी, तैयार हुए । ०७.३० बजे तक हम सब तैयार हो बस में बैठ चुके थे । और बस गौरीकुण्ड को चल दी । गौरीकुण्ड से लगभग १ कि०मी० पहले जाम लगा था । अतः बस वही छोड़कर हमने पैदल यात्रा शुरू की । चूँकि गौरीकुण्ड से केदारनाथ १४ कि० मी० दूर था । अतः अब हमारी पद यात्रा बढ़कर १५ कि०मी० हो गयी थी । गौरी कुण्ड में हमने नाश्ता किया, नाश्ते में वहाँ का प्रचलित आलू का पराठा और अचार लिया । नाश्ते के बाद हम सब एकत्र हुए और फिर प्रारम्भ हुई हमारी केदार की पद - यात्रा। पैदल यात्रा का प्रारम्भिक चरण काफी असुविधा पूर्ण रहा । हम सब गौरीकुण्ड की भीड़, खच्चरों, टट्टुओ, पालकीवालों व पिटठुओं की फौज से काफी

परेशान हुए । खच्चरों की लीद की बदबू प्राणघातक थी । यात्रा के प्रारम्भ में हमारे अगुआ श्री प्रदीप जी थे व सबसे अन्त में प्राचार्य जी थे । यात्रा की समाप्ति पर सबसे पहले प्राचार्य जी केदार नाथ पहुंचे और सबसे अन्त में श्री प्रदीप जी । हम जैसे-तैसे आगे बढ़ते गये, हरियाली बढ़ती गई । दूर-दूर तक पर्वतों पर लगे वृक्ष ऐसे प्रतीत होते थे, मानो श्यामल हरीतिमा का समुद्र हिलोंरे ले रहा हो । झरनों का दौर भी शुरू हो गया था, जो जगह - जगह से निकलकर पहाड़ के सीने पर अपना अधिकार जमाते हुए मन्दाकिनी के स्वच्छ व तीव्रगामी जल में मिलकर उसकी विपुलता बढ़ा रहे थे । रास्ते में हम नीबू पानी पीते, फोटों खिंचवाते हुए रामबाणा पहुंचे यहां से केदार की दूरी ७ किमी० थीं । अतः हम अपनी आधी यात्रा पूर्ण कर चुके थे । वहाँ भोजन कर हमने विश्राम किया । यहीं से बर्फ का विस्तृत क्षेत्र शुरू होता था । जहाँ हमने खाना खाया, उसके सामने ही बर्फ ही बर्फ गिरी थी । धीरे - धीरे, मौज - मस्ती करते, चटुकुल सुनते, गीत गाते रामबाणा से चले और कब अपनी मजिंल के पास आ गए पता ही नहीं चला । हमने यह अनुभव किया कि जैसे-जैसे हम ऊपर आ रहे थे दुकानों पर उपलब्ध वस्तुओं का मूल्य बढ़ता जा रहा था । पूँछने पर पता चला कि यह सामान वे अप्रैल में नीचे से लाते है, और पुनः सितम्बर मे उन्हें नीचे ले जाना पड़ता है । क्योंकि बर्फ व अतिशय शीत का प्रकोप उन्हें आतंकित करता था । उनसे बात कर यह विषय तो स्पष्ट हो गया कि "मनुष्य भले ही प्रकृति को कितनी ही बार क्यों न जीत ले, पर अन्तिम विजय प्रकृति की ही होती है ।" लगभग १ कि०मी० का रास्ता अभी शेष था, परन्तु शरीर निढाल हो चुका था । फिर भी शुभ्र हिम में समाधिस्थ हिमालय का सौन्दर्य मन को आकर्षित करता था । अब हम केदार नगर पहुंचे चुके थे । यहाँ बर्फ से खेलने के पश्चात हम कानपुर के जे० के० मन्दिर वालों की धर्मशाला पहुंचे । यहां हमने दो कमरे लिए थे । हाथ-मुंह धोकर हम सब तैयार हुए और केदार देव की आरती में सम्मिलित हुए । आरती १६३० बजे हुई । मन्दिर का दाहिना द्वार हमारे निवास के मुख्य द्वार के सामने था । तत्पश्चात हम भोजनोपरान्त अपने कमरे में एकत्र हुए। यहाँ भोजन में पीने हेतु गर्म पानी मिलता था, तथा प्याज तथा लहसुन का प्रयोग पूर्णतयः निषिद्ध था । रात्रि में प्राचार्य जी ने हमें अवगत कराया कि कल सोमवती अमावस्या है" अतः मन्दिर में अत्यधिक भीड़ होगी । समस्त सूचनाएं प्राप्त कर हम जल्दी ही अपने बिस्तरों पर धराशायी हो गये ।

दिनांक २७ मई, दिन मंगलवार को हमारी आंखे ०५.०० बजे खुली । दैनिक क्रियाओं से निवृत्त हो हम नहाने का स्थान तलाशने लगे । हमने मन्दाकिनी व स्वर्गद्वारी के संगम में स्नान का निश्चय किया। श्री दिनेश जी, श्री वीरेन्द्र जी व श्री जय श्री के साथ हम सब संगम स्थल पहुंचे । अत्यधिक ठण्ड थी तथा पानी के ठण्डे होने का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है, कि मात्र २५-३० मी० की दूरी से बर्फ पिघल कर नदी में मिल जाती थी । नदीं में नहाने का साहस किसी में नहीं था । सबसे पहले स्नान के लिए कपड़े उतारने वाले श्री दिनेश जी थे । उनकी देखा

देखी हम सब भी नहाने के लिए तैयार हो गये और क्रम से डुबकी लगाने लगे । स्नान के पश्चात हम सभी ने चायपान किया और धूप स्नान कर कुछ राहत का अनुभव किया । यहाँ से हम मन्दिर गए । मन्दिर में देखा कि दर्शन हेतु कतारें बहुत लम्बी हो गयी थी । निर्णय लिया गया कि श्री वीरेन्द्र जी, दीपक मिश्र तथा आशुतोष शुक्ल पंक्तियों में लगेंगे तथा शेष जलपान करने जायेंगे । जलपान के बाद हम भी शान्तिपूर्वक अनुशासन तोड़कर उनके ही साथ पंक्ति में जा लगें । लगभग ११.०० बजे हम मन्दिर के अन्दर थे । यहाँ भक्तों का अपार समुदाय था । भीड़ में धक्का-मुक्की करते हुए हम शिवलिंग तक पहुँचे और क्षण भर में भगवान को प्रणाम कर आगे बढ़ गए । क्योंकि इससे अधिक उस जन प्रवाह में रूकने की सम्भावना ही न थी । कला की दृष्टि से शिवलिंग सुन्दर न था, एक साधारण चट्टान का टुकड़ा ही प्रतीत होता था, लेकिन विग्रह तो भक्ति भावना का प्रतीक होता है, उसके सुन्दर होने या न होने की प्रश्न ही नहीं उठता । लेकिन फिर भी यह आश्चर्य है, कि भारत में जहाँ मूर्तिकला का चर्मोत्कर्ष है, वहीं ये देव-विग्रह इतना साधारण क्यों ? मन्दिर के पीछे स्थित आद्य शंकराचार्य की समाधि के दर्शन कर हम वापस चल पड़े । रास्ते में अन्ताक्षरी खेलते हुए कब रामबाणा पहुंच गए, इसका अनुभव ही नहीं हुआ । यहाँ से भोजनोपरान्त हम गौरीकुण्ड चल दिये । लगभग १८.०० बजे हमे सब गौरीकुण्ड पहुँचे । यहाँ से हम बस द्वारा सब सोनप्रयाग पहुँचे, और कुछ कारणवश अपना पूर्व लॉज परिवर्तित किया । वहाँ भोजननोपरान्त हम लगभग २३०० बजे सो गए ।

दिनांक २७ मई (बुधवार) को हम ०४.०० बजे उठे और तैयार हो कर लगभग ०६.१५ पर रूद्रप्रयाग को रवाना हो गए। गुप्तकाशी, अगस्तमुनि का आश्रम पार करते हुए तिलवाड़ा पहुँचे। यहाँ भोजन किया और फिर प्रयाग पहुँचे। रूद्रप्रयाग के बाद हमें नया रास्ता तय करना था। यहाँ से कर्णप्रयाग पहुँचे जो उस क्षेत्र का सबसे बड़ा व गर्म स्थान है। यहाँ से हनुमान चट्टी पहुँचे जहाँ महाभारत में हनुमान व भीम के मिलन का प्रसंग है। हमारी बस नदी, झरने, पहाड़ पार करती समुद्र तल से लगातार ऊपर उठती जा रही थी। यहाँ का मार्ग केदार की अपेक्षा अधिक दुर्गम था। रास्ते में वर्षा प्रारम्भ हो गयी जिसके कारण हमने ऊपर बंधे समान पर त्रिपाल डाला। इसके बाद हम नन्दप्रयाग में रूके वहाँ फोटो का दौर शुरू हुआ। थोड़ी देर बाद हम पुनः आगे बढ़ गये और चमोली पहुँचे। इसके बाद पीपलकोठी होते हुए जोशीमठ पहुँचे। पानी की हल्की बूँदा बूँदी जारी थी अतः तापमान गिर गया था। यहाँ हम सुभाष लॉज में रूके। जोशीमठ से बद्रीनाथ का रास्ता वन-वे है। लॉज काफी अच्छे स्थान पर था व आरामदायक था। भोजन करने के बाद जब हम अपने कमरे पर आये तो वीरेन्द्र जी के कमरे ने हमें अन्ताक्षरी के लिए चुनौती दी, जिसे हमने सहर्ष स्वीकार किया। अन्ताक्षरी बिना किसी निर्णय के ००.३० बजे खत्म हुई फिर हम से गये।

गुरूवार, २८ मई हम प्रातः ०४.३० पर उठे। चूँकि स्नान बद्रीनाथ में करना था, अतः

शौच, मजंन के उपरान्त नाश्ता कर तैयार हुए। हमने ०६.३० पर जोशीमठ की सीमा छोड़ दी। जोशोमठ से बद्रीनाथ की दूरी ४४ किमी० है। मुश्किल से १२ किमी० आगे निकले ही थे कि रास्ता जाम था। पता चला की मार्ग में पत्थर पड़े हैं। वह सम्पूर्ण क्षेत्र ''राँक फाँलिंग क्षेत्र'' घोषित था। बस के बाहर खड़े हम प्रकृति का आनन्द ले ही रहे थे कि धमाके की आवाज ने हमारा ध्यान भंग किया। पता चला कि चट्टानों को डायनामाइट लगाकर तोड़ा गया है। इसके बाद हम करीब ०६.१० बजे बद्रीनाथ पहुँचे। ये केदार की अपेक्षा अत्यधिक विकसित क्षेत्र है। यहाँ से हम एक जोड़ी कपड़े लेकर अलकनन्दा के पुल को पार कर तप्त कुण्ड पहुँचे। तप्त कुण्ड एक प्राकृतिक गर्म पानी का स्रोत है। सल्फर की अत्यधिक मात्रा के कारण ये गर्म है। स्नान कर हमने भगवान बद्री के दर्शन किये। इनका मुकुट सोने का व मध्य भाग में एक हीरा जड़ा है। इसके बाद एक रेस्तरां में भोजन किया। तत्पश्चात् बाजार से अखरोट खरीदे। दोपहर १४४५ तक हम वहाँ से वापसी को चल दिये हमारी बस तेजी से जंगल, झरने, पहाड़ पार कर रही थी। जोशीमठ पार कर हम थोड़ा ही आगे ही बढ़े थे कि बारिश शुरू हो गई। हम थोड़े सहमे से थे क्योंकि वर्षा की दर बढ़ती ही जा रही थी जो कि खतरनाक साबित हो सकती थी। थोड़ी देर बाद फिर एक जाम मिला। वहाँ पर पत्थर नहीं, पूरा पहाड़ गिरा पड़ा था। वहीं के लोग पत्थर साफ कर रहे थे। पानी थमने का नाम नहीं ले रहा था। ऐसा लग रहा था कि अन्जाने में कोई गलती हो गई और हमें बद्रीविशाल का कोपभाजन बनना पड़ रहा है। हमारे पास दो मार्ग थे- या तो पूरी रात्रि उस भयावह क्षेत्र में बारिश में भूखे-प्यासे गुजार दें, जहाँ यह भी निश्चित न था, हमारी बस जिस पहाड़ के बगल में खड़ी है, वह भी सुरक्षित है या नहीं और दूसरा मार्ग था बस को पत्थरों के ऊपर से निकल लिया जाये। जो कि काफी दुष्कर प्रतीत हो रहा था। हमारे देखते ही देखते एक एम्बैसडर और मिलिट्री जीप उसे पार कर गई। परन्तु कोई बड़ी गाड़ी नहीं निकल पाई। हमारा ड्राइवर चौहान पत्थरों को पार करने के पक्ष में था, जबकि परिचालक वहीं रूकने के। हम सब दुविधा में फँसे थे। परन्तु दृढसकंल्प से दुविधा की बेडियाँ कट जाती हैं। उसकी दुविधा भी दूर हुई हम बस से उतर गए और बड़ी मुश्किल से बस उसे पार कर सकी। हम सब की जान में जान आयी। हम ठण्ड से कंप रहे थे। इस मुसीबत से उबरते-उबरते १६२० बज चुके थे। रात्रि करीब २११० बजे हम पीपल कोठी ही पहुँचे। यहाँ हम एक लॉज में रूके और भोजन करके सो गये।

दिनाँक २८ मई, (गुरूवार) को हमारी पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा का अन्तिम दिन था। हम समतल भू-भाग देखने को तरस रहे थे। तैयार हो, नाश्ता कर ०७.२० पर हम आगे चल दिए। भीमताल, चमोली, नंदप्रयाग, लागूंस, कर्णप्रयाग, रूद्रप्रयाग, श्रीनगर, देवप्रयाग, व्यासी होते हुए १५.३० बजे ऋषिकेश पहुँचे। बस को वही छोड़ टेम्पो से हरिद्वार पहुँचे । वहाँ आस्था होटल में रूकने की व्यवस्था हुई। थोड़ा विश्राम कर गंगा स्नान को चले। गंगा स्नान कर 'हर की पौड़ी' पर गंगा जी

की आरती में सम्मिलित हुए। इसके बाद भोजन कर हम प्रधानाचार्य जी के कक्षा में एकत्रित हुए जिसमें सबने बद्री केदार देशदर्शन के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अन्त में नीरज जी ने अश्रुपूरित नेत्रों से अपना देशदर्शन दिनेश जी को समर्पित किया।

दिनांक २६ मई, दिन शुक्रवार हमारी यात्रा का अन्तिम दिन। सुबह तैयार हो हम सभी मंशा देवी घूमने गये। उसके बाद हमने भोजन किया और फिर सारा सामान लेकर १४.०० बजे रेलवे स्टेशन पहुँचे। गाडी अपने ठीक समय १४.३६ पर आयी । गाडी १५०० बजे चल दी। १६.३० पर गाडी चन्दौसी पहुँची यहाँ रचित उतरा। उसके ननिहाल वालों ने यहाँ हमारे जलपान की व्यवस्था की थी इसके बाद गाड़ी मे काफी देर तक अन्ताक्षरी खेलते रहे। फिर भोजन कर हम उपनी वर्थो पर सो गए।

दिनांक ३० मई शनिवार जब हम सुबह ०५.०० बजे उठे तो देखा गाडी कानपुर सेन्ट्रल पहुँचने वाली थी । गाड़ी ०५.३० बजे सेन्ट्रल पहुँची । स्टेशन के बाहर विद्यालय बस हमारा इन्तज़ार कर रही थी । हम सामान रख सुकून के साथ विद्यालय पहुँचे ।

आज लगभग एक वर्ष से ज्यादा का समय व्यतीत हो गया, परन्तु वो स्मृतियां हमें आज भी रोमांचत करती है । लगता है अभी कल ही की तो बात है । गंगा मंदाकिनी आज मन को झंकृत करती है । हिमालय समाधिस्थ शिखर आज भी सामने खड़े दिखते है । लगता है वे ऊँची बाहे फैलाए हमें बुला रहीं हैं । उसके शिखर हमसे पूंछ रहे हों । कि मेरा तुम्हारा सम्बन्ध क्या मात्र एक यात्रा तक ही सीमित है । क्या मेरा स्थान मात्र तुम्हारी धूमिल यादों तक ही शेष है ? हृदय से स्वर उठता है नहीं, मैं तुम्हें नहीं भूला । अन्तःकरण कहता है, हिमालय मेरा इन्तजार करना करना मैं आऊँगा । फिर-फिर आऊँगा।

आशुतोष द्विवेदी
केशव कान्त गुप्त
द्वादश 'क'

शारीरिक शिक्षा की उपादेयता

(माधव स्मृति से क्रीड़ा गतिविधियाँ)

बालक के सर्वांगीण विकास में शारीरिक शिक्षा का प्रमुख योगदान है । शारीरिक शिक्षा वह स्वर्ण पात्र है, जिसमें अमृत रूपी शिक्षा जल भरा जाता है, आज विद्यालयों में खेलों हेतु स्थानाभाव है, खेलने पर बच्चे डांटे भी जाते है । बालकों पर किताबों का बोझ बढ़ता जा रहा है । पर्यावरण प्रदूषण तथा संतुलित भोजन का अभाव बालक के शारीरिक विकास में प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं ।

शहरी बालक प्रातः काल जागता है तो उसे विद्यालय में दिये गये कार्य की चिन्ता रहती है। जल्दी-जल्दी विद्यालय जाने की तैयारी करता है । बस या रिक्शे से विद्यालय जाता है । विद्यालय में दिन भर शिक्षण के पश्चात् थका हारा बालक जब घर आता है तो मनोरंजन के नाम पर टेलीविजन के सम्मुख बैठ जाता है या गृह कार्य में जुट जाता है । खेलन का न तो उसके पास समय है और न ही उसे खेलने दिया जाता है ।

विद्यायल भी खेलों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं । एक दिन ऐसा होगा जब बालक एक 'बौद्धिक रोवोट' की भांति कार्य करेगा । आँखों पर नजर का चश्मा, दुबला पतला शरीर, किताबों के बोझ से झुकी हुई कमर । क्या ये ही भरत वंशी हैं । जो शेरों के दांत गिना करते थे ? उत्तर

आज आवश्यकता है कि विद्यालय परिसर स्वच्छ हो, खेलने की उचित व्यवस्था हो, तभी बालकों का सर्वांगीण विकास होगा । ऐसे अनेक उदाहरण है कि जो बालक बहुत मोटे थे दौड़ने में उन्हें कम अंक मिले वे बालक निरन्तर अभ्यास करते रहे, उनका मोटापा भी कम हुआ और उन्हें अंक भी प्राप्त हुए । पण्डित दीन दयाल उपाध्याय विद्यालय में कक्षा षष्ठ में एक मोटे बालक अंकित सखूजा ने प्रवेश लिया वह प्रथम मासिक परीक्षा में शारीरिक शिक्षा में फेल हो गया उस बालक ने लगातार अभ्यास किया उसकी शारीरिक दक्षता बढ़ गयी मोटापा कम हुआ। उसने हाई स्कूल १९९९ की बोर्ड परीक्षा में मेरिट में भी स्थान पाया ।

पाश्चात्य सभ्यता के डकैत जो मीडिया पर सवार होकर हमारे घरों में प्रवेश कर गये हैं । मीठ जहर हम सबके जीवन में जहर घोल रहे हैं । इस से सबसे अधिक प्रभावित नन्हें मुन्ने बालक हुए हैं । घर का ईडियट बॉक्स (टेलीविजन) बालक को क्या सिखाता है, और बालक क्या सीखता है ? ये विचारणीय विषय हैं ।

पं० दीन दयाल विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखता है । खेलों में विशेष रूप से भारतीय खेलों में विगत १५ वर्ष से खो-खो में तथा १२ वर्ष से कबड्डी में कानपुर नगर का सर्व श्रेष्ठ विद्यालय रहा है ।

कबड्डी तथा खो-खो की प्रदेशीय तथा राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। पिछले वर्ष १९९८-९९ में बाल वर्ग की कबड्डी ने कानपुर नगर तथा कानपुर मण्डल की प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा बलिया में सम्पन्न हुई सब जूनियर बाल कबड्डी प्रतियोगिता में विद्यालय की पूरी टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया ।

पं० दीन दयाल स्मारक कबड्डी प्रतियोगिता में कानपुर नगर की ७ टीमों ने भाग लिया जिसमें चल बैजयन्ती लगातार चौथी बार विद्यालय की टीम ने प्राप्त की ।

जनपदीय खो - खो में विद्यालय की टीम प्रथम स्थान पर रही । कबड्डी तथा खो-खो की मण्डलीय प्रतियोगितायें इटावा शहर में आयोजित थी । कुछ कारणों से ये प्रतियोगितायें नहीं हो सकी । परिणामस्वरूप विद्यालय की दोनों टीमों को प्रदेशीय खेलों हेतु अधिकृत किया गया । सरकारी तंत्र की लापरवाही से टीमें प्रदेशीय खेलों में भाग लेने से वंचित रह गयी ।

विद्यालय की वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में विद्यालय के पांचों कुजों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें अंकों के आधार पर कुजों तथा चारों दलों के सर्वश्रेष्ट खिलाड़ियों की स्थिति इस प्रकार रहीं।

प्रथम स्थान - धैर्य कुंज	लवकुश दल (चैम्पियन) -	चि० शुभम चतुर्वेदी	७ क
द्वितीय स्थान - सत्य कुंज	ध्रुव दल	"	चि० हेमन्त कश्यप	८ क
तृतीय स्थान - शील कुंज	एकलव्य दल	"	चि० मनीष मिश्र	१० क
चतुर्थ स्थान - शौर्य कुंज	अभिमन्यु दल	"	चि० विवेक यादव	११ क

अन्य खेलों में कबड्डी, खो-खो, फूटबाल, बैडमिन्टन, टेबिल टेनिस, क्रिकेट तथा वालीबाल की प्रतियोगितायें आयोजित हुई जिनमें परिणाम इस प्रकार है -

वालीबाल	-	प्रथम स्थान	एकादश
		द्वितीय स्थान	द्वादश
कबड्डी	लवकुश दल	प्रथम स्थान -	शौय कुंज
		द्वितीय स्थान -	सत्य कुंज
		तृतीय स्थान -	शील कुंज

कबड्डी (ध्रुबदल)

प्रथम - शौर्य कुंज
द्वितीय - सत्य कुंज
तृतीय - धैर्य कुंज

फुटवाल लवकुश दल

प्रथम - धैर्य कुंज
द्वितीय - सत्य कुंज
तृतीय - शक्ति कुंज

फुटवाल ध्रुव दल

प्रथम - शौर्य कुंज
द्वितीय - सत्य कुंज
तृतीय - धैर्य कुंज

क्रिकेट लवकुश दल

प्रथम - शौर्य कुंज
द्वितीय - सत्य कुंज
तृतीय - धैर्य कुंज

क्रिकेट ध्रुव दल

प्रथम - सत्य कुंज
द्वितीय - धैर्य कुंज
तृतीय - शौर्य कुंज

टेबिल टेनिश (१९९८-९९)

षष्ठ क - प्रथम - चि० गौरव गुप्त
द्वितीय - चि० जयन्त झा
तृतीय - चि० विनीत शाक्य

षष्ठ ख - प्रथम - चि० गौरव कुमार
द्वितीय - चि० मृदुल मिश्र
तृतीय - चि० राजीव रंजन

सप्तम क - प्रथम - चि० कृतिवास
द्वितीय - चि० अर्पित शिवहरे
तृतीय - चि० मणिकान्त किशोर

सप्तम ख - प्रथम - चि० अखिल गुप्ता
द्वितीय - चि० निखिल सचान
तृतीय - चि० कपिल निरंजन

प्रथम - चि० राहुल तिवारी
द्वितीय - चि० सुमित टण्डन
तृतीय -- चि० पुलकित अग्रवाल

शतरंज प्रतियोगिता (१९९८-९९)

षष्ठ

प्रथम - चि० अभिनन्दन तिवारी ६ ख
द्वितीय - चि० गौरव सचान ६ क
तृतीय - चि० चैतन्य दत्त व श्वेतांक

सप्तम

प्रथम स्थान - चि० हिरि प्रताप ८ क
द्वितीय स्थान - अमित द्विवेदी ८ ख
तृतीय स्थान -विशाल सिंह, गौरव कुमार

कैरम फाइनल (१९९८-९९)

षष्ठ क - प्रथम - चि० शरद
द्वितीय - चि० पंकज यादव
तृतीय - चि० स्वप्निल जोशी

षष्ट ख -प्रथम स्थान - चि० अभिषेक तिवारी
द्वितीय स्थान - चि० रवि शर्मा
तृतीय स्थान - मुदित निगम

सप्तम् क -प्रथम - चि० अंकित सचान
द्वितीय - चि० वरूण गुप्ता
तृतीय - चि० राहुल पाठक

सप्तम ख - प्रथम स्थान - चि० योगेन्द्र कुमार
द्वितीय स्थान - गिरिजेश पटेल
तृतीय स्थान - दीपक सिंह सेंगर

अष्टम क -प्रथम - चि० अखिलेश गोयल
द्वितीय - चि० प्रज्ञेश गुप्त
तृतीय - चि०श्रीकान्त वशिष्ठ

अष्टम ख- प्रथम स्थान - चि० शशांक ओमर
द्वितीय स्थान - शीमित महेश्वरी
तृतीय स्थान - विनय शर्मा

बैडमिन्टन (१९९८-९९)

षष्ठ क - प्रथम - चि० नितिन यादव
द्वितीय - चि० अभिनव सिंह
तृतीय - चि० सजल गोयल

षष्ट ख प्रथम स्थान - चि० सिद्धार्थ सौम्य
द्वितीय स्थान - चि० पुष्प राज

सप्तम क -प्रथम - चि० अरविन्द प्रताप
द्वितीय - चि० सुनील यादव
तृतीय - चि० वैभव मिश्रा

सप्तम ख प्रथम स्थान - चि० राहुल वर्मा
द्वितीय स्थान - आशीष शुल्क
तृतीय स्थान - अंकित त्रिवेदी

वार्षिक खेल-कूद (एथलेटिक्स)

वार्षिक खेलकूद में कुल ६८२ छात्रों में से लगभग ५४० छात्रों ने भाग लिया । विभिन्न वर्गों मे १६० खिलाड़ियों को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र दिये गये ।

✍ सुभाष चन्द्र शर्मा
"क्रीड़ा आचार्य"

कर्मयोगी से वार्ता

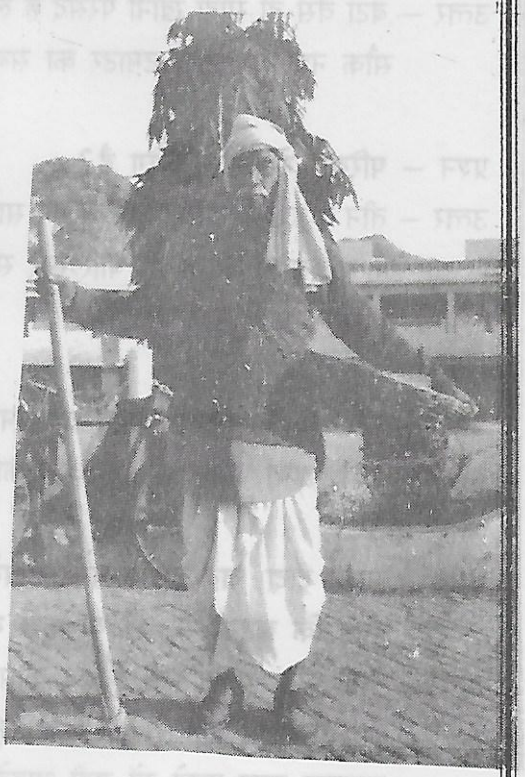

जेठ के दारूण घाम में भी उनके कर्म की कुदाली हमको सतत क्रियमाण दिखी। सूखे–साखे झाड़ झंखाड़ों की अनायास जड़ता को समाप्त कर माटी में मातृत्व रोपा है उन्होने। साँप के पेट जैसी सफेद हथेली और पेड़ की टेढ़ी मेढ़ी गाँठदार टहनियों जैसी उंगलियों वाली मुट्ठी में थमी हुई खुरपी, अनवरत, अविरत सौन्दर्य जनती रहती है। पेड–पोधो के लिये हदय में ममता का सागर भरे माली दादा ने विद्यालय की बागवानी सँवारने में पूरी चेतना के साथ अपने श्रम और सृजन को निराले आयाम दिये। उन्होने परिसर की वाटिका को किसी कल्पित नंदन वन के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हम बरबस उनसे नीराजन के लिये भेंटवार्ता करने गए जिनकी कड़ी मेहनत पर कलियों के सपने पलते हैं जिनके पसीने से आज गुलाबों में लाली हैं। ऐसे कर्मयोगी कहीं भी किसी भी क्षेत्र में हो वे हमें प्रेरणा देते है।

प्रश्न– **माली दादा, अपने जन्म जीवन और परिवार के बारे में कुछ बताओ?**

उत्तर– गोंडा जिला, मौजापकड़ी तहसील के गैनपुरवा गाँव में हम पैदा भए। हमारे बाप मिलिटरी मा सिपाही रहे। तब अंगरेजन की हुकूमत रही। हम तीन भाई रहे, दुइ भाई तो पहिले ही मरि गए रहे, हमही बचे। मझिले भइया शादी वादी नही किये। बड़े भइया पहलवान थे। हमारी भी देही अच्छी रही, अट्ठारह साल की उमर में मिलिटरी मां भारती भये रहे। एक अंगरेज साहब करवाए थे। लेकिन वहॉ कही घूमने को न मिलता रहा इसीलिये अस्तीफा दै दिया।

प्रश्न – **माली के रूप में कबसे काम शुरू किया? सबसे पहले किसने सिखाया?**

उत्तर – काम तो भइया, जब हम सोला साल के रहे तब्बै शुरू कर दिया रहा। सन् १९४६, ४७ और ४८ में अंग्रेज अफसर गुडबिल साहब के हियां सबसे पहले काम किय। गुडबिल साहब हमको मालीगीरी का बहुत गुर सिखाए। उनके यहॉ हमने ३६ रंग के गुलाब तैयार किया था जो इंग्लैण्ड भेजा गया रहा नुमाइस में। इनाम मिला था। इसके बाद दिल्ली के एक पंजाबी के घर बागवानी किया फिर फौज के कर्नल साहब के हियां काम कियां तीन साल एक गुजराती साहब जीवन लाल के बंगले पर काम किया। सन् १९५४ से १९८९ तक कानपुर के सेन्ट जेवियर स्कूल मा काम किया। उसके बाद भइया आप लोगन के साथ आ गैन।

प्रश्न – **खाने में क्या अच्छा लगता है?**

उत्तर – बेटा वैसे तो सादा खाना परसंद है लेकिन हमको दही–बड़ा सबसे ज्यादा अच्छा लगताहै। मिठाई का जादा सौक नही है। आलू टमाटर का सबजी भी अच्छा लगता है।

प्रश्न – **परिवार में कितने लोग है?**

उत्तर – तीन लड़के है हमारे। बिटिया की सादी कर दिया रहा। लड़के कोई पढ़े–बढ़े नही है। एक तो खेड़िया स्कूल में मालीगीरी करता है, बालिस्टर साहब लगवाए थे। एक लड़का रंगाई –पुताई का काम करता है और तीसरा एक फैक्टरी मे नौकर है।

प्रश्न – **टी०वी० या फिल्में देखने का मन होता है?**

उत्तर – नही भइया, हमका ई आजकल का नाचकूद बिल्कुल परसंद नही है । धार्मिक पिक्चर होय तो देख लेंगे।

प्रश्न – **माली दादा, जब हम आपको देखते है आप लगातार काम करते रहते है। क्या कभी आपका मन नही होता कि छुट्टी ले, ले या कुछ बहाना बना ले?**

उत्तर – नहीं बेटा, ये पाप है, ई सब काम हमारे पास नही है। कब्बौ तबियत खराब हुई जाय जादा तब दोसरी बात ऐसे हम काम नही छोड़ते। फूल पौधन से हमको बहुत पियार है अनहिन की सेवा करते रहे। हम लगातार काम करते रहें यही चाहते है।

साक्षात्कार

✍ दुर्गेश बाजपेयी

राष्ट्र मंदिर का पुजारी मुक्ति का कामी नही हूँ
लक्ष्य अच्युत, अभय संधान, यश का अनुगामी नही हूँ।

(हमारा परिवार)

प्रबन्ध–कारिणी समिति

१. श्री इन्द्रजीत जैन	अध्यक्ष
२. डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	उपाध्यक्ष
३. श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	सचिव
४. श्री आई० पी० रस्तोगी	सह सचिव
५. मा० प्रो० राजेन्द्र सिहं "रज्जू भैया"	सदस्य
६. मा० जय गोपाल जी	सदस्य
७. डा० जगमोहन गर्ग	सदस्य
८. श्री गौतम तालवाड़	सदस्य
९. श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	सदस्य
१०. श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	सदस्य
११. श्री यतीन्द्र जीत सिंह	सदस्य
१२. श्री चन्द्रपाल सिंह (विशेष आमंत्रित)	सदस्य

प्रधानाचार्य

श्री ओमशंकर त्रिपाठी

आचार्य–मंडल

हिन्दी विभाग

१. श्री रामतीर्थ मिश्र	(प्रवक्ता)
२. श्री महेन्द्र प्रताप दुबे	(आचार्य)
३. श्री जगपाल सिंह	(आचार्य)

गणित विभाग

१. श्री कैलाश जोशी	(प्रवक्ता)
२. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	(आचार्य)
३. श्री प्रदीप बाजेपयी	(आचार्य)
४. श्री दीपक राजे	(आचार्य)

अग्रेजी विभाग

१. श्री बिहारी लाल मिश्र	(प्रवक्ता)
२. श्रीमती शारदा राव	(प्रवक्ता)
३. श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय	(आचार्य)
४. श्री गया प्रसाद वर्मा	(आचार्य)

भौतिकी विभाग

१. श्री हेमन्त शुक्ल	(प्रवक्ता)
२. श्री श्रीप्रकाश ओझा	(आचार्य)

रसायन विज्ञान विभाग

१. श्री राजेश शुक्ल (प्रवक्ता)
२. श्री दिनेश सिंह भदौरिया (आचार्य)
३. श्री अरूण कुमार शुक्ल (आचार्य)
४. श्री सुधीर अवस्थी (आचार्य)

जीव विज्ञान विभाग

१. श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी (प्रवक्ता)
२. डा० उमेश चन्द्र तिवारी (आचार्य)

समाजिक विषय विभाग

१. श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (आचार्य)
२. श्री सतीश चन्द्र गुप्त (आचार्य)

संस्कृत विभाग

१. श्री गणेश शंकर वाजपेयी (आचार्य)
२. श्री विशम्भर नाथ द्विवेदी(अंश कालिक आचार्य)

कम्प्यूटर विभाग

१. कु० शैलजा त्रिवेदी (अंश कालिक आचार्या)
२. कु० स्मृति वाजपेयी (अंश कालिक आचार्या)

कला विभाग

१. श्री आनन्द प्रसाद वर्मा (आचार्य)

पुस्तकालय प्रभारी

श्री मयंक मणि

छात्रावास अधीक्षक

श्री लक्ष्मी शंकर द्विवेदी

कार्यालय

१. श्री मदन मोहन मालवीय
२. श्री ओंकार नाथ गुप्त
३. श्री अखिलेश प्रजापति

कर्मचारी

१. श्री श्यामलाल
२. श्री रामभजन
३. श्री रामलाल
४. श्री सुरेश नारायण
५. श्री रमेश चन्द्र

राष्ट्र के बलिदानी वीरों को समर्पित हमारी भाव सम्पदा

(प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष मा० इन्द्रजीत जैन
एयर कमोडोर श्री एस०पी०सिंह को
ड्राफ्ट सौपते हुए)

संरक्षक

श्री ओमशङ्कर

टंकण – प्रशोधन

श्रीमती शारदा राव, चि० सपन कुमार, चि० आशुतोष शुक्ल

संकलन, संयोजन एवं सम्पादन

दिनेश सिंह भदौरिया

R.K.PRINTERS Ph.: 0512-561174